प्रस्तावना।



प्रिय महानुभावों !

यह वही ग्रंथ है कि, जिसके लिये आप चिरकालसे उत्कंठित हो रहे थे। संसारमें जितने ग्रंथ दिखाई देते हैं उनमें यह मंत्रशास्त्र बडा अलौकिक है, कारण इससे मनुष्यकी आकांक्षा बहुतही शीघ्र पूर्ण होजाती है, फिर यह शास्त्र वेदोंसे निकला है इसलिये इसकी सत्यतापर तो किंचिन्मात्रभी सन्देह नहीं किया जा सकता वरन इसके वाक्य ब्रह्मवाक्य समझे जाते हैं। मंत्रशास्त्रके अन्तर्गतही यंत्र और तंत्रशास्त्र भी हैं ।

प्राचीन कालमें हमारे महान् आचार्य ऋषि मुनियोंने इसी मंत्र (यंत्र-तंत्र) शास्त्रोंके द्वारा अपना जीवन सुखमय बनाया था। इन दिनों मंत्र-शास्त्रका प्रचार बहुत कम होने तथा इस विषयपर अच्छे सरल ग्रंथ न रहने एवं जनताकी अश्रद्धा बढने आदिसे यह शास्त्र प्रायः लुप्तसा होरहा है, किन्तु अब भी इस विषयका जो कुछ प्रचार शेष रहगया है उसपर यदि पाठक भलीभांति ध्यान देकर अध्ययन तथा मनन करें तो इस मंत्रवाक्यसे अल्प कालमें ही उनकी वह चिर अभिलाषा पूरी हो सकती है कि जो मरणपर्यन्त अन्य शास्त्रोंके पठन पाठनसे नहीं हो सकती ।

इस कर्मभूमिमें सिद्धि प्राप्त करानेके लिये अनेक अन्यान्य शास्त्र हैं और मन्त्रशास्त्रभी। उसमें जहाँ और और शास्त्र दूध अथवा दहीके सदृश हैं वहां मंत्र शास्त्र मक्खनके सदृश होरहा है। मक्खनमें दूध वा दहीसे अवश्यही बहुत अधिक स्वाद और अधिकशक्ति होती है। यह इससेभी सिद्ध है कि खाद्यपदार्थमें श्रीकृष्ण भगवान् माखनको ही श्रेष्ठ समझते थे। अतः शीघ्रही मनुष्योंके अभिलषित फल प्राप्त होनेके लिये मंत्रशास्त्रसे बढकर कोई दूसरा उपयोगी शास्त्र नहीं है। मंत्रशास्त्रके अन्तर्गतही यह "यंत्रचिन्तामणि" है कि जिसमें अनेक प्रकारके सिद्धिदायक मंत्र और यंत्र भरेहुये हैं ।

परमपूज्य महात्मा गंगाधरजीके पुत्र ६४ कलाओंमें चतुर श्रीगणेशजीके परमभक्त महाशयोंमें परम बुद्धिमान् दामोदरजी उत्पन्न हुये। उन्होंने जब शिवोक्त-सर्वोक्त देव्युक्त प्रभृति अनेकों शास्त्रोंको विस्तारपूर्वक देखकर =

मुद्रक और प्रकाशक-
गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
मालिक-" लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर " स्टीम्-प्रेस, कल्याण-बंबई.

प्रस्तावना।



प्रिय महानुभावों !

यह वही ग्रंथ है कि, जिसके लिये आप चिरकालसे उत्कंठित हो रहे थे। संसारमें जितने ग्रंथ दिखाई देते हैं उनमें यह मंत्रशास्त्र बडा अलौकिक है, कारण इससे मनुष्यकी आकांक्षा बहुतही शीघ्र पूर्ण होजाती है, फिर यह शास्त्र वेदोंसे निकला है इसलिये इसकी सत्यतापर तो किंचिन्मात्रभी सन्देह नहीं किया जा सकता वरन इसके वाक्य ब्रह्मवाक्य समझे जाते हैं। मंत्रशास्त्रके अन्तर्गतही मंत्र और तंत्रशास्त्र भी हैं ।

प्राचीन कालमें हमारे महान् आचार्य ऋषि मुनियोंने इसी मंत्र (यंत्र-तंत्र) शास्त्रोंके द्वारा अपना जीवन सुखमय बनाया था। इन दिनों मंत्र-शास्त्रका प्रचार बहुत कम होने तथा इस विषयपर अच्छे सरल ग्रंथ न रहने एवं जनताकी अश्रद्धा बढने आदिसे यह शास्त्र प्रायः लुप्तसा होरहा है, किन्तु अब भी इस विषयका जो कुछ प्रचार शेष रहगया है उसपर यदि पाठक भलीभांति ध्यान देकर अध्ययन तथा मनन करें तो इस मंत्रवाक्यसे अल्प कालमें ही उनकी वह चिर अभिलाषा पूरी हो सकती है कि जो मरणपर्यन्त अन्य शास्त्रोंके पठन पाठनसे नहीं हो सकती ।

इस कर्मभूमिमें सिद्धि प्राप्त करानेके लिये अनेक अन्यान्य शास्त्र हैं और मन्त्रशास्त्रभी। उसमें जहाँ और और शास्त्र दूध अथवा दहीके सदृश हैं वहां मंत्र शास्त्र मक्खनके सदृश होरहा है। मक्खनमें दूध वा दहीसे अवश्यही बहुत अधिक स्वाद और अधिकशक्ति होती है। यह इससेभी सिद्ध है कि खाद्यपदार्थमें श्रीकृष्ण भगवान् माखनको ही श्रेष्ठ समझते थे। अतः शीघ्रही मनुष्योंके अभिलषित फल प्राप्त होनेके लिये मंत्रशास्त्रसे बढकर कोई दूसरा उपयोगी शास्त्र नहीं है। मंत्रशास्त्रके अन्तर्गतही यह "यंत्रचिन्तामणि" है कि जिसमें अनेक प्रकारके सिद्धिदायक मंत्र और यंत्र भरेहुये हैं ।

परमपूज्य महात्मा गंगाधरजीके पुत्र ६४ कलाओंमें चतुर श्रीगणेशजीके परमभक्त महायशस्वी परम बुद्धिमान् दामोदरजी उत्पन्न हुये। उन्होंने जब शिवोक्त-सर्वोक्त देव्युक्त प्रभृति अनेकों शास्त्रोंको विस्तारपूर्वक देखकर लोको-

पकारके लिये स्वयम् मन्त्रयुक्त यंत्रोंके संग्रह करनेकी इच्छा की, उसी समय स्वप्नावस्थामें श्रीशंकर महाराजकी प्रेरणा हुई तब उक्त महापंडित दामोदरजीने इस चिन्तामणिरूपी यंत्रोंका संग्रह किया।

फिर तंत्रोंके आदि अनुवादक, अनेक ग्रंथोंके सुप्रसिद्ध टीकाकार, रचयिता संपादक और महानिर्वाण तंत्र–कामरत्न तंत्र, आश्चर्य योगमालातंत्र, गुप्तसधनतंत्र, गौरीकांचलिकातंत्र–गुरुतंत्र, नित्यतन्त्र आदिके भाषान्तरकर्ता मुरादाबाद निवासी परमपूज्य मेरे पितृव्य पंडित बलदेवप्रसादजी मिश्रने इस ग्रंथका सरल हिन्दी भाषामें अनुवाद किया, जिसके लिये तांत्रिक समाज उनका चिर कृतज्ञ रहेगा, किंतु दुःखकी बात है कि, हमारे पितृव्यजी इस ग्रंथके प्रकाशनके पूर्वही अपनी जीवनयात्रा समाप्तकर ब्रह्ममें लीन होगये।

यद्यपि कलियुगी जीव इस विद्याकी सिद्धि कर सकते हैं किंतु जिस प्रकार करना चाहते हैं वैसे यह विद्या सिद्धिप्रदान नहीं करसकती, पृथ्वी निर्वीर्य नहीं है। आजभी यदि पूर्ण विधिसे अनुष्ठान किया जाय तो अवश्यही सिद्धि प्राप्त हो सकती है।

पूर्वकालमें जितने ग्रंथ मंत्र (यंत्र–तंत्र) विद्याके मिलते थे, आज वह अदृश्य होरहे हैं किंतु बडे आनंदकी बात है कि ऐसे समयमें भी यंत्र–मंत्र तथा तंत्र ग्रंथोंके प्रकाश करनेकी रुचि फिर मनुष्योंके हृदयोंमें लहराने लगी है।

मंत्र इत्यादिके प्रयोगोंकी सिद्धि कहीं नहीं गई है किंतु सिद्धिकी अभिलाषा रखनेवाले ही नहीं हैं। जो मनुष्य मंत्र (तंत्र–यंत्र) विद्याको सीखना चाहें वह प्रथम सद्गुरुकी खोजकरें। खोजकरनेपर क्या नहीं मिलता है सच्चे गुरुके मिलजानेपर उनसे यथाविधि दीक्षा लेवें और उनके बताये मार्गका अनुसरण करें तो फिर सिद्धि प्राप्त करलेना कुछ कठिन नहीं है।

अंतमें साधकगणोंसे हमारी विनम्र प्रार्थना यही है कि, कदाचित् यथाविधि प्रयोग करनेपरभी आपको सिद्धि प्राप्त न हो तो यह दोष शास्त्रका न समझकर अपनाही समझिये और पुनर्वार सावधानीके साथ कार्यमें प्रवृत्त हूजिये, तो आपकी मनोकामना अवश्यही फलीभूत होगी। ऐसा मेरा दृढ विश्वास है।

इस ग्रंथको पूर्ण संशोधनकर अनेक छिद्रश्लोकों वा पदोंको सरल तथा स्पष्टकर तांत्रिक प्रेमियोंके और भी परमोपयोगी बनादिया है।

यदि मंत्र-यंत्र-तंत्र-प्रेमी प्रिय पाठक, ग्राहक, अनुग्राहक इसका आदरकर एक एक प्रति अपने पास रक्खें तो हम अपने विशेष उद्योग तथा अनुवादकके परिश्रमको सफल समझेंगे।

यदि इसमें कहीं कोई त्रुटि नरधर्मानुसार रहगयी हो तो पाठक महाशय उसको क्षमा करते हुए सूचना देनेकी कृपा करें। पुनरावृत्तिमें उसका सुधार करदिया जायगा।

इसकेलिये उदारचेता प्रेसाध्यक्ष सर्वगुणसम्पन्न परमोदार रावसाहब श्रीमान् सेठ रंगनाथजी तथा सेठ श्री श्रीनिवासजीको अनेकानेक हार्दिक धन्यवाद है कि, जिन्होंने इस पुस्तकके प्रकाशन तथा सर्वाङ्गसुन्दर बनानेमें कोई बात उठा नहीं रक्खी है। अतः प्रकाशकके इस अद्वितीय उत्साहकी हम अत्यंत सराहना करते हैं।

चिरपरिचित-

बम्बई. } जगदीशप्रसाद मिश्र.
मुरादाबाद.



श्रीः ॥

यन्त्रचिन्तामणेर्विषयानुक्रमणिका ।



इति अनुक्रमणिका समाप्ता ।



॥ श्रीः ॥

यन्त्रचिन्तामणिः।

भाषाटीकोपेतः।

मङ्गलाचरणम्।

यं ध्यायन्ति सुरासुराश्च निखिला यक्षाः पिशाचोरगा राजानश्च तथा मुनीन्द्रनिवहाः सर्वार्थदं सिद्धये। भक्तानां वरदाभयप्रदकरं पाशाङ्कुशालंकृतं चञ्चच्चामरवीज्यमानमनिशं सोऽहं श्रये शङ्करम् ॥ १ ॥ बभार दुःस्थान्मुनिपुङ्गवान्यो बुद्ध्याऽथ मन्त्रैश्च दुरासदौजाः। जाज्वल्यमानो दिशि दृश्यते यः स भार्गवो मामवताच्छरण्यः ॥ २ ॥ यस्य प्रसादाद्बलिनो भवन्ति जानन्ति दैत्या विविधां च मायाम्। यो लब्धवान् मन्त्रवरं षडङ्गं मृत्युञ्जयं देववराद्गणेशात् ॥ ३ ॥ ग्रन्थकर्तुःप्रशस्तिः—जालन्धरे पीठवरे प्रसिद्धे प्रत्यक्षरूपा भुवि वर्तते या। गोत्रे तस्मिन्वेदविद्याप्रवीणे योऽन्वाजैषीन्नास्तिकान्वेदबाह्यान् ॥ ४ ॥

सम्पूर्ण सिद्धियोंके अर्थ जिन शिवजी महाराजका सुर, असुर, यक्ष, पिशाच, उरग (सर्प) राजा मुनिगण आदि ध्यान करते हैं, जो भक्तोंको वर और अभय देते हैं, एवं पाश और अंकुशके धारण करनेसे शोभायमान हैं, जिनपर निरन्तर चँवर ढुलता रहता है, उन श्रीशिवजीमहाराजका मैं वारम्वार आश्रय लेताहूं ॥ १ ॥ जो प्रतापशील श्रीशुक्राचार्यजी गुप्त भावसे रहनेवाले मुनिश्रेष्ठोंको मंत्रबलसे जानकर धारण करतेहुए वह आकाश मंडलमें प्रकाशमान शरणागतोंकी रक्षा करनेवाले श्रीभार्गवजी मुझ शरणमें आयेकी रक्षा करें ॥ २ ॥ जिनकी प्रसन्नतासे दैत्यगण बलवान् होवें और अनेक प्रकारकी मायाओंको जानते हैं, उन्हीं शुक्राचार्यजीने देवताओंमें श्रेष्ठ श्रीगणेशजीसे मृत्युको जीतनेवाली श्रेष्ठ षडङ्गमंत्र विद्याको प्राप्त किया ॥ ३ ॥ प्रसिद्ध और पवित्रस्थान जालन्धर नाम नगरकी सुन्दर पुण्य भूमिमें उत्पन्न, वेदादि शास्त्रोंसे विमुख नास्तिकोंका पराजय करनेवाले षडङ्ग शास्त्रादिकोंके ज्ञाता जो उक्त भार्गवजीके वंशमें कोई महान् पुरुष उत्पन्न होगये हैं ॥ ४ ॥

१ यहांपर नाम न लेनेका कारण यह है कि—"आत्मनाम गुरोर्नाम नामातिकृपणस्य च" अपना नाम, गुरुदेवका नाम और बडे कृपणका नाम नहीं लेना चाहिये। इस शास्त्रकी मर्यादासे नाम नहीं लिया।

तदन्वये पण्डितः सन्नृसिंहो ज्वालामुखीं नौमि महाप्रभावाम्।
यां योगमायां परमार्थविद्यां विशेषवन्द्यां भृगुवंशजानाम्॥५॥
तस्यात्मजोऽभूद्भुवि धर्मशीलो नाम्ना महादेव इति प्रसिद्धः।
निसर्गवैरं प्रजहुः सुसत्वा यं प्राप्य दुष्टाहितरक्षसङ्घाः॥ ६ ॥
तस्मादासीत्सुमतिविकसद्देवदत्तः कलावान्मान्यो राज्ञां सदसि विदुषां गद्यगङ्गाप्रवाहः। उत्कल्लोलां दिशि दिशि जनाः कीर्तिपीयूपसिन्धुं यस्याद्यापि श्रवणपुटकैः कुञ्चिताक्षाः पिबन्ति ॥ ७ ॥ गङ्गाधरस्तत्तनयो बभूव विवेकगाम्भीर्यगुणैरुदारः। यं प्राप्य लक्ष्मीश्च सरस्वती च तत्पादयुग्मं स्थिरतां च नूनम् ॥ ८ ॥ दामोदरः सर्वकलाप्रवीणस्तस्माद्भूच्छ्रीगणनायभक्तः। लब्धप्रतिष्ठो गुरुदेवभक्तो मान्यः सतां धर्मपरायणोऽयम्॥९॥
प्रयोजनादिः–दृष्ट्वाऽनेकशिवागमांश्च बहुलांश्चालोक्य सौरागमान्देवीशास्त्रमहागमांश्च विविधानालोक्य विस्तारतः।

उन्हीं महात्मा भृगुवंशीके वंशमें उत्पन्न होकर मैं नृसिंह नामक पंडित महाप्रभावशालिनी श्रीज्वालामुखी देवीको प्रणाम करता हूँ। जो जगज्जननी योगमाया परम विद्या भृगुवंशियोंको विशेषकर वन्दन करनेके योग्य है ॥ ५ ॥ उन नृसिंहजीके पुत्र धर्मात्मा महादेव हुए, जिन महात्मा महादेवको प्राप्त करके जीवोंने स्वाभाविक वैर छोड़दिया और दुष्ट अहितके करनेवाले राक्षसादि भी स्वाभाविक वैरको त्यागकर प्रीति करनेलगे ॥ ६ ॥ महादेवजीके पुत्र बुद्धिमान् ६४ कलाओंमें निपुण राजाओंके माननीय पंडितोंकी सभामें गद्यपद्यात्मक वाणीके बोलनेवाले देवदत्त हुए । जिन महात्माकी ऊँची कल्लोलवाली कीर्तिरूप नदीके अमृतरूप रसको सम्पूर्ण दिशाओंमें आजतक भी कुञ्चिताक्ष मनुष्य श्रवणपुटोंसे पान कर रहे हैं ॥ ७ ॥ देवदत्तजीके पुत्र विवेक गंभीरतादि गुणोंसे उदार गंगाधर हुए, जिन महात्मा गंगाधरजीके दोनों चरणकमलोंको पाकर लक्ष्मी और सरस्वतीजी स्थिर भावको प्राप्त हुईं ॥८॥ गंगाधरजीके पुत्र ६४ कलाओंमें चतुर, गणेशजीके भक्त दामोदरजी उत्पन्न हुए, यह बडे प्रतिष्ठित गुरुदेवके भक्त, भक्तपुरुषोंके माननीय और अपने धर्ममें तत्पर हुए ॥ ९ ॥ शिवोक्त, सौरोक्त, देव्युक्त प्रभृति अनेकों शास्त्रोंको विस्तार पूर्वक देखकर परम बुद्धिमान् दामोदरजी लोकोपकारके

कर्तुं वाञ्छितसंग्रहं सुमतिमान्दामोदरः स स्वयं लोकानां च हिताय यन्त्रनिकरं मन्त्रेण युक्तं स्फुटम् ॥ १० ॥ प्रेरितश्चन्द्रचूडेन स्वप्ने तु द्विजपुङ्गवः । चकार कल्पं यन्त्राणां चिन्तामणिरिति स्फुटम् ॥ ११ ॥ पुरा कैलासशिखरे नानाधातुविचित्रिते । नानाद्रुमलताकीर्णे नानापुष्पोपशोभिते ॥ १२ ॥ अप्सरोगणसंकीर्णे सिद्धचारणसेविते । शिवभक्तैः सुरैर्दैत्यैः पन्नगैश्च विराजिते ॥ १३ ॥ योगध्यानैकनिपुणैस्तत्त्वविद्भिः सुसेविते । आयुधैश्चेतनावद्भिरुदीरितजयस्वनैः ॥ १४ ॥ एकनेत्रैर्द्विनेत्रैश्च त्रिनेत्रैरप्यनेककैः । एकपादैर्द्विपादैश्च त्रिपादैश्च सहस्रशः ॥ १५ ॥ महाक्रूरैर्महाभीमैः करालैश्च विराजिते । कम्बलाश्वतरैर्नागैर्गीतध्वनिविराजिते ॥ १६ ॥ इन्द्राद्यैर्लोकपालैश्च बाणाद्यैरसुरैस्तथा । दुर्वासाद्यैश्च मुनिभिः समन्तात्परिसेविते ॥ १७ ॥ एवंभूते च कैलासे देवदेवः स्वयंप्रभुः । ज्योतिर्मयोऽमृतमयो योगचिन्त्यः सदाशिवः ॥ १८ ॥ अव्यक्तो

लिये स्वयं मंत्रयुक्त यंत्रोंके संग्रह करनेकी इच्छा करते हैं, स्वप्नावस्थामें श्रीशिवजी महाराजकी प्रेरणाको स्वीकारकर दामोदर पंडित इस चिन्तामणिरूपी यंत्रोंका संग्रह करते हुए ॥ १० ॥ ११ ॥ पूर्वकालमें कैलास पर्वतकी चोटी नानाप्रकारकी धातुओंसे विचित्र, अनेक प्रकारके वृक्ष और लताओंसे व्याप्त और अनेक प्रकारके पुष्पोंसे विराजमान थी ॥ १२ ॥ अप्सराओंके समूहसे शोभित, सिद्ध चारणादिकोंसे सेवित शिवभक्त, सुर, दैत्य और पन्नगोंसे विराजमान ॥ १३ ॥ योगध्यानमें चतुर, तत्वोंके जाननेवालोंसे निषेवित, चेतनावाले आयुधोंसे युक्त जयशब्दसे गुञ्जायमान थी ॥ १४ ॥ त्रिनेत्रवाले, दो नेत्रवाले, एक नेत्रवाले और अनेक नेत्रवाले, तीन चरणवाले, दो चरणवाले, एक चरणवाले, हजारों महाक्रूर अतिभयंकर, कराल कम्बल (पशुविशेष), अश्वतर (खिचर) और हाथियोंके शब्दोंकी ध्वनिसे गर्ज रही थी ॥ १५ ॥ १६ ॥ इन्द्रादि लोकपालोंसे, बाणादि असुरोंसे, दुर्वासादि मुनियोंसे सब प्रकारसे सेवित थी ॥ १७ ॥ ऐसे कैलासपर्वतके शिखरपर ज्योतिर्मय, अमृतमय, योगचिन्त्य सदाशिव अव्यक्त (नहीं प्रकाशस्वरूप) व्यक्तरूप विष्णुभगवान्से स्तुतिको

व्यक्तरूपोऽसौ यत्रास्ते तु स्वयं शिवः । विष्णुना स्तूयमानस्तु प्रहृष्टस्तु सदाशिवः ॥ १९ ॥ कदाचिदुपविष्टोऽयमेकान्ते परमेश्वरः । हृष्टस्तुष्टः प्रसन्नात्मा सृष्टिसंहारकारकः ॥ २० ॥ चिन्तामणौ कल्पवरे सुतन्त्रे श्रीचन्द्रचूडस्य मुखाद्विनिर्गते । तस्मिन्मयाऽऽख्या किल पीठिकेयं कृताऽत्र दामोदरपण्डितेन ॥ २१ ॥

इति श्रीयन्त्रचिन्तामणौ महाकल्पे प्रत्यक्षसिद्धिप्रदे उमामहेश्वरसंवादे दामोदरपण्डितोद्धृते प्रथमपीठिका समाप्ता ॥

प्राप्त प्रफुल्लित सदाशिव, हृष्ट, पुष्ट, प्रसन्न आत्मा, सृष्टि और संहार करनेवाले देवताओंके देवता स्वयं प्रकाशमान श्रीशङ्करजी महाराज विराजमान थे ॥ १८–२० ॥ श्रीशिवजी महाराजके मुखकमलोंसे निकले कल्पोंमें श्रेष्ठ सुतन्त्र यन्त्रचिंतामणि कल्पकी यह पूर्वपीठिका दामोदर नाम पंडितने इस ग्रंथमें ३२ प्रकार कल्पना की है ॥ २१ ॥

इति श्रीयन्त्रचिन्तामणौ महाकल्पे प्रत्यक्षसिद्धिप्रदे उमामहेश्वरसम्वादे दामोदरपंडितोद्धृते पण्डित-बलदेवप्रसादजी मिश्रकृतभाषाटीकासहिते प्रथमपीठिका समाप्ता ।

स पातु देव्याः कबरीविलासो लास्ये लसन्त्या गिरिराजपुत्र्याः । यं पश्यतो बालमृगाङ्कमौलेः क्षणेन सर्वज्ञपदं बभूव ॥ १ ॥ एकदा देवदेवेशं दृष्ट्वा देवी शुचिस्मिता । उपगम्य शनैर्वाक्यं प्रोवाच जगदम्बिका ॥ २ ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ देवदेव जगन्नाथ करुणाकर शङ्कर । वर्णाश्रमाश्च धर्माश्च संदेहाश्च महाप्रभो ॥ ३ ॥ कौतुकानि स्वकल्पानि पुराणादीनि वै प्रभो । श्रुतं सर्वं मया त्वत्तः सर्वज्ञोऽसि यतः स्वयम् ॥ ४ ॥ मन्त्राणां विनियोगस्तु यन्त्राणां निर्णयस्तथा । आचारभेदा ये लोके योगाभ्यासः सुदुर्लभः ॥ ५ ॥ सुदुर्लभतरं ज्ञानं यज्ञकाण्डः सुदुर्लभः । अनेकमन्त्रयोगो वै वेदोक्तोऽपि हि दृश्यते ॥ ६ ॥ तथैवागमभेदेषु उदितो हि न संशयः । एवं द्विजाश्च मन्त्रज्ञा दृश्यन्ते क्लेशभागिनः ॥ ७ ॥ पाखण्डिभिः पराभूता नास्तिकैर्वेदनिन्दकैः । विना मन्त्रैर्जपैर्होमैरल्पक्लेशेन च प्रभो ॥ ८ ॥ तत्क्षणाज्जायते सिद्धिः सुसिद्धा सर्वकामदा । मारणोच्चाटनाकृष्टे विद्वेषे स्तम्भने तथा ॥ ९ ॥ अभिचारेषु

जिस नृत्य करती हुई गिरिराजपुत्री श्रीपार्वतीजीके कबरी (चोटी) विलासको देखकर श्रीशंकरजी क्षणमात्रमें सर्वज्ञपदको प्राप्त हुए, वह महाराणीके कबरीविलास हमारी रक्षा करे ॥ १ ॥ एक समय देवताओंके देवता श्रीशिवजी महाराजको देखकर जगज्जननी श्रीपार्वतीजी निकट आकर कुछ एक हँसती हुई धीरे २ बोली ॥ २ ॥ पार्वतीजी बोलीं–हे देव जगन्नाथ ! हे करुणासागर ! हे शिव शंकर ! हे प्रभो ! वर्ण, आश्रम, धर्म संदेह इत्यादि मैंने सब आपके मुखारविन्दसे श्रवणकरे, क्योंकि आप सर्वज्ञ हैं ॥ ३ ॥ ४ ॥ मंत्रोंके विनियोग, यंत्रोंका निर्णय, आचार भेद, कठिनसे प्राप्त होनेयोग्य योगाभ्यास और जो अनेक वैदिक मन्त्र योग दृष्टि आते हैं ॥ ५ ॥ ६ ॥ तथा आगम भेदसे सभीका आपने वर्णन किया है इन सब विषयोंके जाननेवाले द्विजाति वेदके निन्दक नास्तिकोंसे पराजित होकर दुःख भोगते हैं ॥ ७ ॥ अतः हे प्रभो ! विनाही मन्त्र, जप, होम इत्यादिके किये सुखपूर्वक साधकको क्षणकालमें सुसिद्ध सम्पूर्ण कामनाओंकी देनेवाली सिद्धि प्राप्त होजाय ॥ ८ ॥ और मारण आकर्षण, विद्वेषण, स्तम्भन आदि सब प्रकारके

सर्वेषु काम्यार्थेषु च सर्वदा । विवादे च विषादे च रणे वैरि-
जये तथा ॥ १० ॥ एतत्सर्वं यथा देव सिध्यते साधकस्य हि ।
विचार्य देवदेवेश रहस्यं परमं वद ॥ ११ ॥ श्रीशिव उवाच ॥
वेदाचारो मया प्रोक्त ऋषीणां तु महात्मनाम् । शिवधर्मस्तु
मुक्तानां वैष्णवानां तु वैष्णवः ॥ १२ ॥ सौरं साङ्ख्यं मया
प्रोक्तं बहूनां सिद्धिमिच्छताम् । शाक्तं च बहुधा प्रोक्तं भैरवं
बहुधा प्रिये ॥ १३ ॥ धर्मकामार्थमोक्षाणां ज्ञानं चैव प्रका-
शितम् । रहस्यं गोपितं भद्रे सर्वत्रापि न संशयः ॥१४॥ रह-
स्यहीनो मन्त्रस्तु ध्यानेनाऽपि विशेषतः । न सिध्यति वरारोहे
कल्पकोटिशतैरपि ॥१५॥ श्रीदेव्युवाच ॥ प्रसादं कुरु देवेश
सुखोपायं वदस्व मे । सुरहस्यं सुबोधं च सद्यः प्रत्ययकारकम्
॥१६॥ विना होमेन जाप्येन पुरश्चरणसेवया । कलौ तु सिद्ध्यते
देव तथोपायं वदस्व मे ॥ १७ ॥ श्रीशिव उवाच ॥ साधु साधु

अभिचार तथा काम्य अर्थ विवाद, विषाद, संग्राममें वैरीकी जय इत्यादि प्रयोग साधकको शीघ्रही सिद्ध होजाय ॥ ९ ॥ १० ॥ हे देवदेवेश ! विचारकर उस परमरहस्यको प्रकाश करो ॥ ११ ॥ श्रीशिवजी बोले-महात्मा ऋषियोंका वेदाचार मैंने कहा, मुक्त पुरुषोंका शिवधर्म कहा और वैष्णवोंका वैष्णवधर्म कहा ॥ १२ ॥ सिद्धिकी इच्छा करनेवालोंके निमित्त सौर और सांख्य योग कहा, हे प्रिये ! शाक्त और अनेक प्रकारके भैरव कहे ॥ १३ ॥ धर्म, काम, अर्थ, मोक्षका ज्ञानभी प्रकाश किया । हे भद्रे ! रहस्यको तो सदा निस्सन्देह सब स्थानोंमें गुप्तही रखना चाहिये ॥ १४ ॥ हे वरारोहे ! विशेष ध्यान करनेपरभी रहस्यहीन मंत्र अनेकों उपाय करनेसे भी सिद्ध नहीं होता है ॥ १५ ॥ श्रीपार्वतीजी बोली-हे देवेश ! मेरे ऊपर कृपाकर, सुखपूर्वक जानने योग्य शीघ्र विश्वासके देनेवाले रहस्यको सुखपूर्वक कहो ॥ १६ ॥ हे देव ! विना तप, जप, होम इत्यादि पुरश्चरणोंके किये कलियुगमें सिद्ध होनेवाले उपायको कहो ॥ १७ ॥ श्रीशिवजी बोले-हे महा-

महाभागे लोकानां हितकारके। इदमित्थं न केनापि पृष्टोऽहं पद्मलोचने ॥ १८ ॥ शृणुष्वैकाग्रचित्ता त्वं रहस्यं क्षणसिद्धिदम्। कल्पं चिन्तामणिं नाम गुह्याद्गुह्यतरं महत् ॥ १९ ॥ सर्वाङ्गमस्य सारं च मन्त्राणां सारमुत्तमम्। अथर्वणस्य वेदस्य सारात्सारतरं परम् ॥ २० ॥ अस्मिन्कल्पे भविष्यन्ति चिन्तामणिमये शुभे। यन्त्राणि बहुधा देवि काम्यकर्मकराणि च ॥ २१ ॥ एतत्कल्पं सदा यस्य लिखितं विद्यते गृहे। संपूज्यते प्रतिदिनं प्रभावं तस्य वै शृणु ॥ २२ ॥ अल्पमृत्युभयं नास्ति नास्ति चौरभयं तथा। भूतप्रेतपिशाचानां प्रभावो नैव जायते॥२३॥ अन्यस्य कपटं नूनं न सिध्यति कदाचन। अविश्वासो न कर्तव्यः साधकेन वरानने ॥ २४ ॥ अभिचारो भवेत्कल्पे ह्यविश्वासान्न संशयः। संशयेन कृतं यन्त्रं विपरीतं प्रजायते ॥२५॥ यन्त्रलेखनविधिः–स्नानं कृत्वा शुचिर्भूत्वा पूजयेत्कुलदेवताम्। लेखनीयं प्रयत्नेन एकान्ते यन्त्रमुत्तमम् ॥ २६ ॥ यस्य कस्य प्रयोगस्य विधिरेष प्रकीर्तितः। दिनत्रयं

प्राज्ञे ! हे लोकोंका हितकरने वाली ! तुमने बडा उत्तम प्रश्न किया है। हे कमलनयनि ! आजतक मुझसे इस प्रकारसे किसीने नहीं पूछा ॥ १८॥ अब तुम एकामचित्त हो शीघ्र सिद्धिके देनेवाले गुप्तसे गुप्त अतिश्रेष्ठ चिन्तामणि कल्पको श्रवण करो ॥ १९ ॥ सम्पूर्ण शास्त्रोंके सारभूत और मंत्रोंके उत्तम साररूप अथर्वण वेदके अतिसारयुक्त इस चिन्तामणि नाम कल्पमें काम्यकर्मके करनेवाले अनेकों यंत्र हैं ॥ २० ॥ २१ ॥ यह लिखित कल्प सदा जिसके स्थानमें प्रतिदिन पूजित होता है उसके प्रतापको सुनो ॥ २२ ॥ अल्प मृत्युका भय, चोरका भय, भूत प्रेत पिशाच इत्यादिकोंका किया उपद्रव उनके यहाँ नहीं होता ॥ २३ ॥ और अन्य किसी जीवका कियाहुआ कपट भी उस स्थानपर नहीं चलता है॥ २४ ॥ हे वरानने ! साधकको अविश्वास न करना चाहिये, कल्पमें अविश्वासके करनेसे निस्सन्देह अभिचार होजाता है और संदेह पूर्वक किया हुआ विपरीत (उल्टा) होजाता है ॥ २५ ॥ स्नानकर पवित्र हो शुद्ध मनसे कुलदेवताका पूजन करे, फिर एकान्तमें उत्तम यंत्रको लिखे ॥ २६ ॥ सम्पूर्ण प्रयोगोंकी यह विधि कहीहै तीन दिन भोग–विधा-

प्रकुर्वीत पूजाभोगविधानतः ॥ २७ ॥ त्रिरात्रं भूमिशायी स्याद्ब्रह्मचर्यरतः शुचिः । त्रिदिनाज्जायते स्वप्नं साधकस्य वरानने ॥ २८ ॥ सिद्धादिः–सिद्धं साध्यमरिं चैव सुसिद्धमथवा ध्रुवम् । अवश्यं वदति स्वप्ने मन्त्राधिष्ठानदेवता ॥२९॥ यदा न जायते स्वप्नं तदसाध्यं विनिर्दिशेत् । नो चेद्यथाश्रुतं स्वप्ने तत्तथैव विनिर्दिशेत् ॥ ३० ॥ श्रुत्वा देवमुखात्स्वप्ने फलसिद्धिं विधानतः । यदा निवारितः स्वप्ने तदा तद्यन्त्रमुत्तमम्॥३१॥ एवं विलिख्य यः कुर्यात्सिद्धिरेव प्रकीर्तिता । अतएव मयोक्तानि यन्त्राणि सुबहून्यपि ॥ ३२ ॥ येन मन्त्रेण संसिद्धिर्येषां येषां प्रजायते । तेन तेन हि तद्ग्राह्यं निषिद्धं तु परित्यजेत ॥ ३३ ॥ विधिरेष प्रसिद्धोऽस्ति यन्त्राणां भूतले कलौ । मन्त्रकोष्ठे तु पश्यन्ति सिद्धसाध्यादि साधकाः ॥ ३४ ॥ न तेषां जायते सिद्धिः कलिदोषात्कदाचन । न चैकसाधको लोके नैकप्रकृतिको जनः ॥ ३५ ॥ न चैकराशिनक्षत्रं न चैका कुलदेवता । यन्त्रं बीजं तथा मन्त्रं चतुर्धा भवति प्रिये ॥ ३६ ॥

नसे पूजा करे । ब्रह्मचर्य्यका धारणकर शुद्ध अंतःकरण हो तीन दिनतक भूमिमें शयन करे । हे वरानने ! तीन दिनके भीतरही साधकको स्वप्न होता है ॥ २७ ॥ २८ ॥ सिद्ध, साध्य, आरंभाव तथा सुसिद्ध इत्यादि लक्षणोंको अधिष्ठातृ देवता स्वयं प्रकाश करदेता है ॥ २९ ॥ यदि स्वप्न न हो तो प्रयोगको असिद्ध समझे, स्वप्नावस्थामें अनिवारित (नहीं निषेध किया हुआ) साधक जैसा कुछ स्वप्नमें देवताके मुखसे श्रवण करे उस कथनके अनुसार फलसिद्धिको विधानपूर्वक मन्त्रमें लिखकर आरंभ करनेसे निश्चय सिद्धिको प्राप्त होगा इस कारण मैंने बहुतसे यंत्र कहे हैं ॥ ३०–३२ ॥ जिन जिन मंत्रोंसे जिन २ मंत्रोंकी सिद्धि कही है उन उन मंत्रोंको ग्रहण करना चाहिये । निषिद्ध विधिका त्याग देना उचित है, कालियुगमें इस प्रकार यंत्रोंकी विधि प्रसिद्ध है । सिद्ध, साध्य, आदि साधकलोग, मंत्रकोष्ठको देखते हैं ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ अतः उनको कलिदोषसे किसी प्रकार सिद्धि नहीं होती, न तो लोकमें एक साधक है और न एक प्रकृतिके मनुष्य हैं, न एक राशि है और न एक नक्षत्र है और न एक कुलदेवता है किन्तु अनेकों हैं ॥ ३५ ॥ हे प्रिये ! यंत्रबीज तथा मंत्र यह चार प्रकारके हैं–

नवैकपञ्चमे सिद्धः साध्यः षट्दशयुग्मके। त्रिसप्तरुद्रे सुसिद्धो वेदाष्टद्वादशे रिपुः ॥ ३७ ॥ सिद्धसाध्यावरिश्चेति सुसिद्धस्तु तथा परः । सिद्धः सिध्यति कालेन साध्यः सिद्ध्यति वा न वा ॥ ३८ ॥ अरिर्निकृन्तते मूलं सुसिद्धस्तत्क्षणार्थदः । तस्मादैववशाद्राशिं कालं स्वप्नं महोदयम् ॥ ३९ ॥ साधकस्य मनोभावं सम्यग् ज्ञात्वा समाचरेत् ॥ ४० ॥ एतद्रहस्यं परमं समीरितं मन्त्रस्य यन्त्रस्य च सिद्धिदायकम् । एताद्विदित्वाऽखिलसिद्धिभाजनं भवन्तु सर्वे भुवि साधकाः सदा ॥ ४१ ॥ चिन्तामणौ कल्पवरे सुगोप्ये श्रीचन्द्रचूडस्य नियोगतो हि । यन्त्रादिसाध्याङ्गमयीं हि पीठिकां चकार दामोदरविप्रवर्यः॥४२

इति श्रीयन्त्रचिन्तामणौ महाकल्पे प्रत्यक्षसिद्धिप्रदे उमामहेश्वर-संवादे दामोदरपण्डितोद्धृत द्वितीयपीठिका समाप्ता ॥

सिद्ध, साध्य, अरि और सुसिद्ध ॥ ३६ ॥ नौ एक पाँचवेंमें सिद्ध, छः दश दोमें साध्य, तीन, सात ग्यारहवें सुसिद्ध और चार आठ बारहवेंमें रिपुसंज्ञक होते हैं अर्थात् अपनी राशिसे मंत्रकी वा यंत्रराशि (३६) ९ । १ । ५ पाँचवीं होतो सिद्ध छठी, दशमी दूसरीमें साध्य, तीसरी, सातवीं ग्यारहवींमें सुसिद्ध और चौथी, आठवीं, बारहवींमें शत्रु होता है ॥ ३७ ॥ सिद्धते कुछ कालमें सिद्ध होता है, साध्य सिद्ध होता भी है और नहीं भी होता, अरि मूलको काटता है सुसिद्ध तत्काल फलका देता है इस कारण राशि काल स्वप्न, महोदय और साधकके मनोगत अभिप्रायको भले प्रकार जानकर क्रिया आरंभ करनी चाहिये ॥ ३८–४० ॥ मन्त्र यंत्रोंकी सिद्धिका देनेवाला यह परम पवित्र रहस्य कहा गया, इस रहस्यको जानकर सम्पूर्ण मनुष्य भूमंडलमें सिद्धि भावके पात्र होंगे ॥ ४१ ॥ इस प्रकार शिवजीकी आज्ञाको स्वीकारकर दामोदरजी सुगोप्य चिन्तामणि यन्त्रको यंत्रादिकोंकी सिद्धि विधान पूर्वक द्वितीय पीठिकाको कहते हुए ॥ ४२ ॥

इति श्रीयंत्रचिन्तामणौ महाकल्पे प्रत्यक्षसिद्धिप्रदे उमामहेश्वरसम्वादे दामोदरपंडितोद्धृते पं. बलदेव प्रसादजी मिश्रकृतभाषाटीका-सहिते द्वितीय पीठिका समाप्ता ॥ २ ॥

अथ वश्याधिकारः ।

एको देवः स जयति शिवः सर्वदुःखान्तकारी आदाञ्चक्र नयनकमले नार्चितो विष्णुना यः । यः शृङ्गारी गिरिशतनयादत्तदेहार्द्धभागो लोकानां यो हवनविधिकृत्कालकूटं दधार ॥ १ ॥ राज्ञां वश्यकराणि दुष्टपुरुषस्त्रीणां जनानां तथा तान्युद्धृत्य महागमाच्च बहुधा यन्त्राणि बीजानि च । अस्मिन्कल्पवरे क्रमेण विविधान् गङ्गाधरस्यात्मजो नित्यं सत्यमतिः प्रवक्ष्यतितरां दामोदरः साम्प्रतम् ॥ २ ॥ श्रीशिव उवाच ॥ राजवश्यं महायन्त्रं शृणु देवि सुशोभितम् । कांस्यभाजनमानीय शुद्धं भस्मादिभिः कृतम् ॥ ३ ॥ जातीकाष्ठेन विलिखेद्रोचनाचन्दनेन च । साध्यनाम लिखेन्मध्ये वर्तुलं वेष्टयेत्ततः ॥ ४ ॥ तस्योपरि दलान्यष्टौ वकारांस्तत्र विन्यसेत । ततस्तद्वेष्टयेत् सम्यग्वर्तुलं पूर्ववत् प्रिये ॥ ५ ॥ तस्योपरि प्रकुर्वीत पद्मं षोडशपत्रकम् । अकरादिस्वरा लेख्या दले प्रत्येकतः क्रमात् ॥ ६ ॥ ततस्तद्वेष्टयेत्सम्यग्रेखाभिस्तिसृभिस्ततः । मल्लिकाजातिकुसुमैः सिताम्भोजैः प्रपूजयेत ॥ ७ ॥

सम्पूर्ण दुःखोंके नाशकरनेवाले कमलनयनसे पूजित विष्णु भगवानको चक्रके देनेवाले, शृङ्गार क्रियामें निपुण, गिरिराजकी पुत्री श्रीपार्वतीजीको अर्द्धाङ्गमें धारण करनेवाले, संसारको हवनकरनेवाले कालकूटके धारणकरनेवाले श्रीशंकरजी महाराजकी जय हो ॥ १ ॥ अब नृप, दुष्ट मनुष्य, स्त्री इत्यादिकोंके वश्यकारक यंत्र तथा बीजोंको शास्त्रोंसे उद्धारकर विधि पूर्वक इस चिन्तामणि कल्पमें गंगाधरजीके पुत्र दामोदरजी वर्णन करेंगे ॥२॥ श्रीशिवजी बोले-हे देवि ! राजवश्यकारक महायंत्रको सुनो, कांसीके पात्रको लाकर भस्म गोमय इत्यादिसे शुद्धकरै ॥ ३ ॥ फिर जाती वृक्षकी लकडीकी कलम बनाकर गोरोचन और चन्दनसे लिखे, मध्यमें साध्यके नामको लिखे फिर गोलाकार खींचै उस गोलआकारके ऊपर अष्टदल कमल बनाकर व अक्षर उनके भीतर भरदेवै, फिर एक और कमल दलके ऊपर गोलाकार चिह्नलिखे॥४-५॥ उसके ऊपरभी पूर्ववत् सोलह दल कमल लिखे हरेक कमलको क्रमानुसार अकारादि वर्णोंसे पूर्ण करदे ॥ ६ ॥ फिर तीन रेखा उस सोलह कमल दलके ऊपरभी

अथ वश्याधिकारः ।

एको देवः स जयति शिवः सर्वदुःखान्तकारी प्रादाच्चक्रं नयनकमले नार्चितो विष्णुना यः। यः शृङ्गारी गिरिशतनयादत्तदेहार्द्धभागो लोकानां यो हवनविधिकृत्कालकूटं दधार॥१॥ राज्ञां वश्यकराणि दुष्टपुरुषस्त्रीणां जनानां तथा तान्युद्धृत्य महागमाच्च बहुधा यन्त्राणि बीजानि च। अस्मिन्कल्पवरे क्रमेण विविधान् गङ्गाधरस्यात्मजो नित्यं सत्यमतिः प्रवक्ष्यतितरां दामोदरः साम्प्रतम् ॥२॥ श्रीशिव उवाच ॥ राजवश्यं महायन्त्रं शृणु देवि सुशोभितम् । कांस्यभाजनमानीय शुद्धं भस्मादिभिः कृतम् ॥ ३ ॥ जातीकाष्ठेन विलिखेद्रोचनाचन्दनेन च। साध्यनाम लिखेन्मध्ये वर्त्तुलं वेष्टयेत्ततः ॥ ४ ॥ तस्योपरि दलान्यष्टौ चकारांस्तत्र विन्यसेत। ततस्तद्वेष्टयेत सम्यग्वर्त्तुलं पूर्ववत प्रिये ॥ ५ ॥ तस्योपरि प्रकुर्वीत पद्मं षोडशपत्रकम् । अकरादिस्वरा लेख्या दले प्रत्येकतः क्रमात् ॥ ६ ॥ ततस्तद्वेष्टयेत्सम्यग्रेखाभिस्तिसृभिस्ततः । मल्लिकाजातिकुसुमैः सिताम्भोजैः प्रपूजयेत ॥ ७ ॥

सम्पूर्ण दुःखोंके नाशकरनेवाले कमलनयनसे पूजित विष्णु भगवानको चक्रके देनेवाले, शृङ्गार क्रियामें निपुण, गिरिराजकी पुत्री श्रीपार्वतीजीको अर्द्धाङ्गमें धारण करनेवाले, संसारको हवनकरनेवाले कालकूटके धारणकरनेवाले श्रीशंकरजी महाराजकी जय हो ॥ १ ॥ अब नृप, दुष्ट मनुष्य, स्त्री इत्यादिकोंके वश्यकारक यंत्र तथा बीजोंको शास्त्रोंसे उद्धारकर विधि पूर्वक इस चिन्तामणि कल्पमें गंगाधरजीके पुत्र दामोदरजी वर्णन करेंगे ॥२॥ श्रीशिवजी बोले-हे देवि ! राजवश्यकारक महायंत्रको सुनो, कांसीके पात्रको लाकर भस्म गोमय इत्यादिसे शुद्धकरै ॥ ३ ॥ फिर जाती वृक्षकी लकडीकी कलम बनाकर गोरोचनऔर चन्दनसे लिखे, मध्यमें साध्यके नामको लिखे फिर गोलाकार खींचै उस गोल आकारके ऊपर अष्टदल कमल बनाकर व अक्षर उनके भीतर भरदेवै, फिर एक और कमल दलके ऊपर गोलाकार चिह्नलिखे॥४-५॥ उसके ऊपरभी पूर्ववत् सोलह दल कमल लिखे हरेक कमलको क्रमानुसार अकारादि वर्णोंसे पूर्ण करदे ॥ ६ ॥ फिर तीन रेखा उस सोलह कमल दलके ऊपरभी

अन्यैश्च श्वेतकुसुमैः सुगन्धैः श्वेतकर्पटैः । संपूज्य यन्त्रराजं तं महामोहनसंज्ञकम् ॥ ८ ॥ एवं सप्तदिनं कृत्वा त्रिलोहैर्वेष्टयेत्ततः । यो धारयेत्तं शिरसि बाहुमूले गलेऽथवा ॥ ९ ॥ योषिद्वा पुरुषो वाऽपि कृतनिश्चयसंयुतः । किंकरा इव ते सर्वे वशीभूताः सदैव हि ॥ १० ॥

महामोहनयन्त्रम् ।



इति श्रीयन्त्रचिन्तामणिमहाकल्पे प्रत्यक्षसिद्धिप्रदे उमामहेश्वरसंवादे तृतीयपीठिकायां वशीकरणाधिकारे दामोदरपण्डितोद्धृते महामोहनं नाम प्रथमं यन्त्रम् ॥ १ ॥

खींचै, तत्पश्चात् मालती चमेली श्वेत कमल इत्यादि सुगंधित द्रव्योंसे पूजन करै ॥ ७ ॥ उन सुगंधित द्रव्योंसे तथा श्वेत पुष्पोंसे पूजन करै इस यंत्रकी पूजा विधिपूर्वक करै, क्योंकि महामोहन नामक यह यंत्र है ॥ ८ ॥ इस प्रकार सात दिनतक पूजनकर त्रिलोह (सोना, चांदी, तांबा,) में बंदकर अर्थात् त्रिलोहके तावीजमें बंदकरके शिर, बाहुमूल, (दंड) वा गलेमें धारण करै ॥ ९ ॥ किन्तु विश्वास पूर्वक धारणकरै, विश्वास पूर्वक स्त्री वा पुरुषके धारण करनेसे सब किंकरके समान उसके वशीभूत हो जायंगे ॥ १० ॥

इति श्रीयंत्रचिन्तामणौ महाकल्पे प्रत्यक्षसिद्धिप्रदे उमामहेश्वरसम्वादे दामोदर पंडितोद्धृते बलदेवप्रसादजीमिश्रकृतभाषाटीकासहिते तृतीय पीठिकायां वशीकरणाधिकारे महामोहनं नाम प्रथमं यंत्रम् ॥१॥

श्रीशिव उवाच–अतःपरं प्रवक्ष्यामि यन्त्रं वै बीजसंपुटम् । राजवश्यकरं श्रेष्ठं जनवश्यकरं तथा ॥ १ ॥ एकपङ्क्तौ समालेख्यं ह्रींकाराणां चतुष्टयम् । ह्रींकारपुटितं पश्चात्साध्यनाम लिखेदधः ॥ २ ॥ अधश्च चतुरो बीजान् ह्रींकारांश्च पुनस्तथा । रेखाद्वयं चतुष्कोणं भूर्जपत्रे लिखेद्बुधः ॥ ३ ॥ रोचनाकुङ्कुमेनैव श्रीखण्डेन तथैव च । अनामिकारक्तमिश्रं लिखेद्यन्त्रं सुशोभनम् ॥ ४ ॥ एतद्यन्त्रं तदा कुर्याद्यदा क्रुद्धो नराधिपः । वाञ्छते निगडैर्बद्धं सर्वस्वं वाऽपि नाशितुम् ॥ ५ ॥

बीजसपुटं यन्त्रम् ।

ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	देवदत्त		ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

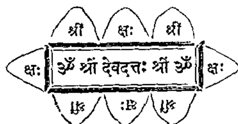
तदा तद्यन्त्रराजं तु संपूज्य विधिवत्स्वयम् । नानापुष्पैः सुनैवेद्यैर्मांसैश्च विविधैः शुभैः ॥ ६ ॥ यथाशक्त्या तु संभोज्याः कुमार्यो ब्राह्मणास्तथा । योगिन्यश्च सुवासिन्यो नमस्कृत्य सुनिश्चितम् ॥७॥ तद्यन्त्रं मुष्टिमाबध्य गच्छेद्वै राजमन्दिरम् । तत्कोपं शमयत्याशु वशीकरणमुत्तमम् ॥ प्रसादस्तत्क्षणाद्देवि जायते नात्र संशयः ॥ ८ ॥

इति यन्त्र०म.फ.उ.म.सं.तृ.पी.व. कोपशमनं बीजसंपुटं नाम द्वितीयं यन्त्रम्॥ २

श्री शिवजी बोले–राजव्यक्ति तथा जनव्यक्तिके वश्यकारक बीजसे पुटित परमश्रेष्ठ यंत्रको कहताहूं ॥ १ ॥ गोरोचन, केशर, लालचंदन अनामिका (कन उंगलीके धोरेकी उंगली) का रुधिर इन सब द्रव्योंको एकत्रितकर भोजपत्रके ऊपर दो रेखायुक्त चतुष्कोणयंत्र लिख उस यंत्रके बीचमें तीन रेखा कल्पना कर प्रथम पंक्तिमें चार ह्रींकार वर्ण लिखे दूसरी पंक्तिमें ह्रींकारसे पुटित साध्यके नामको लिखै तत्पश्चात् तृतीय पंक्तिमें फिर चार ह्रींकार लिखे अर्थात् १० ह्रींकार वर्ण और एक साध्यका नाम लिखे ॥२॥३॥४॥ इस यंत्रका उस समय लिखे कि, जिस समय राजा अतिक्रुद्ध होकर सम्पूर्ण धनादिक लेनेकी इच्छाकर कारागारकी प्राप्तिके निमित्त इच्छाकरै ॥ ५ ॥ तब अनेक प्रकारके पुष्प नैवेद्य इत्य दि शुभद्रव्योंसे यंत्रराजका पूजन करै ॥ ६ ॥ पीछे कुमारी, ब्राह्मण, योगिनी, सुवासिनी इनको निश्चय पूर्वक-

श्रीशिव उवाच ॥ अतः परं प्रवक्ष्यामि स्वामिवश्यं मनोहरम् । य इच्छेत्स्वामिनं कर्तुं यावज्जीवं हि मानवः ॥१॥ तिर्यग्रेखाद्वयं कुर्याद्दीर्घं दक्षिणे चोत्तरे । अन्ते तु कर्णिकां कुर्याद्दक्षिणे चोत्तरे पुनः ॥ २ ॥ प्रणवं च तथा श्रीं च साध्यनाम तथैव च । तदन्ते श्रीं च प्रणवं लिखेन्मध्ये तु साधकः ॥ ३ ॥ उपर्यपि दलांस्त्रींश्च अधोभागे त्रयं तथा । दक्षिणोत्तरपूर्वे च

यावज्जीव स्वामिवश्यकरं यन्त्रम् ।



दलेषु विलिखेत्क्रमात् ॥ ४ ॥ क्षकाराः सविसर्गन्ताः कोणे श्रीङ्कारबीजकाः। एवं लिखित्वा तद्यन्त्रं रोचनाभूर्जपत्रके ॥५॥ शरावसंपुटे क्षिप्त्वा पुटयेदग्निना ततः । उद्धृत्य स्वाङ्गशीतं च यन्त्रभस्म पिबेन्नरः ॥ ६ ॥ यावज्जीवं भवेत्तस्य स वश्यो नात्र संशयः । तृतीयं तु समाख्यातं स्वामिवश्यकरं परम् ॥ ७ ॥

इति श्रीयन्त्रचिन्तामणौ० उमाम० सं० तृतीयपीठिकायां वशीकरणाधिकारे दामोदरपण्डितोद्धृते यावज्जीवं स्वामिवश्यकरं नाम तृतीयं यन्त्रम् ॥ ३ ॥

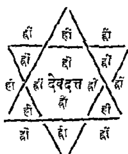
-नमस्कारकर भोजन करावै ॥७॥ फिर यंत्रराजको मुट्ठीमें दबाकर राजभवनमें जानेसे साध्य व्यक्तिका क्रोध तत् क्षण शांत हो प्रसन्नता होगी, यह उत्तम वशीकरण है ॥ ८ ॥

इति श्रीयंत्रचिन्तामणौ महाकल्पे उमामहेश्वरसंवादे भाषाटीकासहिते तृतीयपीठिकायां वशीकरणाधिकारे कोपशमनं बीजसम्पुटं नाम द्वितीयं यन्त्रम् ॥ २ ॥

श्री शिवजी बोले-अब स्वामी वश्यकारक मनोहर यंत्रको कहताहूं जिसके प्रयोगके करनेसे जीवन पर्यन्त स्वामी वश्य होता है ॥१॥ दक्षिण उत्तर वृद्धि तिरछी दो रेखाकर उनके दक्षिण उत्तर भागमें दो कर्णिका निर्माणकर ऊर्ध्व भाग तथा अधो भागमें साध्य व्यक्तिके नामको लिख फिर श्री और ओंकारको लिखकर कर्णिका तथा बीचके दलमें विसर्गसहित क्षकार अक्षर कल्पनाकर बाकी स्थानोंमें श्री इस अक्षरको लिखें ॥२-४॥ इस प्रकार उक्त यंत्रको

श्रीशिव उवाच ॥ यदा कस्यापि केनापि कार्यं निर्नाशितं भवेत् । तदा महाभियोगेन दिव्यं कोऽपि प्रकारयेत् ॥ १ ॥ तदा तन्मोहनार्थाय कुर्याद्दिव्यं विचक्षणः । रोचनाकुङ्कुमेनैव षट्कोणं भूर्जपत्रके ॥ २ ॥ कोणे कोणे तु ह्रींकारं मध्यदेशे लिखेन्नरः । कोणान्तराले ह्रींकारान्विलिखेत्तु षडेव हि ॥ ३ ॥ साध्यनाम लिखेन्मध्ये चतुर्ह्रींकारसंपुटम् । उपर्यधः पूर्वतोऽन्ते ह्रींकारांश्चतुरो लिखेत् ॥ ४ ॥ शरावसम्पुटे क्षिप्त्वा पूजयेद्भक्तिभावतः । द्वितीयेऽह्नि तदाकृष्य यन्त्रराजं सुपूजितम् ॥ ५ ॥ दिव्यकाले शिखायां तु बद्ध्वा यन्त्रं प्रयत्नतः । मौनस्थश्चिन्तयेत्कालं फलं वेगेन मानवः ॥ ६ ॥ न तदास्य भयं किंचिद्यन्त्रराजप्रसादतः । दिव्यस्तम्भो भवेन्नूनं स लोके साध्यतामियात् ॥ ७ ॥

दिव्यस्तंभनयंत्रम् ।



इति श्रीयन्त्रचिन्तामणौ० दिव्यस्तम्भनं नाम चतुर्थं यन्त्रम् ॥ ४ ॥

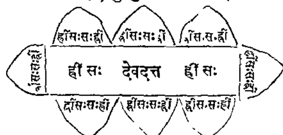
–गोरोचनसे भोज पत्र पर लिखकर सरय्योंमें बंदकर अग्निमें पुटितकरै जब वह ठंढा होजाय तब उसको खोलर यंत्रराजकी भस्मको पान करै, इस प्रयोगके करनेसे साध्यव्यक्ति निस्सन्देह जीवनपर्यन्त वशीभूत रहताहै यह तीसरा स्वामीको वशमें करनेवाला यंत्र कहा ॥ ६–७॥

इति श्रीयंत्रचिन्तामणौ महाकल्पे उमामहेश्वरसम्वादे व० कृ० भाषाटीकासहिते तृतीयपीठिकायां वशीकरणाधिकारे यावज्जीव स्वामिवश्यकरं नाम तृतीयं यंत्रम् ॥ ३ ॥

शिवजी बोले–जब कि किसी पुरुषने किसीके कार्यको विनाशित किया है तब उस पुरुषके मोहनार्थ गोरोचन, कुंकुम इन दो वस्तुओंसे भोजपत्रपर षट्कोण दिव्ययंत्र लिखै ॥ १ ॥ तत्पश्चात् पूर्व और पश्चिम इन दो कोणोंमें दो ह्रींकाराक्षर लिख इनके अन्तरालमें ६ ह्रीं काराक्षर और लिखे यंत्रं आ ह्रींकार हुए । पुनः षट्कोण यंत्रके भीतरके भागमें ह्रींकाराक्षर संपुटित स

श्रीशिव उवाच ॥ यदा कस्योपरि क्रुद्धो राजा वाञ्छति मारितुम् । तदा तन्मोहनार्थाय दुष्टनिग्रहणाय च ॥ १ ॥ रोचनाकुङ्कुमेनैव लिखेद्यन्त्रं तु भूर्जके । ह्रींसश्च साध्यनाम च ह्यन्ते ह्रींसस्तथैव च ॥ २ ॥ पश्चात्तद्वेष्टयेत्सम्यक् चतुष्कोणे तु रेखया । उपर्यधो दलांस्त्रींस्त्रीन्कोणे कोणे लिखेद्बुधः ॥ ३ ॥ ह्रींकारं च सकारं च सकारं ह्रीं तथैव च । एवं दलेषु प्रत्येकं लिखेद्बीजचतुष्टयम् ॥ ४ ॥ शरावसंपुटे क्षिप्त्वा संपूज्य च विधानतः । दुष्टानां च मुखस्तम्भः स वश्यो भवति क्षणात् ॥ ५ ॥

राजमोहनं, दुष्टमुखस्तम्भन यन्त्रम् ।



राजकोपहरं नाम दुष्टमोहनकं परम् । एवं सप्तदिनं कार्यं संसिध्यति न संशयः ॥ ६ ॥

इति श्रीयन्त्रचिन्तामणौ महाकल्पे राजमोहन दुष्टमुखस्तम्भन नाम पञ्चमयन्त्रम् ५॥

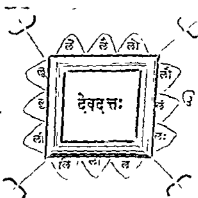
–साध्य मनुष्यके नामाक्षर लिख अन्य चार कोणोंको भी ४ ह्रींकाराक्षरसे वेष्टितकर दिव्य यंत्रराजको पूर्ण करै । एवं सब १६ ह्रींकाराक्षर हुए ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ इस प्रकार यंत्रराजको निर्माणकर शराव (सरइया) सम्पुटमें रखकर भक्तिभावसे पूजनकर दूसरे दिन शरावमेंसे निकालकर श्रेष्ठ मुहूर्त्तमें यत्नपूर्वक शिखामें बाँधे फिर वेगसे मौन हो काल और फलका चिन्तवन करे ॥ ५ ॥ ६ ॥ तो इस साधक व्यक्तिको किसी समयमें भी किसीसे भय नहोगा किन्तु दिव्यस्तंभन होकर लोकमें साध्य भावको प्राप्त होगा ॥ ७ ॥

इति श्रीयन्त्रचिन्तामणौ महाकल्पे प्रत्यक्षसिद्धिप्रदे उमामहेश्वरसम्वादे पं० बलदेवप्रसादमिश्रकृतभाषाटीकासहिते तृतीयपीठिकायां वशीकरणाधिकारे दिव्यस्तम्भनं नाम चतुर्थ यन्त्रम् ॥ ४ ॥

श्री शिवजी बोले–जब कि, किसी समय किसीके ऊपर राजा क्रुद्ध होकर उसको मारनेकी इच्छा करै तब राजाके मोहन तथा दुष्ट राजानुयायी पुरुषोंके

श्रीशिव उवाच ॥ यदा क्रुद्धः प्रभुर्नूनं घातं कर्तुं हि वाञ्छति । तदा स्वजीवरक्षार्थं यन्त्रं मृत्युञ्जयं लिखेत् ॥१॥ आनीय भूर्जपत्राणि लिखेत् पत्रद्वयोपरि । मध्ये नाम लिखित्वा तु चतुष्कोणं तु रेखया ॥ २ ॥ एवं सप्तचतुष्कोणं लिखेल्लोहशलाकया । तस्योपरि दलांस्त्रींश्च चतुर्दिक्षु विलिख्य च ॥ ३ ॥ ईशानादौ लिखेल्ल ला लि ली लु लू च दक्षिणे । ले लै लो लौ पश्चिमे च लं लः स्यादथ चोत्तरे ॥४ ॥ एवं द्वादशदलेषु प्रत्येकं बीजमेककम् । त्रिशूलं च चतुष्कोणे सबिन्दुं विलिखेन्नरः॥५॥एवं यन्त्रद्वयं लेख्यं संपुटं कारयेत्ततः। निक्षिप्य भूमौ तद्यन्त्रं साधकश्चोत्तरामुखः ॥ ६ ॥ तस्योपरि क्षिपेन्नूनं महतीं च

महामृत्युञ्जययन्त्रम् ।



—निग्रहके अर्थ गोरोचन और कुंकुमसे भोजपत्रपर इस प्रकार यंत्रको लिखे ॥ १ ॥ कि, चौकोर लम्बी रेखा खैंच कर्णिका युक्तकर ऊपर नीचेके भागमें तीन दल स्थापितकर ह्रीं सः सः ह्रीं इस प्रकार प्रत्येक दलके भीतर उक्त चार बीजोंको लिखकर रेखाके मध्यभागमें ह्रीं सः इन दो बीजोंसे पुटित कर साध्यव्यक्तिका नामाक्षर लिखे, शरावमें संपुटितकर पूजन करे तो दुष्टोंका मुखस्तंभन होगा और साध्यव्यक्ति वशीभूत होगा ॥ २–५ ॥ राजकोपका नाशक दुष्टोंके मुखस्तंभनकारक इस यंत्रका सात दिनतक पूजन करनेसे निस्सन्देह कार्य सिद्ध होता है ॥ ६ ॥

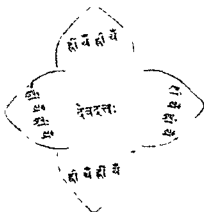
इति श्रीयंत्रचिन्तामणौ महाकल्पे प्रत्यक्षसिद्धिप्रदे उमामहेश्वर-
सम्वादे बलदेवप्रसादमिश्रविरचितभाषाटीकासहिते
तृतीयपटलिकायां वशीकरणाधिकारे राजमोहनं
दुष्टमुखस्तम्भनं नाम पंचमं यंत्रम् ॥५॥

श्रीशिवजी बोले–जब कि, स्वामी क्रोधित होकर घात करनेकी इच्छा करै तब अपने जीवनकी रक्षाके लिये मृत्युञ्जयनाम यंत्रको लिखे । भोजपत्रके दो टुक-

शिलां दृढाम् । पश्चात्तत्संमुखे गच्छेत्कोपस्तस्य प्रशाम्यति ॥ ७ ॥ मृत्युञ्जयं महायन्त्रं प्राणरक्षाकरं परम् । यदा कस्योपरि क्रुद्धः कालोऽपि हि दुरासदः ॥ ८ ॥ तदापि यन्त्रराजोऽयं रक्षत्येव न संशयः ॥ ९ ॥

इति श्रीयन्त्रचिन्तामणौ० वशीकरणाधिकारे महामृत्युंजयं नाम षष्ठ यन्त्रम् ॥६॥

विवादविजययंत्रम् ।



श्रीशिव उवाच ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि विवादे विजयं नृणाम् । यन्त्रं कुर्यात्प्रयत्नेन सर्वलोकमनोहरम् ॥ १ ॥ मध्ये नाम लिखित्वा तु वर्तुलं वेष्टयेत्ततः । चतुर्दलं ततः कुर्याद्बीजयुक्तं तु मानवः ॥ २ ॥ ह्रीं यैं ह्रीं यैं प्रतिदले रोचनाकुङ्कुमेन च । भूर्जपत्रे समालिख्य पूजयेद्भक्तिमान्नरः ॥ ३ ॥ धूपै-

---

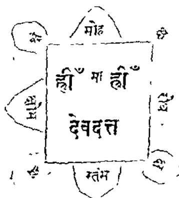
–ष्ठोंके ऊपर पृथक् २ चतुष्कोण (चौकोर) सात रेखावाला चारों भागमें तीन २ कमलदलसे सुशोभित और चारों कोनोंमें त्रिशूल लगाकर लोहेकी कलमसे यंत्रराजको लिखै। तत्पश्चात् उक्त यंत्रके भीतर साध्य मनुष्यके नामके अक्षर लिख ईशान दिशातक ल, ला, लि, ली, लु, लू, ले, लै, लो, लौ, लं, लः इन बारह अक्षरोंको प्रत्येक कोष्ठमें लिखै, इस प्रकार साधक दो यंत्रोंको लिखकर उत्तरकी ओर मुखकर बैठ पृथ्वीमें रक्खी हुई एक भारी शिलासे दाबकर यदि साध्यव्यक्तिके सम्मुख जायगा तो वह साध्यव्यक्ति क्रोधको दूर करके प्रसन्न होगा, कारण कि यह मृत्युञ्जयनामक यंत्र प्राणोंकी रक्षा करनेवाला है, इसका प्रताप एकवार कालके क्रोधकोभी शांतकर रक्षा करनेको निस्सन्देह समर्थ होगा ॥ १–९ ॥ इति दुष्टभयकरं महामृत्युञ्जयं षष्ठं यन्त्रम् ॥ ६ ॥

श्रीशिवजी बोले–अब विवादमें जयको देनेवाले सर्व मनोहर इस यंत्रको विधान पूर्वक निर्माण करै ॥ १ ॥ निर्माणका विधान–एक गोलाकार चक्रको कुंकुमसे भोजपत्रपर खेंचकर चार कमलदलोंसे युक्तकर बीचमें साध्य व्यक्तिके

सकाराः सविसर्गान्ताः कोणे कोणे तु विन्यसेत् ॥ ३ ॥ प्रणवं मुख्यदिग्लेख्यं चतुर्दिक्षु क्रमेण च । ततस्तद्वेष्टयेत्सम्यक् चतुष्कोणं द्विरेखया॥४॥ खररक्तेन संलेख्यं भूर्जपत्रे मनोहरे । एतद्यन्त्रं सुसंपूज्य प्रक्षिपेद्दुग्धमध्यतः ॥ ५ ॥ दुष्टाः सर्वे विनश्यन्ति राजा मानं ददाति च। एकविंशद्दिनं यावत्तावत्तत्रैव यन्त्रकम् ॥ ६ ॥

इति यन्त्रचिन्ताम० उ० म० स० तृतीयपीठिकायां पिशुनदयकरं नाम नवमं यन्त्रम् ॥ ९ ॥

व्यवहारविवादजयद यन्त्रम् ।



श्रीशिव उवाच ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि विवादे जयवर्द्धनम् । व्यवहारे भयहरमिदं यन्त्रं प्रशस्यते ॥१॥ पूर्वपंक्तौ समालेख्यं ह्रीं मां ह्रीं च तथैव च । तस्याधः साध्यनामं तच्चतुष्कोणेन वेष्टयेत् ॥ २ ॥ कोणे कोणे दलं कुर्यान्मध्यदेशे तथैव च । दक्षिणे रोधबीजं तु नैर्ऋते ॐ तथैव च ॥ ३॥ पश्चिमे

–अष्टदलसे विभूषितकर चतुष्कोणको दो रेखाओंसे युक्तकर चक्रके भीतर साध्यव्यक्तिके नामाक्षर लिख प्रतिकोणमें विसर्ग मिलाकर पूर्वादि चारोंदिशा-ओंमें प्रणवको लिखे । फिर दुष्ट मोहन मंत्रक इन यंत्रका विधानपूर्वक पूजनकरके २१ दिनतक दूधमें स्थापित रखनेसे दुष्टोंका मुखमर्दन होगा॥१–३॥

इति श्रीयन्त्रचिन्तामणौ महाकल्पे प्रत्यक्षसिद्धिप्रदे उमामहेश्वरसंवादे तृतीयपीठिकायां वशीकरणाधिकारे पं० बलदेव० भा० टी०-सहिते पिशुनदयकरं नाम नवमं यंत्रम् ॥ ९ ॥

स्तम्भबीजं तु वायव्ये क्षं तथैव च । उत्तरे क्षोभबीजं तु ईशान्ये क्षं तथैव च ॥ ४ ॥ पूर्वे च मोहबीजं तु आग्नेय्यां क्षं तथैव च । एवं चाष्टदले न्यस्य बीजानि द्वादशैव तु ॥ ५ ॥ शरावसंपुटे क्षिप्त्वा यन्त्रराजं जयावहम् । अभ्यर्च्य गन्धपुष्पाद्यैर्दीपैश्चाष्टभिरेव च ॥ ६ ॥ लोकपालांस्तु संपूज्य भोजयित्वा कुमारिकाम् । बलिदीपैः प्रपूज्याथ अष्टादिक्षु क्रमेण तु ॥ ७ ॥ तावत्पूज्यं प्रयत्नेन यावत्कार्यं च सिध्यति । व्यवहारजयं नाम विवादविजयं तथा॥८॥ राज्ञां कुले विवादे च जयेन्नास्त्यत्र संशयः । मानोन्नतिर्भवेत्तस्य यन्त्रराजप्रसादतः ॥९॥

इति श्रीयन्त्र०दा०प०ते व्यवहारे विवादे च जयदं नाम दशम यन्त्रम् ॥१०॥

श्रीशिव उवाच ॥ यमिच्छेद्वशगं कर्तुं यावज्जीवं वरानने । तदा यन्त्रं प्रकुर्वन्ति गाणपत्यं सुसिद्धिदम् ॥ १ ॥ भूर्जपत्रं समानीय विस्तृतं छिद्रवर्जितम् । अनामिकारक्तमिश्रं द्विर-

-रेखामें ह्रीं, मों, ह्रीं इन बीजोंको लिख नीचेकी पंक्तिमें साध्यव्यक्तिके नामके अक्षर लिखे और वक्ष्यमाण बीजोंकी पूर्ण करे । विधान यथा-दक्षिणदलमें रोधबीजको, नैर्ऋत्यकोणमें क्षं बीजको, उत्तरदिशामें क्षोभ बीजको, ईशानकोणमें क्षं बीजको, पूर्वदिशामें मोहबीजको, अग्निकोणमें क्षं बीजको लिखे, इस प्रकार जयके देनेवाले यंत्रको निर्माणकर शरावसंपुटमें रखकर अष्ट गंध धूप दीप नैवेद्यादिकोंसे पूजनकर आठों दिशाओंमें बलि॰ दानादि क्रियाओंको विधिपूर्वक करके इन्द्रादि लोकपालोंका पूजनकर कुमारियोंको भोजन करावे और जबतक कार्य सिद्ध न हो तबतक उक्त विधानपूर्वक यंत्रराजका पूजन करता रहै तो विवादमें यंत्रराजके प्रसादसे जयको प्राप्त हो राजकुलमें प्रतिष्ठा और उन्नतिका भागी होगा ॥ १-९ ॥

इति श्रीयंत्रचिन्तामणौ महाकल्पे प्रत्यक्षसिद्धिप्रदे उमामहेश्वरसंवादे
बलदेवप्रसादजीमिश्रकृतभाषाटीकासहिते व्यवहारे विवादे
च जयदं नाम दशमं यंत्रम् ॥ १० ॥

श्रीशंकर बोले-हे वरानने ! यदि जीवनपर्यन्त किसी व्यक्तिको वशमें करनेकी इच्छा हो तो शीघ्र सिद्धिके देनेवाले गणपति यंत्रका प्रयोग करे ॥ १ ॥ विधान यथ-चौड़े और छिद्ररहित भोजपत्रके टुकडेके ऊपर दो रेखाओंसे मिश्रित चतुष्कोण यंत्रको अनामिका रुधिर, हाथीका मद, लाक्षा

यावज्जीववश्यकरं गाणपत्यं यन्त्रम् ।

गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ

ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं

क्रों ह्रीं क्लीं गँ देवदत्तः गँ

क्लीं ह्रीं क्रौं ह्रीं क्लीं क्रों ह्रीं

ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं

गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ (दायाँ स्तम्भ)

गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ

दस्य मर्दं तथा ॥ २ ॥ यावकस्य रसं चैव रोचनं च तथैव च। एतच्चतुष्कं संयोज्य जातीकाष्ठेन संलिखेत ॥ ३ ॥ ह्रींकाराः सप्त संलेख्याः पूर्वपंक्तौ वरानने। अधः पङ्क्तौ तु संलेख्यं क्रों ह्रीं क्लीं गँ तथैव च ॥ ४ ॥ साध्यनाम तथा गं च ततः पंक्तौ तृतीयके । क्लीं ह्रीं क्रौं च त्रिबीजानि ह्रीं क्लीं क्रौं ह्रीं तथैव च ॥ ५ ॥ ततः पङ्क्तौ चतुर्थ्यां च ह्रींकाराणां चतुष्टयम् । एवं संलेख्य बीजानि त्रिविंशतिसमूहकम् ॥ ६ ॥ पश्चात्तद्वेष्टयेत्सम्यक् चतुष्कोणं तु रेखया । गँकारा दश संलेख्याः पूर्वे पश्चिम उत्तरे ॥ ७ ॥ प्राङ्मुखास्तु सुसंलेख्यास्त्रिंशत्संख्या गकारकाः । सुक्षेत्रात्तु समानीय मृत्तिकां कृष्णवर्णकाम् ॥ ८ ॥ तया गणपतिं कृत्वा यन्त्रं तस्योदरे क्षिपेत् । संपूज्य गन्धपुष्पाद्यैरिमं मन्त्रमुदीरयेत् ॥ ९ ॥ देवदेव गणाध्यक्ष सुरासुरनमस्कृत । देवदत्तं महावश्यं

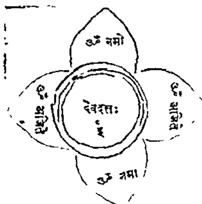
–रस, गोरोचन, इन सम्पूर्ण वस्तुओंको एकत्रितकर जातीवृक्षकी लकडीकी कलम बना भोजपत्रके ऊपर दो रेखावाले चतुष्कोण यंत्रको खैंचकर उक्त यंत्रके भीतरके भागमें४ तिरछी रेखा खैंचे । फिर प्रथम रेखामें सात ह्रीं बीज और दूसरी रेखामें क्रों, ह्रीं, क्लीं, गं इन चार बीजोंको आदिमें लगाय साध्यव्यक्तिके नामाक्षरको लिख अन्तमें एक गं बीज और लिखे, पुनः तीसरी पंक्तिमें क्लीं ह्रीं, क्रौं, ह्रीं, क्लीं, क्रों, ह्रीं इन सात बीजोंको स्थापितकर चौथी पंक्तिमें ह्रीं ह्रीं, ह्रीं, ह्रीं, इन चार बीजोंको लिख, पूर्व, पश्चिम, उत्तर दिशामें दश दश गंबीज लिखे, अर्थात् यंत्रके पूर्वादि भागोंमें लिखे दक्षिणमें नहीं । तत्पश्चात् पवित्र स्थानसे काली मिट्टी लाकर गणेशजीकी प्रतिमाको निर्माणकर उक्त यंत्रको गणेशजीके उदरमें स्थापितकर गंध पुष्पादिकोंसे पूजनकर " देवदेव गणाध्यक्ष सुरासुरनमस्कृत । देवदत्तं (यहां साध्यव्यक्तिके

यावज्जीवं कुरु प्रभो ॥ १० ॥ इमं मन्त्रं समुच्चार्य हस्तमात्रं निखन्य च । क्षिप्त्वा तत्र गणाध्यक्षं पूरयित्वा तु मृत्तिकाम् ॥ ११ ॥ यावज्जीवं भवेद्वश्यो गणराजप्रसादतः ॥ १२ ॥

इति श्रीप० वशी०यावज्जीववश्यकरं गाणपत्यं नामैकादशं यन्त्रम् ॥ ११ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि जनवश्यकरं परम् । मध्ये नाम लिखित्वा तु ईकारं विलिखेदधः ॥ १ ॥ त्रिरावृत्तं तु संवेष्ट्य भूर्जपत्रे सुविस्तृते । चतुर्दले लिखेत्पश्चात्पूर्वादौ दिक्चतुष्टये ॥ २ ॥ ॐ नमो ॐनमो लेख्यं पश्चिमे पूर्वके दले।

यावज्जीवं जनवश्यकरं यन्त्रम् ।



ॐ अजिते अजिते चैव लिखेद्दक्षिण उत्तरे ॥ ३ ॥ राजवश्यकरं नाम यन्त्रराजं मनोहरम् । त्रिदिनं पूजयेन्नित्यं ब्रह्मचर्यरतो नरः ॥ ४ ॥ ब्राह्मणं भोजयेच्चैकं चतुर्थेऽहनि सुप्रभे । त्रिलोहवेष्टितं कृत्वा बाहुमूले च धारयेत् ॥ ५ ॥ हेमं च राजतं चैव ताम्रं चैव विशेषतः ॥ यन्त्रस्य

-नामोच्चारण करना योग्य है) महावश्यं यावज्जीवं कुरु प्रभो॥" इस मंत्रका उच्चारण करता हुआ हाथभर जमीनको खोदकर उसमें गणेशजीकी प्रतिमाको धरकर ऊपरसे मिट्टी डाल बन्द कर दे, साध्य व्यक्ति गणेशजीके प्रसादसे जीवनपर्यन्त वशमें रहेगा ॥१–१२ ॥ इति यावज्जीववश्यकरं यंत्रम् ॥ ११ ॥

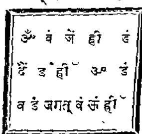
श्रीशिवजी बोले–हे प्रिये ! जन वश्यकारक यंत्रको कहता हूं, उसकी विधिको सुनो । तीन रेखा युक्त एक गोलाकार चक्रको कपूर, कुंकुम, गोरोचन, कस्तूरी इन सब वस्तुओंकेद्वारा भोजपत्रके ऊपर लिख पूर्वादि चारों दिशाओंको कमल दलसे वेष्टित करे, तत्पश्चात् उक्त यंत्रके मध्यमें साध्यव्यक्तिके नामाक्षरोंको अन्तमें ईकार लगाकर लिखे और पूर्व पश्चिमदलोंमें अजिते इनको स्थापितकर ब्रह्मचर्यपूर्वक तीन दिनतक गन्ध पुष्पादिकोंसे पूजन कर चौथे दिन एक ब्राह्मणको भोजन करा प्रातःकालके समय त्रिलोह

धारणं श्रेष्ठं बाहुमूले गलेऽथवा ॥ ६ ॥ सर्वेषां चैव यन्त्राणां विधिरेष उदाहृतः । सुभगो दर्शनीयश्च स्वजनानां विशेषतः ॥ ७ ॥ यन्त्रस्य धारणाद्देवि स भवेन्नात्र संशयः । कर्पूरकुंकुमाभ्यां च रोचनागरुकेसरैः ॥ ८ ॥ लिखेद्यन्त्रवरं श्रेष्ठं मन्त्रतन्त्रविचक्षणः ॥ ९ ॥

इति श्रीयन्त्रचि० म० प्र० उ० तृ० पी० व० दा० यावज्जीवं जनवश्यकरं नाम द्वादशं यन्त्रम् ॥ १२ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ जगद्वश्यं महायन्त्रं शृणु देवि सुशोभनम् । कर्पूरं मृगनाभिश्च चन्दनं रोचनं तथा ॥ १ ॥ जातीकाष्ठेन संलेख्यं भूर्जपत्रे प्रयत्नतः । प्रणवं च वकारं च जें ह्रीँ डं च तथैव च ॥ २ ॥ पूर्वपङ्क्तौ तु संलेख्यं ताराद्यं बीजपञ्चकम् । दें डं ह्रीं प्रणवं चैव डंकारं च तथैव च ॥ ३ ॥ पंक्तौ द्वितीये संलेख्यं यत्नतो बीजपञ्चकम् । तृतीयपङ्क्तौ संलेख्यं वंकारं तदनंतरम् ॥ ४ ॥ उकारं च जगन्नाम वंकारं तदनन्तरम् । ह्रींकारश्च ततश्चान्ते एवं वै बीजपञ्चकम् ॥ ५ ॥

जगद्वश्यकर यन्त्रम् ।



(सोना, चांदी, तांबा) में वेष्टितकर दण्ड अथवा गलेमें धारण करेगा तो इस मनोहर राज्य वश्यकारक यंत्रधरके प्रतापसे स्वबन्धुगणका दर्शनीय तथा अति माननीय होगा ॥ १-९ ॥

इति श्रीयंत्रचिन्तामणौ महाकल्पे प्रत्यक्षसिद्धिप्रदे उमामहेश्वरसम्वादे पं० बलदेवप्रसादमिश्रकृतभाषाटीकासहिते तृतीयपीठिकायां यावज्जीवं जनवश्यकरं नाम द्वादशं यंत्रम् ॥ १२ ॥

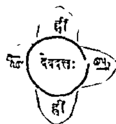
श्रीशंकरजी बोले-हे देवि ! जगत्के वश्यकारक अतिशोभायमान यंत्रको श्रवण करो । उसका विधान यह है-दो रेखायुक्त एक चौकोर यंत्रको भोजपत्रके ऊपर चमेलीकी लकडीकी कलम बनाकर, केशर, कस्तूरी, लालचन्दन, गोरोचनसे लिखकर उक्त यंत्रके भीतर तीन तिरछी रेखा खैंचकर पहली रेखामें ओं, वं, जें, ह्रीं, डं; दूसरी रेखामें दैं, डं, ह्रीं, ओं, डं; तीसरी रेखामें वं,

तत्रापि विलिखेन्नूनं टंकारं तु चतुर्थकम् । एवं बीजानि संलेख्य चतुःकोणं तु कारयेत ॥ ६ ॥ द्विरेखया महाकार्यं जगद्वश्यकरं परम् । पूजयेत्रिदिनं देवि सुगन्धैः सुमनोहरैः ॥ ७ ॥ त्रिलोहवेष्टितं कृत्वा धारयेद्बाहुमध्यतः । जगद्वश्यं भवेत्तस्य यन्त्रं यावत्तु तिष्ठति ॥ ८ ॥ संपूज्य नित्यमेवादौ यन्त्रं देवार्चनादिषु ॥ ९ ॥

इति श्रीयं० म० प्र० उ० तृ० ब०द्वा० जगद्वश्य त्रयोदश यन्त्रम् ॥ १३ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ यदा स्वभृत्यः क्रुद्धः सन्मर्म सर्वं प्रकाशते । न शक्यते निराकर्तुं देशकालबलेन च ॥ १ ॥ तदा तन्मोहनार्थाय स्वकीयार्थस्य सिद्धये । यन्त्रं पिशाचिकानाम कर्तव्यं सुविचक्षणैः ॥ २ ॥ साध्यनाम लिखित्वा तु वर्तुलं वेष्टयेत्ततः । चतुर्दलं प्रकर्तव्यं बीजयुक्तं मनोहरम् ॥ ३ ॥ ह्रीँकाराश्चतुरो लेख्या दलमध्ये चतुर्दिशम् । रोचना भूर्जपत्रे तु लेखन्या विलिखेन्नरः ॥ ४ ॥ संपूज्य गन्धपुष्पाद्यैर्धूपैर्नानाविधैरपि ।

पिशाचियन्त्रम् ।



हं, जगत् वं, च, ह्रीं बीजोंको लिखे । तत्पश्चात् तीन दिनतक गन्ध पुष्पादिकोंसे पूजनकर त्रिलोहमें बंदकर दंडमें धारण करे तो जबतक यह यंत्र दंडमें बंधा रहेगा तबतक जगत् वश्य रहेगा । परन्तु प्रथम देवता आराधनके समय प्रतिदिन नियमपूर्वक यंत्रराजका पूजन करना योग्य है ॥ १–९ ॥

इति श्रीयंत्रचिन्तामणौ महाकल्पे प्रत्यक्षसिद्धिप्रदे उमामहेश्वरसम्वादे तृतीयपीठिकायां वशीकरणाधिकारे पं० बलदेवप्रसादमिश्रकृतभाषाटीकासहिते जगद्वश्यं त्रयोदशं यंत्रम् ॥ १३ ॥

श्रीशिवजी बोले, हे प्रिय ! यदि सेवक क्रुद्ध होकर सम्पूर्ण मनादिकको प्रकाशकर नाश करनेके यत्नमें उद्यत हो परन्तु देशकालके वशसे स्वामी उससे किसी प्रकार निवेधमो न कर सके, तब उसके वशके लिये एक वर्तुल चक्र भोजपत्रके ऊपर गोरोचनसे रोचकर पूर्वादि चारों दिशाओंमें कमल दलमें

ततस्तद्दधिमध्ये तु क्षिपेद्यन्त्रवरं शुभे ॥ ५॥ स वश्यो जायते नूनं यन्त्रराजप्रसादतः ॥ यन्त्रं पिशाचिकं नाम भृत्यवश्यकरं परम् ॥ ६ ॥ न देयं यस्यकस्यापि स्वयं रुद्रेण भाषितम् ॥७॥

इति यं० चि० भृत्यवश्यकरं पिशाचिसंज्ञं चतुर्दशं यन्त्रम् ॥ १४ ॥

श्रीशिव उवाच॥क्रूरप्रकृतिकः स्वामी यदा संसेव्यते जनैः। सेव्यमानोऽपि हि सदा भवत्येव दुराग्रही ॥१॥ खलैः परिवृतो नित्यं दुराचारो महीपतिः । उत्तमो वाऽधमो वाऽपि म्लेच्छो वा प्रभुतां गतः ॥ २ ॥ यन्त्रं कालानलं कुर्यात्तदा तद्वश्यसिद्धये । साध्यनामाक्षरं लेख्यं ह्रीँकारे गर्भमध्यगम् ॥३ ॥ यावन्तश्चाक्षरा नाम्नि तावन्तश्च तथा लिखेत ॥ ईकारमन्ते संलेख्यं रोचनाभूर्जपत्रके ॥ ४ ॥ त्रिरावर्तं चतुष्कोणं दीर्घेण फलवत्कृतम्।

क्रूरवश्यकरं कालानलयन्त्रम् ।

ह्रीँ दे	ह्रीँ व	ह्रीँ द	ह्रीँ त	ईँ

-युक्तकर चक्रके भीतर सेवकके नामके अक्षरोंको लिख पूर्वादि चारों दिशाओंमें ह्रींकार बीजोंको स्थापितकर पिशाचिका नाम यंत्रको लिखे । फिर गंध पुष्पादिकोंसे उक्त यंत्रका पूजनकर दहीके भीतर रखदे तो वह सेवक व्यक्ति निश्चय वशीभूत होगा । यह पिशाचिका नामक यंत्र सेवक व्यक्तिके वश्यका परम स्थान है इसको श्रीशंकरने स्वयं प्रकाशित किया है, अतः प्रत्येकको न देना चाहिये ।किन्तु अधिकारीकोही देना योग्य है,नहीं तो गुप्त रक्खे१-७

इति श्रीयन्त्रचिन्तामणौ महाकल्पे प्रत्यक्षसिद्धिप्रदे उमामहेश्वरसम्वादे तृतीयपीठिकायां बलदेवप्रसादमिश्रकृतभाषाटीकायां भृत्यवश्यकरे पिशाचिसंज्ञं चतुर्दशं यंत्रम् ॥ १४ ॥

श्रीशिवजी बोले-हे शैलसुते ! यदि दुष्ट पुरुषोंसे युक्त क्रूरप्रकृति स्वामी मनुष्योंके यथायोग्य सेवन करनेपरभी अपने दुराग्रह भावको न छोडे, तब उसके मोहनके लिये गोरोचनसे भोजपत्रके ऊपर तीन रेखासे मिश्रित चतुष्कोण कालानल यंत्रको लिखकर ह्रीं बीजकी रेखाके भीतर साध्यव्यक्तिके नामके अक्षर लिख अंतमें ईं इस बीजको लिखे । परन्तु जितने साध्यव्यक्तिके

राजिकाप्रतिमां कुर्यात्तत्पादस्य च पांसुना ॥ ५ ॥ हृन्मध्ये प्रक्षिपेत्तस्य यन्त्रं कालानलं महत् । संपूज्य प्रतिमां तां तु चुल्लीपार्श्वे निखन्य च ॥६॥ पूरयेत्तां प्रयत्नेन चतुर्दश्यां महानिशि ॥ एतत्करणमात्रेण स वश्यो जायते ध्रुवम् ॥७॥ अजारक्तेन संमिश्रं भक्तं पूपं तथैव च । बलिदानं प्रदातव्यं दिक्पालप्रीतये तदा ॥ ८ ॥ महाकालाय स्वाहेति मन्त्रेण जुहुयात्ततः । एवं क्रमेण संस्कृत्य तत्त अष्टोत्तरं शतम् ॥ ९ ॥ तदेव भक्तं साज्यं तु रक्तपुष्पैश्च मिश्रितम् । यन्त्रं कालानलं नाम त्रिदशैरपि पूजितम् ॥ १० ॥

इति श्रीयंत्रचिन्तामणौ कालानलं नाम पञ्चदशं यंत्रम् ॥ १५ ॥

श्रीशिव उवाच॥ वाणिज्यार्थं तु वाणिज्यं लाभार्थं वाञ्छितं पथि । तेषां मध्ये यदा कोऽपि प्रदुष्टो जायते नरः ॥ १ ॥ मार्गदेशे प्रभुर्वापि तदा यन्त्रं प्रकल्पयेत् । ह्रींकारोदरमध्ये तु साध्यनाम लिखेन्नरः ॥ २ ॥ उपरिष्टाच्चतुर्दिक्षु स्वाहान्ते

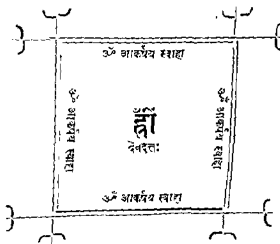
—नामके अक्षर हों उतनेही ह्रीं वर्णके होने चाहिये, अर्थात् ह्रीं बीजोंकी कोई मुख्य गणना इस प्रसंगमें नहीं है, इसका उदाहरण यंत्रमें देखना, तत्पश्चात् वृक्षके नीचेसे धूलि लाकर एक राजिका प्रतिमाको निर्माणकर उस प्रतिमाके हृदय भागमें उक्तकालानल यंत्रको स्थापितकर गंधादिकोंसे पूजन करके कृष्णपक्षकी रात्रिमें चूल्हेकी करवटमें खोदकर उक्त प्रतिमाको मन्त्रसहित गाड़दे, फिर बकरेके रुधिरसे मिले भातस दिक्पालोंकी प्रसन्नताके लिये बलिदानकरके उक्त पदार्थमें घी लाल फूल औ महाकालायेति मंत्रसे अष्टोत्तरशत जपकरे तो इस देवताओंके पूजित कालानलके प्रयोगसे साध्यमनुष्य निश्चय वशीभूत होजायगा॥१–१०॥

इति भाषाटीकासहित यंत्रचिन्तामणिकी तृतीयपीठिकामें कालानल-नामवाला पंद्रहवां यंत्र ॥ १५ ॥

श्रीशिवजी बोले–यदि वाणिज्य व्यवहारके करनेवाले पुरुषोंको वाणिज्य मार्गमें प्रभु अथवा अन्य कोई व्यक्ति दुःखदाई हो तो उनके वशके लिये स्वरक गोरोचनसे भोजपत्रके ऊपर दो रेखावाले चतुष्कोण यंत्रको लिखकर भीतरके भागमें ह्रीं बीजरेखाके मध्यमें साध्यव्यक्तिके नामाक्षरोंको निर्माणकर

प्रणवादिकम् । मध्ये आकर्षय लिखेच्चतुर्दिक्षु क्रमेण तु ॥ ३ ॥ पश्चात्तद्वेष्टयेद्यन्त्रं चतुष्कोणं द्विरेखया । कोणे कोणे त्रिशूलौ द्वौ चतुर्दिक्षु प्रकल्पयेत ॥ ४ ॥ एवं कृत्वा प्रयत्नेन पूजयित्वा

उच्छिष्टपिशाचयन्त्रम् ।



सुगन्धकैः । स्वरक्तेन तु संमिश्रं रोचनाभूर्जपत्रके ॥ ५ ॥ लिखित्वा खण्डवत्कृत्वा रहसि प्रक्षिपेत्ततः । ओमाकर्षय स्वाहा इमं मन्त्रं जपेत्तदा ॥ ६ ॥ तत्क्षणाज्जायते वश्यो महाक्रूरोऽपि मानवः ॥ ७ ॥

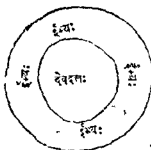
इति प० चि० ना० म० प्र० उ० सं०तृ० पी० व० दामोदरपण्डितोक्ते दुष्टवशीकरणं उच्छिष्टपिशाचिकं नाम षोडशं यन्त्रम् ॥ १६ ॥

–पूर्वादि चारों दिशाओंमें ओं आकर्षय स्वाहा इसको यंत्रके भीतरही लिखे कि, जिससे साधकके नामके अक्षर मध्यगत हो जाँय, परन्तु यंत्रके चारों कोनोंमें दो त्रिशूल भी लिखने योग्य हैं । फिर गंधादिकोंसे पूजन ओं आकर्षय स्वाहा, इस मंत्रको पढकर यंत्रके टुकडेकर उक्त मार्गमें डालदे तो अति क्रूर प्रकृतिवाला मनुष्यभी उसी समय वशीभूत हो जायगा ॥ १–७ ॥

इति भाषाटीकासहित यंत्रचिन्तामणिके तृतीयपीठि नामें उच्छिष्टपिशाचिनात्मक सोलहवां यन्त्र ॥ १६ ॥

श्रीशिव उवाच॥ यदा महाबलः शत्रोर्घातं कर्तुं हि वाञ्छति। तदा तत्सानुकूल्यार्थं यन्त्रं कुर्वीत कण्टकम् ॥ १ ॥ साध्यनाम लिखेन्मध्ये वर्तुलं वेष्टयेत्ततः । ईकारश्च भ्यकारश्च विसर्गान्तश्चतुर्दिशम् ॥ २ ॥ एकैकं तु लिखित्वा तु वर्तुलं वेष्टयेत्ततः । श्मशानभस्मना लेख्यमर्कपत्रद्वयोपरि ॥ ३ ॥ संपुटं मेलयित्वा तु वेधयेत्कण्टकैस्ततः । निखन्य पूरयेद्यन्त्रं श्मशाने निशि पूजितम् ॥ ४ ॥ बलिदानं प्रदातव्यं भूतेऽह्नि भयतो नरः । तत्क्षणाज्जायते शत्रुः सानुकूलो न संशयः ॥ ५ ॥ कण्टकाख्यं महायन्त्रं दुष्टमोहनकं परम् । स्वशक्त्या दक्षिणां दद्यात्कालरात्रिः प्रीयतामिति ॥ ६ ॥

दुष्टमोहनकरं कण्टकयंत्रम् ।



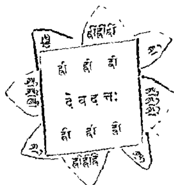
इति महाशत्रुसानुकूल्यकरं कण्टकाख्यं नाम सप्तदशं यन्त्रम् ॥ १७ ॥

श्रीशिवजी बोले—जब कि, अतिबलवान् शत्रु घात करनेकी इच्छा करता हो तो उसको अनुकूल करनेके वास्ते श्मशानकी भस्म लाकर दो आकके पत्तोंपर पृथक् २ एक गोलाकार चक्र खैंचकर उसके भीतर साध्य व्यक्तिके नामके अक्षर लिख "ईभ्यः" विसर्ग मिश्रित इन दो बीजोंको पूर्वादि चारों दिशाओंमें लिखकर फिर एक गोलाकार चक्र और खैंचे कि जिसके खैंचनेसे उक्तचक्र मध्यवर्ती होजाय, तत्पश्चात् दोनों पत्रोंको संपुटमें लेकर काँटोंसे छेदकर कृष्णपक्षकी रात्रिमें पूजन करके श्मशानभूमिमें खोदकर गाड़दे और भूतादि बलिप्रदान करे तो शत्रु उसी समय वशीभूत होजायगा, यह दुष्टमोहनकालकंटक नाम यंत्र है, इसका यथायोग प्रयोगकर " हे कालरात्रि ! प्रसन्न हो " इसको उच्चारण कर ब्राह्मणोंको दक्षिणा दे ॥ १–६ ॥

इति मंत्रचिन्ता० तीसरी पाठि० बल० भाषाटीकायां कण्टकाख्य-नामवाला दुष्टमोहनयन्त्र ॥ १७ ॥

कोणेकोणे दले न्यस्य ह्रींकारं तु विचक्षणः । रोचना-कुंकुमेनैव मृगनाभिस्तु चन्दनम् ॥ ५ ॥ एकीकृत्य लिखेद्यन्त्रं भूर्जपत्रे सुविस्तृते । त्रयोदश्यां सिते पक्षे साधकश्चोत्तरामुखः ॥ ६ ॥ तद्यन्त्रं पूजयेन्नित्यं रात्रौ रात्रौ वरानने । भोगैर्नाना-

स्त्रीसौभाग्यकरं ललितायंत्रम् ।



विधैः पुष्पैर्वस्त्रालंकारभूषणैः ॥ ७ ॥ एवं सप्तदिनं कृत्वा तदन्ते तव तुष्टये । स्त्रियः सौभाग्यसंयुक्ता भोजयेत् सप्त-संख्यया ॥ ८ ॥ शंकरस्य प्रिये देवि ललिते प्रीयतामिति ॥ रूपं देहि यशो देहि सौभाग्यं देहि मे श्रियम् ॥ ९ ॥ भगवति वाञ्छितं देहि प्रियमायुष्यव-र्धनम् । एवं मन्त्रं समुच्चार्य ततश्चार्यं विसर्जयेत ॥ १० ॥ तद्यन्त्रं धातुनावेष्ट्य सदा कण्ठे तु धारयेत् । सुभगा रूपसंपन्ना पतिप्रियतमा भवेत् । ललिताख्यं महामन्त्रं स्त्रीणां सौभाग्य-कारकम् ॥ ११ ॥ इति श्रीय० स्त्रीणां सौभाग्यकरं ललिताख्यमेकोनविंशं यन्त्रम् १९

—ह्रीं बीज लिखकर उक्त दलोंमें एक एक ह्रीं वर्ण लिखकर कृष्णपक्षकी त्रयो-दशीके दिन रात्रिके समयमें उत्तरकी ओरको मुखकरके सात रात्रितक नियम पूर्वक नानाप्रकारके भोग तथा गंधादिकोंसे तुम्हारी प्रसन्नताके कारण यन्त्रराजका पूजनकर सौभाग्यवती सात स्त्रियोंको भोजन करावे । तत्पश्चात् वक्ष्यमाण मंत्रको उच्चारणकर विसर्जन करै । मंत्रो यथा—शंकरस्य प्रिये देवि ललिते प्रीयतामिति । रूपं देहि यशो देहि सौभाग्यं देहि मे श्रियम् । भगवति वाञ्छितं देहि प्रियमायुष्यवर्धनम् ॥ फिर मंत्रको धातुके बने तावीजमें बन्द करके जो स्त्री कंठमें धारण करेगी तो वह यन्त्रराजके स्थित रहनेतक सौभाग्य तथा रूपादिसे युक्त प्रीतमको अत्यन्त प्यारी होगी । यह ललिता-ख्ययंत्र स्त्रियोंको अधिक सौभाग्यका देनेवाला है ॥ १-११ ॥

इति यंत्र० ललितानाम सौभाग्यदायक उन्नीसवां यन्त्र ॥ १९ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ शृणु देवि प्रसन्नेन यन्त्रं भर्तृप्रसादनम्। संलिख्याथ प्रियं नाम सांकारपुटितं शुभम् ॥ १ ॥ अधोपरि तथा लेख्यं सांकारद्वितयं शुभम्। ततस्तद्वेष्टयेत्सम्यक् वर्तुलं रेखयैकया ॥ २ ॥ तस्योपरि दलान्यष्टौ ह्रींकारसहितांल्लिखेत्। रोचनाकुङ्कुमेनैव भूर्जपत्रे लिखेन्नरः ॥ ३ ॥ त्रिदिनं पूजयेन्नित्यं रात्रौ रात्रौ तु पूर्ववत्। ततः स्नात्वा चतुर्थेऽह्नि पूजयेत्सुभगात्रयम् ॥ ४ ॥ अनङ्गवल्लभे देवि त्वं च मे प्रीयतामिति।

स्त्रीसौभाग्यकरं यन्त्रम्।

एवं प्रियं महावश्यं कुरु त्वं स्मरवल्लभे ॥ ५ ॥ एतन्मन्त्रं समुच्चार्य पूजयित्वा तु ताः स्त्रियः। तद्यन्त्रं धातुनाऽऽवेष्टय कृत्वा कण्ठे प्रधारयेत ॥ ६ ॥ पतिर्दासो भवेत्तस्या यन्त्रराजप्रसादतः। सौभाग्यमतुलं तस्या जायते नात्र संशयः ॥ ७ ॥ न सपत्नीं गणयति सौभाग्यमदर्पिताम्। एका सुवासिनी भोज्या चतुर्दश्यां सितेतरे ॥ ८ ॥ पक्षे पक्षे रतिप्रीत्यै पूज्यं यन्त्रं तु नित्यशः। यासां तासां न दातव्यं यन्त्रं सौभाग्यवर्धनम् ॥ ९ ॥

इति यं० स्त्रीणां सौभाग्यकर विंशतितमं यन्त्रम् ॥ २० ॥

श्रीशिवजी बोले-हे देवि! प्रसन्न मन होकर पतिवश्यकारक यंत्रको सुनो। गोलाकार एक चक्रको गोरोचनसे भोजपत्रके ऊपर खेंचकर अष्टदलसे वेष्टितकर उक्त गोलाकार यंत्रके भीतर पूर्वादि चारों भागोंमें सांबीजको लिखकर अनुस्वार युक्त साध्यव्यक्तिके नामके अक्षरोंको लिखे और उक्त आठ दलोंमें ह्रीं बीजोंको लिख. तीन रात्रितक यंत्रका गंधादिकोंसे पूजनकर चौथे दिन विधानपूर्वक सौभाग्यवती ३ स्त्रियोंको पूजितकर वक्ष्यमाण मंत्रका उच्चारण करे। मंत्र यथा-"अनङ्गवल्लभे देवि त्वं च मे प्रीयतामिति। एवं प्रियं महावश्यं कुरु त्वं स्मरवल्लभे ॥" इस प्रकारसे यंत्रका पूजनकर धातुवेष्टित कर कंठमें धारण करे तो पति दासकी समान होजायगा और यंत्रराजके प्रतापसे उसका

श्रीशिव उवाच ॥ योषिद्वश्यं प्रवक्ष्यामि शृणु देवि सुशोभनम् । रोचनाकुङ्कुमेनैव श्रीखण्डमृगनाभिना ॥ १ ॥ भूर्जपत्रे तु संलेख्यं जातीकाष्ठेन यन्त्रकम् । ऐं ह्रीं क्लीं च ततो नाम ऐं ह्रीं क्लीं च पुनस्तथा ॥ २ ॥ एवं संपुटितं कृत्वा चतुष्कोणं तु वेष्टयेत् । उपर्यधोऽपि विलिखेत्पश्च बीजानि यत्नतः ॥ ३ ॥ ऐं ह्रीं क्लीं च तथा क्षीं च ऐं चान्ते च पुनस्तथा । कोणेषु विन्यसेद्बीजान् ऐं ह्रीं क्लीं च तथैव च ॥ ४ ॥ दलाकृतिस्तु कर्तव्या बीजानामुपरि क्रमात् । एवं चतुर्दलं कृत्वा बीजयुक्तं मनोहरम् ॥ ५ ॥ राजिकां प्रतिमां कृत्वा मदनस्य तु कार्मुके । तस्या हृदि तु संस्थाप्य तद्यन्त्रं पूजयेत्ततः ॥ ६ ॥ भोगैश्च विविधैर्गन्धैर्धूपदीपैः फलैः शुभैः । रात्रौ रात्रौ प्रकर्तव्या दिनान्ते प्रत्यहं शुभे ॥ ७ ॥ एवं कृते च

—प्रताप अतुल होगा। इत्यादि उपरोक्त क्रियाओंके करनेपर भी पति सौभाग्यमदसे दर्पित स्त्रीको कुछ न समझे तो शुक्लपक्षकी प्रति चतुर्दशीमें रतिकी प्रीतिके लिये एक सौभाग्यवती स्त्रीको भोजन कराकर पुनः यंत्रराजका पूजन करे, यह सौभाग्यवर्द्धकयंत्र विना अधिकारीके और किसीको न देवे ॥१-९॥

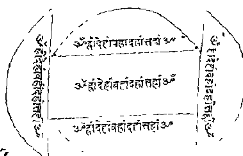
इति यंत्रचिन्तामणिकी पं० बलदेवप्रसादमिश्रकृतभाषाटीकायुत तीसरी पीठिकामें स्त्रीसौभाग्यकारक नामवाला

उन्नीसवाँ यंत्र ॥ २० ॥

श्रीशिवजी बोले–हे देवि ! स्त्रीवश्यकारक अतिश्रेष्ठ यंत्रको कहताहूँ श्रवण करो । गोरोचन, कुंकुम, लालचंदन, कस्तूरी इन सब वस्तुओंको इकट्ठाकर भोजपत्रपर चमेलीकी कलमसे एक अंगुलके अंतरमें कर्णिका युक्त दो रेखाओंके ऊपर नीचे दो आकार कल्पना करे। फिर कर्णिकाओंमें ऐं, ह्रीं, क्लीं, इन बीजोंको पूर्णकर उक्त दोनों दलाकारोंमें ऐं, ह्रीं, क्लीं, क्षीं, ऐं इन बीजोंको लिखकर रेखाओंके भीतर ऐं, ह्रीं, क्लीं, इन बीजोंको आदि अंतमें लगाकर अनुस्वारयुक्त साध्यव्यक्तिके नामको लिखे। तत्पश्चात् कार्मुकके ऊपर (राजिका) राईसे कामदेवकी प्रतिमाको निर्माणकर उक्त यंत्रको हृदय भागमें स्थापितकर गंध, पुष्प, धूप, दीप, फल, नैवेद्य इत्यादि शुभ वस्तुओंसे सायंकालके समय सिद्धिपर्यन्त प्रत्येक रात्रिमें वक्ष्यमाण मंत्रको उच्चारणकर कामदेवका पूजन करे ।

श्रीशिव उवाच ॥ शृणु देवि प्रवक्ष्यामि, मानिनीमानमर्दनम् । यन्त्रं सुदुर्लभं लोके विख्यातं मानमर्दनम् ॥ १ ॥ तुरगस्य तु रक्तेन रोचना भूर्जपत्रके।प्रणवं च ततो ह्रीं च साध्यनामाक्षरं पृथक् ॥ २ ॥ नामाक्षराणि ह्रींकारपुटितानि विचक्षणः । आद्यन्ते प्रणवं लेख्यमेकपंक्तौ विचक्षणैः ॥ ३ ॥ ततस्तद्वेष्टयेत्सम्यक् चतुष्कोणं तु रेखया । उपर्यधश्च संलेख्यं पूर्ववद्बीजसंपुटम् ॥ ४ ॥ तिर्यग्भागे द्विभागे तु पूर्ववन्नामसम्पुटम् । कोणे दलाकृतिं कुर्यान्मदनाकृतिमध्यतः ॥ ५ ॥

स्त्रीवश्यकर मदनमर्दनयन्त्रम् ।



एवं यन्त्रं सुसंलेख्यं मदनप्रतिमां शुभाम् । मदनस्य तु काष्ठेन कृत्वा हृदि विनिक्षिपेत ॥ ६ ॥ सरन्ध्रं हृदयं कुर्याद्यथा यन्त्रं सुतिष्ठति । संवेष्ट्य प्रक्षिपेन्नूनं यन्त्रं तस्योपरि स्फुटम ॥ ७ ॥

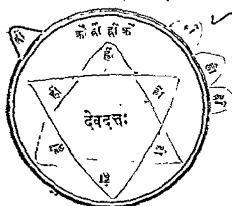
श्रीशिवजी बोले–हे देवि ! सुदुर्लभ लोकप्रसिद्ध मानिनी स्त्रियोंके मान मर्दन करनेवाले यन्त्रको कहता हूं,सुनो घोडेके रुधिरमें भोजपत्रके ऊपर मदनकाष्ठकी कलमसे एक अंगुलके अंतरसे दो तिरछी रेखा खींचकर उनके आदि अंतमें कमलदल आकार लगाकर उक्त रेखाओंके ऊपर नीचेके दोनों भागोंमें कुछएक गोलाई युक्त दो रेखा खींचे । फिर "ॐ ह्रीं देह्रीं वह्रीं दह्रीं सह्रीं ॐ" इन ग्यारह बीजोंको प्रत्येक कोष्ठमें स्थापितकर यन्त्रको पूर्ण करै । तत्पश्चात मदनकाष्ठसे एक कामदेवकी प्रतिमाको निर्माण करै कि,जिसके हृदयमें ऐसा एक छिद्र हो कि, जिसमें उक्तयन्त्र सुभीतेके साथ प्रविष्ट होसके,फिर लालचंदन माला

रक्तचन्दनमाल्याद्यैः पूजयेत्प्रत्यहं तु तत्। एकविंशद्दिनं यावत्सा तस्य वशतामियात् ॥ ८ ॥

इति यं० चि० स्त्रीवशीकरं मदनमर्दनं नाम द्वाविंशं यन्त्रम् ॥ २२ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ अतः परं प्रवक्ष्यामि राजस्त्रीवश्यकारकम्। यथा तद्दृष्टिपातेन कामबाणहता इव ॥ १ ॥ पतन्ति

कामाक्ष यन्त्रम्।



सहसा दृष्ट्वा मानिन्यो मदविह्वलाः। रोचनाकुङ्कुमेनैव भूर्जपत्रे लिखेन्नरः ॥ २ ॥ कर्पूरेण समायुक्तं जातीकाष्ठेन यत्नतः। षट्कोणस्य तु मध्ये तु साध्यनामप्रतिष्ठितम् ॥ ३ ॥ क्रोंकारं सर्वतो लेख्यं कोणोपरि प्रयत्नतः। पूर्वकोणान्तराले तु ह्रीङ्काराद्वितयं लिखेत् ॥ ४ ॥ कोणमध्ये लिखेच्चैकं ह्रींकारं पूर्वसं-

---

आदिवस्तुओंसे पूजनकर यंत्रेश्वरको उक्तप्रतिमाके हृदयमें स्थापितकर इक्कीस दिनतक पूजन करे तो साध्यव्यक्ति वशमें होजायगी ॥ १–८ ॥

इति यंत्रचिन्तामणिकी तीसरी पीठिकामें स्त्रीवशीकरण मदनमर्दन नामवाला बाईसवां यंत्र ॥ २२ ॥

श्रीशिवजी बोले–अब राजस्त्रीवश्यकारक यंत्रको कहता हूं कि, जिसके दर्शनमात्रसे कामबाणसे हतकी समान मानिनी स्त्रियें देखकर मदसे व्याकुल हो पतित होंगी। विधान यथा–गोरोचन, कुंकुम, कपूर इन वस्तुओंको एकत्रित करके भोजपत्रके ऊपर चमेलीकी कलमसे एक षट्कोण यंत्रको निर्माणकर उसके बहिर्भागमें एक गोलाकार चक्र खेंचै और दक्षिणभागमें तीन और ईशानभागमें एक दल लिखकर उक्त षट्कोणके भीतर साध्यव्यक्तिके नामके

मितम् । तत्सर्वं वेष्टयेत्पश्चाद्वर्तुलं रेखया शुभम् ॥ ५ ॥ दक्षिणे त्रिदलं कुर्यादीशान्येऽपि दलं तथा । क्लींकारं दलमध्ये तु क्रमेण प्रविलेखयेत् ॥ ६ ॥ एवं विलिख्य तद्यन्त्रं पूजयेद्-भक्तिभावतः । गन्धपुष्पैः सुनैवेद्यैः शुक्लाम्बरधरः स्वयम् ॥ ७ ॥ चिन्तयेत्तां स्त्रियं रात्रौ यन्त्रस्य पुरतः स्थितः । एवं सप्तदिनं कृत्वा तदन्ते ब्राह्मणाः स्त्रियः ॥ ८ ॥ संभोज्या विविधैर्भोज्यैः कामाक्षी प्रीयतामिति । शक्त्या च दक्षिणां दद्याद्भोजयेत्साधकः स्त्रियम् ॥ ९ ॥ त्रिलोहवेष्टितं कृत्वा बाहुमूले तु धारयेत् । तं दृष्ट्वा राजपत्न्यश्च कन्दर्पज्वरपीडिताः । स्वयं संप्रार्थयेन्नित्यं का कथेतरयोषिताम् ॥ १० ॥

इति य० चि० राजस्त्रीवश्यकर कामाक्षं नाम त्रयोविंशं यन्त्रम् ॥२३॥

अक्षर लिख प्रत्येक कोणमें ह्रींबीजको लिखे । तत्पश्चात् पूर्वकोणमें क्रोंबीजको लिख दो ह्रीं बीजोंको लिखै और पाँचों कोणोंमें सिर्फ एक एक क्रों बीजको लिख उक्तदलोंमें एक एक ह्रीं बीज लिखे । पुनः भक्तिभावसे गंध पुष्प नैवेद्यादि पदार्थोंसे यंत्रका पूजन कर श्वेतवस्त्रको धारण कर उक्त यंत्रको सम्मुख रखकर रात्रिके समय साध्यस्त्रीका चिन्तवन करै. इस प्रकार सात दिनतक पूजनादि क्रियाओंको करके शक्तिके अनुसार ब्राह्मणोंकी स्त्रियोंको विविध-प्रकारके भोज्य पदार्थोंसे भोजन कराकर यथाशक्ति दक्षिणा देकर कहै कि ''कामाक्षी प्रीयताम्'' फिर त्रिलोहके तावीजमें बंदकरके भुजामें धारण करनेवाले साधकको देखकर कामज्वरसे पीडितहुई राजस्त्रियां स्वयं प्रार्थना करैंगी, अन्यस्त्रियोंकी तो बातही क्या है ॥ १-१० ॥

इति यन्त्रचिन्तामणिकी तीसरी पीठिकामें राजस्त्रीवश्यकारक कामाक्षनामक तेईसवां यंत्र ॥ २३ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ अतः परं प्रवक्ष्यामि बीजमेकं महाफलम् सततं धारयेन्नित्यं स्त्रीणां प्रियतरो भवेत् ॥ १ ॥ स्त्री चेद्धारयते नित्यं सा सौभाग्यवती भवेत् । सौभाग्यजननं बीजं नृणां चैव विशेषतः ॥ २ ॥ एतद्बीजाक्षरं गोप्यं न देयं यस्य कस्यचित् । सकारं च हकारं च ककारं च तथैव च॥३॥ लकारं च डकारं च ईकारान्तं प्रतिष्ठितम् । एवं क्रमेण संयोज्य अक्षराणां च षट्ककम् ॥ ४ ॥ ईकारस्वरसंयुक्तं बिन्दुना परिशोभितम् । रोचनानीरयुक्तेन भूर्जपत्रे लिखेन्नरः ॥ ५ ॥ त्रिदिनं पूजनं कृत्वा हेम्ना वै वेष्टयेत्ततः । पुरुषो बाहुमूले वा नारी चेद्गलके पुनः ॥ ६ ॥ धारयेद्बीजराजं तु स्फुटं दौर्भाग्यनाशनम् । महासौभाग्यजननं श्रीशिवेन प्रतिष्ठितम् ॥ ७ ॥

विजययन्त्रम् ।

स्ह्रीं
क
ल
ड
ई

इति यन्त्रचि० ना० म० प्र० उ० तृ० व० दा० सौभाग्यजननविजयं नाम चतुर्विंश यन्त्रम् ॥ २४ ॥

श्रीशिवजी बोले—हे प्रिये ! अत्यन्त फलदायक एक बीजको कहता हूँ कि, जिसके नित्य प्रति धारण करनेसे साधक स्त्रियोंको अत्यन्त प्यारा होगा। विधान यथा—जलमिश्रित गोरोचनसे भोजपत्रके ऊपर तीन रेखा युक्त एक अर्द्ध चन्द्राकार लिखकर, सकार, हकार, ककार, लकार, डकार, ईकार इन छः अक्षरोंको ईकारमें गर्भितकर उक्त अर्द्ध चन्द्राकारके बीचमें स्थापित करे। तत्पश्चात् गन्ध पुष्पादिकोंसे पूजनकर सुवर्णमें लपेटकर पुरुष भुजामें और स्त्री गलेमें धारण करे। मनुष्योंको यह सौभाग्यका देनेवाला अत्यन्त पवित्र बीजराज गुप्त भावसे रखना चाहिये किन्तु हरेकको न देना चाहिये, क्योंकि, उक्त यन्त्रराज शिव प्रतिष्ठित होनेसे शीघ्र दौर्भाग्यनाशक और सौभाग्यजनक भावको धारण करनेवाला है ॥ १–७ ॥

इति यन्त्रचिन्तामणिकी तीसरी पीठिकामें सौभाग्यजननविजय नामवाला चौवीसवाँ यन्त्र ॥ २४ ॥

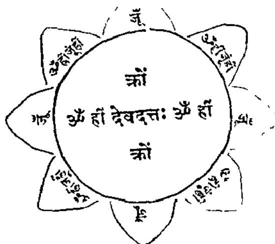
श्रीशिव उवाच ॥ अतः परं प्रवक्ष्यामि यन्त्रं सौभाग्यदायकम् । स्त्रीणामेव समुद्दिष्टं यन्त्रं कमलसंज्ञकम् ॥ १ ॥ तस्य संधारणाद्देवि वन्ध्या गर्भवती भवेत । मृतवत्सा तु या नारी सा लभेत्पुत्रमुत्तमम् ॥ २ ॥ धृत्वा तु जायते देवि जीवत्पुत्रा न संशयः । रोचनाकुंकुमेनैव भूर्जपत्रे लिखेन्नरः ॥ ३ ॥ प्रणवं तु लिखेत्पूर्वं ह्रींकारस्तदनन्तरम् । ततो रमणनामं च ह्रींकारान्तं प्रतिष्ठितम् ॥ ४ ॥ उपर्यधोऽपि विलिखेत्क्रोंकारमेककं तथा । ततस्तद्वेष्टयेत्सर्वं वर्तुलं रेखयैकया ॥ ५ ॥ तस्योपरि दलान्यष्टौ बीजाक्षरयुतानि च । जूँकारं च चतुर्दिक्षु दलमध्ये तु विन्यसेत् ॥ ६ ॥ ॐकारं च तथा ह्रीं च जूँकारं च तथैव च । ह्रींकारं च पुनर्लेख्यमेवं बीजचतुष्टयम् ॥ ७ ॥ कोणे कोणे दले लेख्यं मध्यदेशे तु साधकः । एवं यन्त्रं सुसंलेख्यं पूजयेत्तु दिनत्रयम् ॥ ८ ॥ भोजयेन्मिथुनं चैकं लोकेशः प्रीयतामिति । पश्चात्तं तन्तुनाऽऽवेष्ट्य त्रिलोहेन विशेषतः॥ ९ ॥ वर्तुलं माणिवत्कृत्वा हारमध्ये तु धारयेत् । धारणाज्जायते देवि सौभाग्यमतुलं महत् ॥ १० ॥ पुत्रं च लभते नूनं वन्ध्यात्वं च प्रशा-

---

श्रीशिवजी बोले-अब सौभाग्यके देनेवाले यन्त्रको कहता हूं, कमल संज्ञक यन्त्रका स्त्रियोंके लिये प्रयोग करना योग्य है । विधान यथा-गोरोचनसे भोजपत्रके ऊपर एक गोलाकार चक्र खैंचकर बहिर्भाग अष्टदलोंसे सुशोभित कर उक्त गोलाकारके भीतर तीन रेखा कल्पनाकर ऊपर नीचेकी रेखाओंमें ओं ह्रीं इन दो बीजोंको आदिमें मिश्रितकर साध्यव्यक्ति अर्थात् पतिके नामके अक्षर लिख फिर अन्तमें सिर्फ ह्रीं बीजको लगावै । फिर पूर्वादि चारों जूँबीजको लिखकर ओं ह्रीं, जूँ ह्रीं इन चार बीजोंको ईशानादि चारों कोनोंमें स्थापित करै । तत्पश्चात् गन्ध, पुष्प, ताम्बूल, नैवेद्यादि पदार्थोंसे तीन दिनतक पूजनकर, 'हे लोकेश ! प्रीयताम्' इस वाक्यको उच्चारणकर एक स्त्री-पुरुषको भोजन करावै । फिर कच्चेडोरेसे लपेटकर उक्त यंत्रेश्वरको त्रिलोहमें बन्दकर धारण करै तो हे देवि ! अतुल अतिश्रेष्ठ सौभाग्य प्राप्त होगा । इसका और यह भी प्रताप है कि, इसके धारण करनेसे वन्ध्या स्त्री भी गर्भवती होकर

स्याति। कमलाख्यं महायन्त्रं सृष्टं तु ब्रह्मणा पुरा। न देयं यस्य कस्यापि साधकेन वरानने ॥ ११ ॥

कमलाख्ययन्त्रम् ।



इति श्रीयं० सौभाग्यजननं कमलाख्य नाम पञ्चविंश यन्त्रम् ॥ २५ ॥

स्वप्नेन संप्राप्य सदाशिवाच्च दामोदरोऽत्रारचयच्च कल्पम्॥ तस्मिन्महाकल्पवरे सुसत्ये गतः समाप्तिं प्रथमोऽधिकारः ॥१॥

—उत्तम पुत्रको प्राप्त कर वंध्याभावसे रहितहो मृतवत्सा उत्तम पुत्रको प्राप्त हो जीवित पुत्रवाली होगी, इसमें किंचित् भी संदेह नहीं। अथवा, हारमें मिलाकर धारण करे तोभी उक्त फल प्राप्त होसकता है, इस कमलाख्य महायंत्रको श्रीब्रह्माजीने कल्पित किया है। अतः साधकको उचित है कि अधिकारी सिवाय और किसीको न दे ॥ १–११ ॥

इति श्रीयंत्र चिन्तामणिकी तीसरी पीठिकामें सौभाग्य-
जनन नामवाला पचीसवाँ यन्त्र ॥ २५ ॥

स्वप्नावस्थामें शिवजीसे प्राप्त कर दामोदर पण्डितके बनाये श्रेष्ठकल्प सत्य यन्त्रचिन्तामणिकल्पका प्रथम अधिकार समाप्त हुआ ॥ १ ॥

सद्यन्त्रचिन्तामणिसर्वसिद्धिदे श्रीचन्द्रचूडस्य मुखाद्विनिर्गते । तस्मिंस्तृतीयां किल पीठिकामिमां चकार दामोदरपण्डितः सुधीः ॥ २ ॥ वश्याभिधानं प्रथमाधिकारं शृणोति यो भक्तियुतो मनुष्यः । तस्याशु देवो भगवान्महेशो ददाति लक्ष्मीं विपुलां सुसिद्धिम् ॥ ३ ॥

इति श्रीयन्त्रचिन्तामणौ महाकल्पे प्रत्यक्षसिद्धिप्रदे उमामहेश्वरसंवादे दामोदरपण्डितोद्धृते तृतीयपीठिकायां वश्याधिकारः समाप्तः ॥

इति प्रथमोधिकार ॥

अथाकर्षणाधिकारः । २

जयति जगदशेषद्योतयद्दिव्यभासा विशदकिरणकान्तिः प्रस्फुरच्चन्द्रमौलिः । विषमविषमहाहिप्रोल्लसच्चारुहारः सततमासिततेजा ज्ञानमूर्तिर्महेशः ॥ १ ॥ चिन्तामणौ कल्पवरे चतुर्थी प्रारभ्यते संप्रति पीठिकेयम् । आकृष्टियन्त्राणि परिस्फुटानि विचारयाम्यत्र तु पीठिकायाम ॥ २ ॥

श्रीचन्द्रचूड शिवजीके मुखसे निकले सत् यन्त्रचिन्तामणिकल्पकी तीसरी पीठिकां पंडित प्रवर श्रीदामोदरजी इस भाँतिसे करते हुए ॥२॥ इस वश्याधिकारनाम तीसरे अधिकारको जो मनुष्य भक्तिपूर्वक सुनते हैं उनको श्रीशिवजी महाराज प्रसन्न होकर अधिक लक्ष्मी और सुसिद्धि देते हैं ॥ ३ ॥

इति श्रीयंत्रचिन्तामणौ महाकल्पे प्रत्यक्षसिद्धिप्रदे उमामहेश्वरसम्वादे दामोदर पंडितोद्धृते पं० बलदेवप्रसादजी मिश्रकृत भाषाटीका सहिततृतीयपीठिकायां वश्याधिकारः समाप्तः ।

समस्त संसारको अपनी दिव्य कान्तिसे प्रकाश करनेवाले, विषम विषको धारण करनेवाले, सर्पोंके प्रकाशमान मनोहर हारको धारे, मस्तकमें चन्द्रमाको धारण करनेवाले और निर्मल कान्तिसे शोभायमान होनेवाले तीक्ष्ण तेजको धारण करनेवाले ज्ञानकी मूर्त्तिवाले श्री श्रीशिवजी महाराजकी जय हो ॥१ ॥ अब चिन्तामणिकल्पकी चौथी पीठिका कही जाती है, इस पीठिकामें आकर्षणके यंत्रोंका स्फुट विचार करताहूं ॥ २ ॥

श्रीशिव उवाच-संलिख्य नामानि च भूर्जमध्ये गोरोचनाकुङ्कमचन्दनाभिः । सकारबीजास्तु विसर्गयुक्तास्तस्योपरिष्टाद्विलिखेत्तु पञ्च ॥ १ ॥ इकारमन्ते विनिवेश्य पश्चाद्विसर्गयुक्तौ विलिखेत्सकारौ । क्रौं ह्रीं तथा क्रौं च विलिख्य पंक्तौ वर्णस्य पङ्क्तिर्महता क्रमेण ॥ २ ॥ एवं द्विपङ्क्तौ तु विलिख्य पश्चान्नाम्नस्तथाऽधो विलिखेत्तु पङ्क्तिम् । ह्रीं क्रौं तथा ह्रीं च तथैव च क्रौं विलिख्य नाम्नस्तु अधोविभागे ॥ ३ ॥ ह्रीं क्रौं तथा ह्रीं च विलिख्य पङ्क्तौ तस्याप्यधो वै विलिखेच्च बीजे । दकाररेफौ तु विलिख्य पश्चात्संवेष्टयेत्रिः परिवर्तनेन ॥ ४ ॥ संपूज्य यन्त्रं विधिवच्च पश्चात्सूत्रेण संवेष्टय सुपाण्डुरेण । उद्वर्तनेन स्वशरीरजेन विधाय मूर्तिं मनुजस्य नूनम् ॥५॥ निधाय तस्या हृदि यन्त्रराजं पिधाय चोद्वर्तनकेन पश्चात् । संतापयेत्तं खदिरस्य वह्निना दिनत्रयं यन्त्रवरं त्रिसन्ध्यम् ॥६॥ ॐ देवदत्तं वेगेन आकर्षय २ माणिभद्रस्वाहा ॥ तापनमन्त्रोऽयम् ॥ एवं कृते कर्षति

मणिभद्रयंत्रम् ।

सः	सः	सः	सः	सः	इ
सः	सः	क्रौं	ह्रीं	क्रौं	
देवदत्तः					
ह्रीं	क्रौं	ह्रीं	क्रौं		
ह्रीं	क्रौं	ह्रीं	दर		

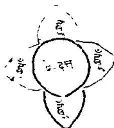
शिवजी बोले-हे कान्ते ! तीन रेखाओं युक्त एक चतुष्कोण यंत्रको गोरोचन, कुङ्कम, लालचंदनसे भोजपत्र पर लिखकर उक्त यत्रके भीतर पाँच रेखा कल्पनाकर प्रथम रेखामें पाँच विसर्गयुक्त सकार बीजोंको लिखकर अन्तमें इकार बीज लिखे । फिर दूसरी रेखामें सः सः क्रौं ह्रीं क्रौं इन पाँच बीजोंको लिखे, तीसरी रेखामें साध्य व्यक्तिके नामके अक्षर लिखे, चौथी रेखामें ह्रीं क्रौं ह्रीं क्रौं लिखे और पाँचवीं रेखामें ह्रीं क्रौं ह्रीं दर इन पांच बीजोंको लिख कर यंत्रकी पूर्ति करे । फिर विधान पूर्वक गंधादिकोंसे पूजन करके लाल-सूत्रसे बाँधे और अपने शरीरके उद्वर्तनसे मनुष्याकार मूर्तिको बनाकर उसके हृदयःभागमें यंत्रराजको रखकर उद्वर्तनसे आच्छादितकर त्रिसंध्यामें तीन दिनतक खदिरकी अग्निमें संतप्तकर इस मंत्रको पढे । मंत्र-ओं देवदत्तं वेगेन आकर्षय २ माणिभद्र स्वाहा । यह तापन मंत्र है । इस विधानके करनेसे

माणिभद्रो देशान्तरस्थं मनुजं च नूनम् । अत्यन्तदूरस्थमपि क्रमेण समानयेद्यन्त्रवरो हि नूनम् ॥ ७ ॥ संपूजयंस्तापनशोषणाद्य श्रीमाणिभद्रो भगवान् हि वीरः ॥ ८ ॥

इति यन्त्रचि० चतुर्थ० आकर्षणाधिकारे माणिभद्रं नाम प्रथमं यंत्रम् ॥ १ ॥

श्रीशिव उवाच॥अतः परं प्रवक्ष्यामि यन्त्रं मित्रस्य दर्शनम्। रक्तचन्दनमिश्रेण स्वरक्तेन च भूर्जके ॥ १ ॥ मध्ये नाम लिखित्वा तु वर्तुलं वेष्टयेत्ततः । चतुर्दलं ततः कुर्याद्बीजयुक्तं मनोहरम् ॥ २ ॥ हूँकारं दलमध्ये तु प्रत्येकं विलिखेत् क्रमात् । एवं यन्त्रं तु संलिख्य पूजयेद्गन्धपुष्पकैः ॥ ३ ॥ बलिपुष्पोपहारैश्च सुगन्धद्रव्यसंयुतैः । प्रक्षिपेद्घृतमध्ये तु आकृष्टिस्त्रिदिनाद्भवेत् ॥ ४ ॥ इदं यन्त्रं महागोप्यं रक्षणीयं प्रयत्नतः । कस्याप्यग्रे न वक्तव्यं यदीच्छेत सिद्धिमात्मनः ॥ ५ ॥

मित्रदर्शनयंत्रम् ।



इति श्रीयन्त्रचिन्तामणौ मित्रदर्शनं नाम द्वितीयं यन्त्रम् ॥ २ ॥

माणिभद्र देशांतरमें स्थित पुरुषोंको आकर्षित कर सकताहैं। वीर भगवान् श्रीमाणिभद्रजीनेभी तापन शोषणादि क्रियाओंसे श्रीयंत्रेश्वरका पूजनकियाहै १-८॥

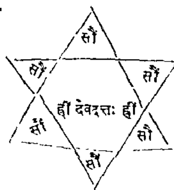
इति श्रीयंत्रचिन्तामणिकी चौथा पीठिकाके आकर्षण अधिकारमें माणिभद्रनाम प्रथमयंत्र ॥ १ ॥

श्रीशिवजी बोले-अब मित्रदर्शननाम यंत्रको कहता हूँ, विधान इस प्रकार है-लालचंदन, स्वरक्त इनको मिलाकर भोजपत्रके ऊपर एक गोलाकार चक्रको खैंचकर चार दलोंसे युक्त बीचमें साध्यव्यक्तिके सानुस्वार नामके अक्षर लिख कर उक्त दलोंमें हूँ बीजको लिखै । फिर गंध पुष्पवाले इत्यादि पदार्थोंसे पूजनकर घृतमें स्थापित कर दे तो तीन दिनमेंही आकर्षण होजायगा, इस यन्त्रकी बडे यत्नसे रक्षा करे अपनी सिद्धिकी इच्छा करनेवाला इस यंत्रको किसीको न दे और न किसीसे कहै ॥ १-५ ॥

इति यंत्रचिन्तामणिकी चौथीपीठिकाके आकर्षणाधिकारमें मित्रदर्शन नामवाला दूसरा यंत्र ॥ २ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि यन्त्रं त्रैपुरकं महत् । रोचनानीरयुक्तेन भूर्जपत्रे लिखेन्नरः ॥१॥ मध्ये नाम लिखित्वा तु ह्रींकारपुटितं शुभम् । षट्कोणं तु लिखेत्पश्चान्नामगर्भं मनोहरम् ॥ २ ॥ सौंकारान् विलिखेत् कोणे मध्यतो बिन्दुभूषितान् । एतद्यन्त्रं सुसम्पूज्य घृतमध्ये विनिक्षिपेत् ॥ ३ ॥ प्रत्यहं पूजयेन्नित्यं प्रार्थयेत् त्रिपुरान्ततः । आकर्षय महादेवि देवदत्तं मम प्रियम् ॥४॥ ऐं त्रिपुरे देवदेवेशि तुभ्यं दास्यामि याचितम् । अनेन प्रार्थयेद्देवीं त्रिपुरायन्त्रगां यजेत ॥ ५ ॥ एवं कृते सप्तमेऽह्नि आकृष्टिर्जायते शुभे॥६॥

त्रैपुराकाख्ययन्त्रम् ।



इति यन्त्रचिन्ता० त्रैपुरं नाम तृतीयं यन्त्रम् ॥ ३ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि मानिन्याकर्षणं शुभम् । रहस्यं सर्वयन्त्राणां तत्क्षणात् सिद्धिदायकम् ॥ १ ॥ न वाच्यं यस्य कस्यापि यन्त्रराजं सुदुष्करम् । दक्षिणानामि-

---

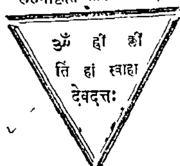
श्रीशिवजी बोले-अब त्रैपुरक यंत्रको कहता हूँ । जलमिश्रित गोरोचनसे भोजपत्रके ऊपर षट्कोण यंत्रको लिख प्रतिकोणमें सौं बीजको लिखकर मध्य भागमें ह्रीं देवदत्त ह्रीं इसप्रकार आदि अंतमें ह्रीं बीजलगाकर साध्यव्यक्तिके नामाक्षर लिख उक्त यंत्रका गंधादिकोंसे विधानपूर्वक पूजनकर घृतके मध्यमें स्थापित करै, प्रतिदिन त्रिपुरासे प्रार्थना करे । प्रार्थनामंत्रः-आकर्षय महादेवि देवदत्तं मम प्रियम् । ऐं त्रिपुरे देवदेवेशि तुभ्यं दास्यामि याचितम् ॥ हे शुभे! इस विधानके करनेसे सातवें दिन आकर्षण होगा ॥ १-६ ॥

इति श्रीयन्त्रचिन्तामणिकी चौथी पीठिकाके आकर्षणाधिकारमें त्रैपुरक नामवाला तीसरा यन्त्र ॥ ३ ॥

श्रीशिवजी बोले-मानिनी स्त्रीके आकर्षणको कहता हूँ। यह सम्पूर्ण यन्त्रोंका रहस्यभूत तत् क्षणमें सिद्धिका देनेवाला है । यह यन्त्रराज बडा दुष्कर है, विना अधिकारीके दूसरेसे कभी न कहै । दक्षिण अनामिका अंगुलीके रुधिरसे

रक्तेन वामे करतले लिखेत् ॥ २॥ प्रणवं च तथा ह्रीं क्लीं एकपंक्तौ लिखेन्नरः । तिं हां स्वाहेति त्रितयं तस्याधो विलिखेत् क्रमात् ॥३॥ तस्याप्यधो लिखेन्नाम रमण्याश्चैव सुव्रते।त्रिकोणं वेष्टयेत्पश्चाद्बीजानामुपरि प्रिये ॥ ४ ॥ एवं कृत्वा तु संपूज्य तत्रैव कुसुमैः शुभैः । याममात्रेण सा नारी समायाति न संशयः ॥ ५ ॥ यन्त्रं श्रीकामराजाख्यं देवानामपि दुर्लभम् ॥ ६ ॥

ललनाकृति कामराजयंत्रम् ।



इति यन्त्रचि० ललनाकृति श्रीकामराजाख्यं चतुर्थं यंत्रम् ॥ ४ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि यन्त्रं वै देवमातृकम् । कर्षणं नरनारीणां शृणु देवि महाफलम् ॥ १ ॥ लाक्षारसं हरिद्रा च मञ्जिष्ठं भूर्जपत्रके । लेखनीयं प्रयत्नेन एकान्ते यन्त्रमुत्तमम् ॥ २ ॥ मध्ये नाम लिखित्वा तु त्रिकोणं वेष्टयेत्ततः । तत्रापि वेष्टयेत्पश्चात् वर्तुलं यत्नतः प्रिये ॥ ३ ॥

वाम हाथकी हथेलीपर एक त्रिकोण यंत्रको लिखे और उस यंत्रके भीतर तीन लकीरें खैंचे, प्रथम लकीरमें ओं, ह्रीं, क्लीं इन तीन बीजोंको, दूसरी पंक्तिमें तिं हां स्वाहा इन चारवर्णोंको और तीसरी पंक्तिमें साध्यव्यक्तिके नामाक्षरोंको लिख गन्ध पुष्पादिकोंसे पूजन करै तो साध्यस्त्री एक पहरमात्रमें आकर्षित होगी अर्थात् स्वयं प्राप्त होगी इसमें किसी प्रकारका सन्देह नहीं है। यह श्रीकामराज यन्त्र देवताओंको भी दुर्लभ है ॥ १–६ ॥

इति श्रीयंत्रचिन्तामणिकी चौथी पीठिकाके आकर्षणाधिकारमें कामराज नामवाला चौथा यन्त्र ॥ ४ ॥

श्रीशिवजी बोले–हे देवि ! नर और नारियोंके आकर्षणकारक, महाफलदायक देवमातृक यन्त्रको कहता हूं सुनो–लाखका रस, हलदी, मंजीठ इन वस्तुओंको एकत्रित करके भोजपत्रके ऊपर त्रिकोणयुक्त एक गोलाकार चक्र खेंचकर फिर उसके चारों ओर एक अंगुलके अन्तरसे एक और गोलाकार चक्र-

देवमातृकं चक्रम्।



तस्योपरि स्वरा लेख्या अकाराद्यास्तु षोडश। ततस्तद्वेष्टयेत्सम्यग्रेखया नेत्रसंख्यया ॥ ४ ॥ तस्यैव पादधूल्याऽथ प्रकुर्याच्छालभञ्जिकाम्।तस्या योनौ तु संक्षिप्य यन्त्रराजं सुपूजितम् ॥ ५ ॥ एवंकृते तु कृष्टा सा समायाति न संशयः। बहुनाऽत्र किमुक्तेन पतिना सममानयेत्॥यन्त्रराजो महागोप्यो देवमातृकसंज्ञकः६

इति श्रीयन्त्रचिन्तामणौ मानिन्याकर्षणं देवमातृकं पञ्चमं यन्त्रम् ॥ ५ ॥

चिन्तामणौ कल्पवरे सुकल्पे श्रीचन्द्रचूडस्य मुखाद्विनिर्गते। तस्मिंश्चतुर्थीं किल पीठिकामिमां चकार दामोदरविप्रवर्यः॥ १ ॥ आकर्षणं नाम महाधिकारं पूर्णं द्वितीयं हि महाप्रभावम्। पञ्चैव यन्त्राणि महाप्रभावे रहस्यभूतानि तु कीर्तितानि ॥ २ ॥ इति यन्त्रचिन्तामणौ आकर्षणाधिकारः॥

खेंचकर फिर उसके धारे एक अंगुलके अन्तरसे एक और गोलाकार चक्रको दो रेखाओंसे युक्तकर खैंचे। फिर त्रिकोणके भीतर साध्यव्यक्तिके नामाक्षरोंको लिखकर अकारादि सोलह स्वरोंको दोनों गोलाकारोंके भीतर लिखे। पुनः उक्त साध्याव्यक्तिके चरणके नीचकी धूलि लाकर एक पुत्तलिका बनाकर उसके योनि(भग)में सुपूजित यंत्रराजको स्थापित करै।ऐसे करनेपर आकर्षित हो साध्यव्यक्तिको प्राप्त होगी,इसमें किसी प्रकारका सन्देह नहीं॥विशेष कहनेसे क्या है पतिसहित प्राप्त होगी। इस देवमातृकसंज्ञकयंत्रको अत्यन्त गुप्त रखना योग्य है ॥१–६॥ इति श्रीयंत्र०नरनारीआकर्षण०मातृसंज्ञक पाँचवां यंत्र॥५॥

श्रीशिवजी महाराजके मुखारविन्दसे निकले कल्पश्रेष्ठ चिन्तामणिनाम कल्पकी चौथी पीठिका इस प्रकार दामोदरजीने करी है ॥ १ ॥ महाधिकार और महाप्रभाव आकर्षण नाम चौथा अधिकार, इस अधिकारमें पाँचही रहस्यभूत आकर्षणयंत्र वर्णित हैं ॥ २ ॥ इति यंत्रचिंतामणौ आकर्षणाधिकारः ॥

१ पादभूम्या वहन्नृसिक्या जलेन च मूर्तिं विशःपेत्सर्पैः।

अथ स्तम्भनाधिकारः ।

नारायणीति निगदन्ति सदैव लोका यां विश्वमातरमिति प्रवदन्ति केचित । गन्धर्वयक्षसुरसिद्धगणैः स्तुतां तां विश्वेश्वरीमभयदां त्रिगुणां नमामि ॥ १ ॥ संस्तम्भनं नाम महाधिकारं विचारयामोऽत्र तु पीठिकायाम् । यन्त्राणि बीजानि शृणुष्व देवि संस्तम्भनानि क्षणसिद्धिदानि ॥ २ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ शृणु देवि महायन्त्रं स्तम्भनं सर्ववैरिणाम् । विवादे व्यवहाराणां मुखस्तम्भो भवेद्ध्रुवम् ॥१॥ यदा कालवशाद्देवि कलहः संप्रजायते । तदा कुर्यान्महायन्त्रं जिह्वावेधनकं परम् ॥ २ ॥ रोचना भूर्जपत्रेण संलेख्यं सुविचक्षणैः । षट्कोष्ठकं प्रकुर्वीत रेखाद्वितयकेन च ॥ ३ ॥ कोष्ठमध्ये लिखेद्बीजं प्रतिकोष्ठमिहैककम् । हकारं च मकारं च लकारं तदनन्तरम् ॥ ४ ॥ वकारं च रकारं च यकारं च प्रतिष्ठितम् । ऊकारस्वरसंयुक्तं मस्तके रेफसंयुतम् ॥ ५ ॥ बिन्दुमात्रार्द्धसंयुक्तं संयोगे वर्णषट्ककम् । स्वर-

---

जिसको तीनोंलोक नारायणी इस सम्बोधनसे उच्चारण करते हैं, अन्य-जीव जिसको विश्वमाता कहकर पुकारते हैं ऐसी गंधर्व, यक्ष, सुर, सिद्ध गणोंसे स्तुति करी हुई अभयप्रदान करनेवाली रजोगुण, सतोगुण, तमोगुण-रूपा विश्वेश्वरी भगवतीको नमस्कार करता हूं ॥ १ ॥ इस पंचमपीठिकामें स्तम्भन नाम महाधिकारका विचार किया जाता है—हे देवि ! क्षणमात्रमें सिद्धिके देनेवाले स्तंभनयंत्र और बीजोंको श्रवण करो ॥ २ ॥

श्रीशिवजी बोले—हे देवि! व्यवहारविवादमें सम्पूर्ण शत्रुओंके मुखस्तम्भन-कारक यंत्रको सुनो ॥ १ ॥ हे देवि । यदि कालवश कलह होजाय तो जिह्वा-वेधन नाम यंत्रको प्रयोग करे ॥२॥ विधान यथा—गोरोचनसे भोजपत्रके ऊपर दो रेखा षट्कोणयंत्रको लिखकर प्रतिकोणकी रेखाको त्रिशूल युक्तकरके अन्त-रालमें टकार बीजोंको लिख तत्पश्चात् प्रत्येक कोणके भीतर ह, म, ल, व, र, य, इन सब वर्णोंको ऊपर नीचे स्थापितकर योजनापूर्वक अन्तमें ऊकार स्वरको मिलाकर बिंदु तथा रेफको ऊपरके भागमें लिखकर ईकार स्वरको मिलाय गंध

द्वितयसंयुक्तं बिन्दुना परिभूषितम् ॥६॥ एवं संजायते बीजं-मुखस्तम्भनसंज्ञकम् । कोष्ठे कोष्ठे तु संलेख्यमेकैकं बीजमुत्तमम् ॥ ७ ॥ एवं बीजानि संलेख्य: रेखाद्वितयकेन च । रेखोपरिगताः कृत्वा कोणदेशाश्चतुर्दिशम् ॥ ८ ॥ बाह्यरेखोर्ध्वधो लेख्या त्रिशूलान्मस्तकोपरि । सर्वतो रेखया चान्ते त्रिशूलान् विलिखेत्क्रमात् ॥ ९ ॥ एवमष्टादशसंख्यास्त्रिशूलाः संमतिष्ठिताः । शूलान्तराले सर्वत्र तथोपरि लिखेत्क्रमात् ॥ १० ॥ ठकारबीजानि षडेव चोर्ध्वमधोऽपि तावन्ति विलिख्य नूनम् । दिग्दक्षिणस्यां च तथा त्रिबीजं तावन्ति संख्यानि तथोत्तरे च ॥ ११ ॥ एवं हि बीजानि ठकारसंज्ञः श्रीसूर्यसंख्यानि विलिख्य पश्चात् । संपूज्य यन्त्रं विधिवत्प्रयत्नतो जपेत्तु मन्त्रं मनसा सुनिश्चलः ॥ १२ ॥ ॐ हल्र्यूं लललल अमुकस्य मुखं स्तम्भय स्तम्भय ठः ५ स्वाहा ॥ अष्टोत्तरं चैव शतं जपित्वा मन्त्रं त्रिसंध्यं त्रिदिनं प्रयत्नात् । संपूजयेद्यन्त्रवरं त्रिसंध्यं पीतैश्च

शत्रुमुखगतिस्तंमनयंत्रम् ।

	ठं	ठं	ठं	ठ	ठं	ठं	
	ह्रैं	ह्रैं	ह्रैं	ह्रैं	ह्रैं	ह्रैं	
थ.	मैं	मैं	मैं	मैं	मैं	मैं	थ.
	लैं	लैं	लैं	लैं	लैं	लैं	
थ.	वैं	वैं	वैं	वैं	वैं	वैं	थ.
थ.	रैं	रैं	रैं	रैं	रैं	रैं	थ.
	यूं	यूं	यूं	यूं	यूं	यूं	
	ठं	ठं	ठं	ठं	ठं	ठं	

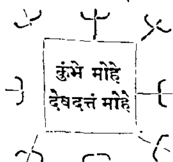
-पुष्पादिकोंसे विधिपूर्वक पूजनकर निश्चित मन हो वक्ष्यमाण मंत्रका जप करे । मन्त्र ऑं हल्र्यूं लललल अमुकस्य मुखं स्तम्भय २ ठः ५ स्वाहा । त्रिसंध्याकालोंमें

पुष्पैः कनकावदातैः ॥ १३ ॥ एवं कृते शत्रुगतिं मतिं च संस्तम्भयेद्यन्त्रवरो हि नूनम् । मूढो महामूक इव प्रजायते ग्रस्तो ग्रहेणैव रिपुर्महोग्रः ॥ १४ ॥

इति य० स्तम्भनाधिकारे शत्रुमुखगतिमतिस्तम्भनं नाम प्रथमं यन्त्रम् ॥ १ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि यात्रास्तम्भनमुत्तमम् । शिलासंपुटके लेख्यं पीतद्रव्येण शोभनम् ॥ १ ॥ रोचनाहरितालं च हरिद्रां च मनःशिलाम् । कुङ्कुमेन समायुक्तं पीतद्रव्यं प्रचक्षते ॥ २ ॥ कुम्भे मोहे च बीजानि एकपङ्क्तौ

यात्रास्तभनयन्त्रम्।



लिखेन्नरः । तस्याप्यधो लिखेन्नाम मोहे चान्ते प्रतिष्ठितम् ॥ ३ ॥ ततस्तद्वेष्टयेत्सम्यक् चतुष्कोणं तु रेखया । कोणे कोणे त्रिशूलं तु मध्ये मध्ये तथैव च ॥ ४ ॥ कृत्वैवमष्टौ शूलानि यन्त्ररेखोपरि स्थितान् । संपूज्य पीतकुसुमैर्यन्त्रराजं मनोहरम् ॥ ५ ॥

..सात दिनतक इस यंत्रको अष्टोत्तरशत अथवा शत जपको यत्नपूर्वक करके त्रिसन्ध्या कालमें सुवर्णकी कांतिके समान पील वर्णवाले फूलोंसे पूजन करै। इस विधानके करनेसे शत्रुकी बुद्धि और गतिका स्तम्भन होगा और जैसे ग्रहसे ग्रह ग्रस्त होता है इसीकारण शत्रुरूप ग्रह ग्रह मूढकी समान मूकभावको प्राप्त हो शान्त होगा ॥ १ १४ ॥

इति यंत्र०पांच्ं पी० स्तंभनाधि० शत्रुकीमुख गतिस्तंभन प्रथम यंत्र ॥१॥

श्रीमहादेवजी बोले–अथ यात्रास्तम्भनकारक अतिउत्तम यंत्रको कहता हूं शिला संपुटके ऊपर पीले द्रव्यसे चतुष्कोणयंत्रको लिखकर चारो कोनों तथा चारो दिशाओंमें एक २ त्रिशूल लिखकर मध्यमें दो रेखायें कल्पना करै। प्रथम रेखामें कुंभ और मोह और दूसरी रेखामें साध्यव्यक्तिके सानुस्वार नामके अक्षर लिख अन्तमें मोह शब्दको यत्नको युक्त करै अर्थात् देवदत्तं मोहे इस प्रकार लिख। गोरोचन, हरताल, हलदी, मनशिल, कुंकुम इनको

धूपैर्दीपैश्च नैवेद्यैर्नानाभक्ष्यसमन्वितैः । एवं संपूज्य तद्यन्त्रं भूमिमध्ये क्षिपेत्ततः ॥ ६ ॥ मृदापूर्य समे देशे यन्त्रस्योपरि यत्नतः । गमनं स्तम्भयत्येव नात्र कार्या विचारणा ॥ ७ ॥ यथारोपितभाण्डोऽपि न यात्येव प्रिये सदा ॥ ८ ॥

इति यं० यात्रास्तम्भनं नाम द्वितीयं यन्त्रम् ॥ २ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि वाचः स्तम्भं च सुन्दरि । प्रतिवादिमुखस्तम्भं यन्त्रं ख्यातं तु भूतले ॥ १ ॥ पीतद्रव्येण संलेख्यं शिलासंपुटमध्यतः । रोचनाहरितालं च हरिद्रां च मनःशिलाम् ॥ २ ॥ कुंकुमेन समायुक्तं पीतद्रव्यं प्रचक्षते । मध्ये नाम लिखित्वा तु त्रिकोणं वेष्टयेत्ततः ॥ ३ ॥ ततस्तद्वेष्टयेत्सम्यग्वर्तुलं रेखयैकया । तस्योपरि दलान्यष्टौ प्रकुर्वीत ततः परम् ॥ ४ ॥ दलमध्ये लिखेद्बीजं लकारं बिन्दुभूषितम् । एवं चाष्टदले लेख्यं पूजयेत्कुसुमैः शुभैः ॥ ५ ॥ पीतवर्णैस्तथा धूपैर्दीपैर्नैवेद्यकैः शुभैः । ब्राह्मणं भोजयेच्चैकं

–पीले द्रव्य कहते हैं, फिर मनोहर यंत्रराजका पीले फूलोंसे पूजनकर गंधादि प्रदान करै और नानाप्रकारके भक्ष्य नैवेद्यादिकोंको अर्पण करै, पृथ्वीके मध्यमें स्थापितकर यंत्रके ऊपर मिट्टी डालकर बंदकर दे तौ निश्चयही गमन रुक जायगा इसमें किसी प्रकारका सन्देह नहीं । हे प्रिये ! मार्गमें आरोपित-भांडभी स्थितही रहेगा अन्यथा तो कहना ही क्या है ॥ १–८ ॥

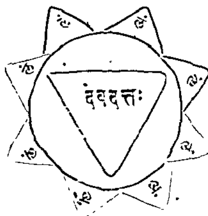
इति यन्त्रचि० पाँचवाँ स्तम्भ०में यात्रास्तम्भन कारक दूसरा यंत्र ॥ २ ॥

श्रीशिवजी बोले–हे सुन्दरि ! अब वाणीस्तम्भनको कहता हूं और यह यंत्र प्रतिवादिमुखस्तम्भननामसे भूतलमें प्रसिद्ध है । विधान इस प्रकारसे है, उक्त पीले द्रव्यसे शिलासंपुटके मध्यमें त्रिकोण यन्त्रको लिखकर गोलाकार चक्रसे वेष्टितकर आठ दलसे सुशोभितकर उक्त त्रिकोणके भीतर साध्य-व्यक्तिके नामके अक्षर और दलोंमें लं बीजोंको स्थापित करै । फिर पीले वर्णयुक्त सुगंधिवाले पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्यादिकोंसे यन्त्रराजका पूजनकर पायस (खीर) तथा गुडमिश्रित पदार्थोंसे एक ब्राह्मणको भोजनकरा उक्त

---

१ पं दक्षिणां गुरवे दद्यात् स्तंभनं लभेत् । भद्रं पीतं कुसुमं नात्रसंशय च ॥ १ ॥–

प्रतिवादिमुखस्तम्भनयन्त्रम् ।



पायसेन गुडेन च ॥ ६ ॥ ततो निखन्य भूमौ तु स्थापयेत् पूर्ववत्ततः । विवादे व्यवहारे च शास्त्रचर्चासु च प्रिये ॥७॥ प्रतिवादिमुखस्तम्भो जायते नात्र संशयः । एतद्यन्त्रं महादेवि सुगोप्यं कथितं तव ॥ ८ ॥

इ० य० प्रतिवादिमुखस्तम्भनं नाम तृतीय यन्त्रम् ॥ ३ ॥

श्रीशिव उवाच॥अतःपरं प्रवक्ष्यामि शत्रोर्वक्त्रस्य मुद्रणम् । यदा संजायते वादः शत्रूणां सह सुव्रते ॥ १ ॥ तदा यन्त्रं प्रकुर्वीत सुगमं फलसिद्धिदम् । खट्टिकया तु संलेख्यं स्वभित्तौ वेगतः प्रिये ॥ २ ॥ मध्ये नाम लिखित्वा तु शत्रोस्तु विधि-

---

–विधानपूर्वक पृथ्वीको खोदकर यंत्रको स्थापित करके ऊपर मिट्टी डालकर बन्दकर दे तो व्यवहार, विवाद, शास्त्रचर्चाआदिकोंमें प्रतिवादीके मुखका स्तंभन होजायगा । हे देवि ! यह परमगुप्त यंत्र मैंने तुमसे कहा है ॥१–८॥

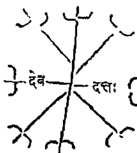
इति यंत्र० पाँचवीं० प्रतिवादिमुखस्तम्भन नामवाला तीसरा यंत्र ॥ ३ ॥

श्रीशिवजी बोले–हे सुव्रत ! शत्रुके साथ विवाद होनेमें शत्रुके मुखको बन्द करनेवाला यंत्रको कहता हूं । हे प्रिये ! जिस समय शत्रुसे विवाद हो उसी समय शीघ्रसिद्धिके देनेवाले यंत्रका प्रयोग करे । विधि–अपने स्थानकी दीवारके ऊपर खडियामिट्टीसे गोलाकार चक्र खैंचकर आठों दिशाओंमें त्रिशूल

–माल्याण्येतानि पुष्पाणि यथालाभं वरानने । अन्यानि पीतवर्णानि न माल्याणि कदाचन ॥२॥

हे वरानने ! कुटज, चम्पा, स्वर्णकेतकी, धतूरा, नागकेशर, पीतकुसुमके वर्धनमें इनकेही यथाशक्ति पीले फूल जितने मिलें इन्हें ग्रहण करना योग्य है अन्यप्रकारके नहीं ॥ १ ॥ २ ॥

शत्रुमुखस्तम्भनयन्त्रम्।



वर्तिमये। तस्योपरि स्थिता रेखा वसुसंख्याष्टदिक्क्रमात् ॥ ३ ॥ रेखान्ते च त्रिशूलानि तल्लिखेच्च दिगष्टके। तत्रैव तु सुसंपूज्य श्वेतपुष्पैः फलैः शुभैः ॥ ४ ॥ अन्यैश्च श्वेतगन्धैश्च श्वेतवस्त्रैर्मनोहरैः। ब्राह्मणं भोजयेच्चैकं श्रीशिवः प्रीयतामिति ॥ ५ ॥ वादे पिशुनतायां च मुखस्तम्भं करोत्ययम् ॥ ६ ॥

इति श्रीयन्त्रचि० ना० म० प्र० उ० पं० दा० स्तं० शत्रुमुखस्तम्भनं चतुर्थं यन्त्रम् ॥ ४ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि वह्निस्तम्भं मनोहरम्। दिव्यकाले प्रकुर्वीत यन्त्रराजं सुशोभनम् ॥१॥ पीतद्रव्येण संलेख्यं भूर्जपत्रे वरानने। साध्यनाम लिखेन्मध्ये क्रौं नामाद्यन्तसंपुटम् ॥ २ ॥ उपर्यधोऽपि विलिखेत्क्रौंकारं सुमनो-

---

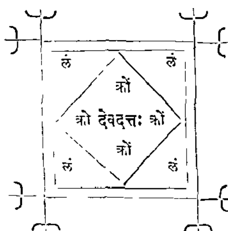
लगाय यंत्रको निर्माणकर सानुस्वार साध्यव्यक्तिके नामाक्षर लिखकर वहाँ स्थित यंत्रका श्वेतपुष्प, फल, सुगंध, मनोहर श्वेतवस्त्र इनसे पूजनकर एक ब्राह्मणको भोजन करावे और "श्रीशिवः प्रीयताम्" इसको पढताजाय तो इस यंत्रके प्रतापसे वाद और पिशुनतामें शत्रुका मुखस्तम्भन होगा ॥१-६॥

इति यंत्रचिन्तामणिकी पाँचवीं पीठिकाके स्तम्भनाधिकारमें शत्रुमुखस्तम्भननामक चौथा यंत्र ॥ ४ ॥

श्रीशिवजी बोले-अब मनोहर अग्निस्तंभन यंत्रको कहता हूं-इस यंत्रराजका दिव्यकालमें प्रयोग करना योग्य है। विधानयथा-पीले द्रव्यसे भोजपत्रके ऊपर दो रेखायुक्त चतुष्कोणयंत्रको लिखकर पुनः उसके भीतर एक चतुष्कोण यंत्र और लिखकर बहिर्भागके चारों कोनोंमें दो दो त्रिशूल लगाकर भीतरके चतुष्कोणके उदरमें पूर्वादि चारों दिशाओंमें क्रौं बीजको लिखकर सानु-

हरम् । ततस्तद्बहिर्येदेवि चतुष्कोणं तु रेखया ॥ ३ ॥ तस्योपरि चतुष्कोणं प्रकुर्वीत द्विरेखया । कोणान्तराले संलेख्यं लकारं विन्दुभूषितम् ॥ ४ ॥ एवं चतुष्टयं लेख्यं लकाराणां तु बीजकम् । कोणान्ते तु पृथग्लेख्यौ त्रिशूलौ सर्वथा प्रिये ॥ ५ ॥ एवमष्टत्रिशूलानि विलिख्याथ प्रपूजयेत । संपूज्य ब्राह्मणं भोज्य यन्त्रं भूमौ विनिक्षिपेत् ॥ ६ ॥ वह्न्युदकमार्गे च मध्ये यन्त्रं विधाय च । यावत्तस्योपरि याति सलिलं वरवर्णिनि ॥ ७ ॥ तावदग्नेर्महास्तम्भो जायते नात्र संशयः । दिव्यस्तम्भकरं नाम यन्त्रं देवैः सुपूजितम् । न देयं यस्य कस्यापि यदीच्छेत्सिद्धिमात्मनः ॥ ८ ॥

वह्निस्तम्भनयन्त्रम् ।



इति श्रीयन्त्रचि० ना० म० प्र० उ० प० स्त० दा० वह्निस्तम्भनं नाम पञ्चमं यन्त्रम् ॥ ५ ॥

–खार साध्यव्यक्तिके नामाक्षरोंको लिख मध्यकोणके बहिर्भागमें लं बीजोको लिखे । फिर गंधादिकोंसे उक्त यंत्रराजका पूजनकर यथाशक्ति ब्राह्मणको पूजित कर भोजनकरा यंत्रको पृथ्वीमें गाडदे और उस यंत्रके ऊपर जलका व्यवहार करे । हे वरवर्णिनि! जबतक उसके ऊपर जल व्यवहार होता रहेगा तबतक अग्निका महास्तंभन होगा । इसमे किसी प्रकारका संदेह नहीं है । हे देवि ! दिव्यस्तम्भनकारक इस यंत्रका देवताओंने भी पूजन किया है । अपनी सिद्धिकी इच्छा करनेवाला साधक अधिकारीके विना अन्य किसीको न दे १–८।

इति यंत्रचिन्तामणिकी पाँचवी पीठिकाके स्तंभनाधिकारमें अग्निस्तंभनकारक पांचवां यंत्र ॥ ५ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ शृणु देवि प्रवक्ष्यामि यन्त्रं वह्निनिवारणम् । यस्मिन्गृहे स्थितं यन्त्रं तत्र नाग्निभयं क्वचित् ॥ १ ॥ यस्य हस्ते सदा तिष्ठेद्यन्त्रराजं मनोहरम् । स्वप्नेऽप्यग्निभयं तस्य कदाचिन्नोपजायते ॥ २ ॥ बलात्कारेण कर्तव्यमग्निनिग्रहकं प्रिये । विद्यागमे तथा मन्त्रैरौषधे वा बलाधिके ॥ ३ ॥ पादस्पृष्टो यथा सर्पो दशत्येव न मन्यते । तथा स्तम्भोऽपि देवेशि बलात्कारेण वा जनैः ॥ ४ ॥ अपमृत्युं यथा देवि हरेद्वै वैद्यको रसः । तथा यन्त्रोऽपि देवेशि अवान्तरभयं हरेत् ॥५॥ श्रीखण्डरोचनहिमेन तु लेखनीयं यन्त्रं तु भूर्जे विधिवत्तु विस्तृते । नाम स्वकीयं तु विलिख्य मध्ये सुवेष्टयेद्वर्तुलरेखया तथा ॥ ६ ॥ तस्योपरि लिखेन्नूनं वकारं बिन्दुभूषितम् । पूर्वे च दक्षिणे चैव पश्चिमे चोत्तरे पुनः ॥ ७ ॥ पुनस्सर्वं तु संवेष्ट्य चतुष्कोणं तु रेखया । त्रिलोहवेष्टितं कृत्वा बाहुमूले गलेऽथवा ॥ ८ ॥ अथवा गृह-

अग्निस्तंभनयन्त्रम् ।



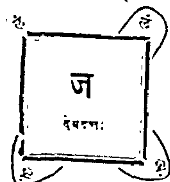
श्रीशंकरजी बोले-हे देवि ! अब अग्निनिवारण यंत्रको कहताहूं सुनो । जिस गृहमें यह यंत्र स्थित रहेगा उस गृहमें कदापि अग्निका भय नहीं होगा और जिस किसीके हाथमें यह मनोहर यंत्रराज सदा वर्तमान रहेगा, स्वप्नमें भी उसको कदापि अग्निका भय न होगा । हे प्रिये ! विद्यागमन, मंत्र, औषध अथवा बलअधिक होनेपर बलात्कारसे अग्निका ग्रहण करना योग्य है, हे देवेशि! जैसे कि पादसे स्पर्श कियाहुआ सर्प काटताही है, ऐसेही मनुष्यों करके प्रयोग कियाहुआ स्तम्भनयंत्र फलदायक होताही है । हे देवि ! जैसे कि वैद्यका रस अपमृत्युको हरण करता है तैसेही यह यंत्रराज अवान्तरभयको हरण करताहै । विधान यथा-लाल चंदन, गोरोचन और हिमसे सुविस्तृत भोजपत्रपर विधान पूर्वक एक गोलाकार चक्रके मध्यमें साध्यव्यक्तिके नामको लिख बाहिर्भागमें अर्थात् पूर्वादि चारों दिशाओंमें वं बीजको लिख गंधपुष्पादिकोंसे पूजनकर त्रिलोहके तावीजमें बंदकर गले अथवा बाहुमूलमें धारणकरै,

मध्ये तु क्षीरमध्ये विनिक्षिपेत् । एवं संपूजयेन्नित्यं देवद्वेषि यन्त्रकम् ॥ ९ ॥ अग्नेः सकाशाद्भीतिर्या साऽस्मात्क्वापि न जायते । ब्राह्मणं भोजयेदेकं यन्त्रराजस्य तुष्टये ॥ १९ ॥

इति य० चि०ना० म० प्र० उ० पं०स्त० अग्निस्तम्भनं नाम षष्ठं यन्त्रम् ॥६॥

श्रीशिव उवाच ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि प्रियसंस्तम्भनं परम् । यदा कोऽपि चलात्याति वारितोऽपि वरानने ॥१॥ तदा संस्तम्भनं कुर्याद्यन्त्रराजं शुचिस्मिते । पीतद्रव्येण संमिश्रं फलके काष्ठसंभवे ॥ २ ॥ खटिकया लिखेद्यन्त्रं फलके काष्ठसंभवे । जकारगर्भमध्ये तु साध्यनाम प्रतिष्ठितम् ॥ ३ ॥

वातास्तम्भनयन्त्रम् ।

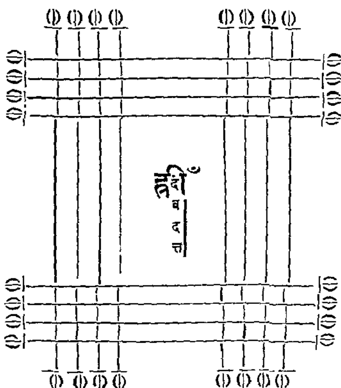


ततस्तद्वेष्टयेत्सम्यक् चतुष्कोणं तु रेखया । तस्योपरि चतुष्कोणं द्वितीयं विलिखेद्बुधः ॥ ४॥ कोणे दलाकृतिं कुर्यान्मध्यदेशे कचित्तरः । दलमध्ये ठकारं तु बिन्दुयुक्तं लिखेत प्रिये ॥ ६ ॥ एवं विलिख्य संपूज्य विधिवद्यन्त्रमुत्तमम् । अधोमुखं निचर्भीयात

फलकं गृहमध्यतः ॥ ६ ॥ यात्रास्तम्भो भवेद्देवि नात्र कार्या विचारणा ॥ तथापि गच्छते यस्तु गत्वाऽपि च समेत्यसौ॥७॥
इ० य० चि० ना० प्र० उ० पं० यात्रास्तम्भनं नाम सप्तमं यन्त्रम् ॥७॥

श्रीशिव उवाच ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि वैरिवाक्स्तम्भनं परम्। खट्टिकया तु संलेख्यं शिलासंपुटमध्यगम् ॥ १ ॥ ह्रींकार-

शत्रुमुखस्तम्भतयन्त्रम् ।



–तो हे देवि ! यात्राका स्तम्भन होगा, इसमें किसी प्रकार संदेह नहीं है, अथवा चलागया हो तौ लौट आवे ॥ १–७ ॥

इति श्रीयंत्रचिन्ता० यात्रा स्तमनकारक सातवाँ यंत्र ॥ ७ ॥

श्रीशिवजी बोले–अब शत्रुकी वाणीके स्तम्भनकारक परमयंत्रको कहताहूं–खड़ियामिट्टीसे शिला संपुटके भीतर चार रेखावाले चतुष्कोण यंत्रको लिखकर

गर्भमध्ये तु साध्यनाम प्रतिष्ठितम् । ततस्तद्वेष्टयेत्सम्यक् चतुष्कोणं तु रेखया ॥२॥ एवं चतुश्चतुःकोणं लिखित्वा यन्त्रकं परम् । अन्त्यकोणे त्रिशूलानि चतुर्दिक्षु चतुश्चतुः ॥ ३ ॥ विलिख्य पूजयेद्यन्त्रं विधिवत्कुसुमैः शुभैः । संपुटं मेलयित्वा तु स्थापयेद्यन्त्रकं शुभम् ॥ ४ ॥ तत्क्षणाज्जायते शत्रोर्मुखस्तम्भो न संशयः । ब्राह्मणं भोजयेच्चैकं श्रीविद्या प्रीयतामिति ॥ ५ ॥

इति यन्त्रचि० ना० म० प्र० उ० पंटितदा० स्त० शत्रुमुखस्तम्भनं नामाऽष्टमं यन्त्रम् ॥ ८ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि यन्त्रं पिशुनमुद्रणम् । यदा राजकुले देवि पिशुनः कोऽपि वै वदेत ॥ १ ॥ तदा यन्त्रं प्रकुर्वीत नाम्ना पिशुनमुद्रणम् । शत्रोः स्तम्भयते वाचं गतिं बुद्धिं वरानने ॥२॥ रोचनाभूर्जपत्रेण लिखेद्यन्त्रं सुशोभनम् । क्रोंकारपुटितं कार्यमक्षरं नामसंभवम्॥३॥ ह्रीङ्कार-

-प्रत्येक कोणकी प्रतिरेखाको त्रिशूलयुक्तकर उक्त यंत्रके भीतर अर्द्धचंद्राकार और एक विन्दुको ऊपरके भागमें लगा एक ही बीजको लिखे और उस ही बीजकी मात्राके मध्यमें साध्यव्यक्तिके नामको लिख गंध पुष्पादिकोंसे पूजन कर संपुटको मिलाकर शुभयंत्रको स्थापितकरै तो तत्क्षणमें शत्रुके मुखका स्तंभन होगा. इसमें किसी प्रकारका संदेह नहीं है, एक ब्राह्मणको भोजन करावे और कहे कि ' श्रीविद्या प्रीयताम् ' ॥ १–५ ॥

इति श्रीयंत्रचिन्तामणिकी पाँचवीं पीठिकाके स्तंभनाधिकारमें शत्रुमुखस्तंभनकारक आठवां यंत्र ॥ ८ ॥

श्रीशिवजी बोले–हे देवि, अब पिशुन मुद्रणनाम यंत्रको कहताहूं । राजकुलमें यदि कोई पिशुनता (चुगली) को करदे तो उसके मुखमुद्रणके लिये पिशुनमुद्रण नाम यंत्रका प्रयोग करे । हे वरानने ! इसके प्रतापसे शत्रुकी वाणी गति बुद्धि इनका स्तम्भन होजायगा । गोरोचनसे भोजपत्रके ऊपर चतुष्कोण यंत्रको लिखकर प्रत्येक कोणमें एक एक दल लगाकर उक्त यन्त्रके बाहिर्भाग पूर्व पश्चिममें क्रों क्षः इन बीजोंको लिख मध्यभागमें क्रों, ह्रीं

भोजयेत्पश्चाद्वित्तशाठ्यविवर्जितः । तस्माद्यन्त्रं निखन्याशु भूमिमध्ये विनिक्षिपेत् ॥ ११ ॥ बुद्धिभ्रंशो गतिभ्रंशो वाग्भ्रंशश्च वरानने । पिशुनस्य क्षणादेवि जायते नात्र संशयः१२

इति यन्त्रचि० ना० म० प्र० उ० सं० दा० पण्डितोद्धृते स्तं० पिशुनमुखमुद्रण नाम नवमं यन्त्रम् ॥ ९ ॥

इति श्रीयन्त्रचिन्तामणौ नाम्नि महाकल्पे प्रत्यक्षसिद्धिप्रदे उमामहेश्वरसंवादे दामोदरपण्डितोद्धृते पञ्चमपीठिकायां स्तम्भनाधिकारः समाप्तः ॥

अथ विद्वेषणाधिकारः ।

त्वरितं जानकीं द्रष्टुं निहन्तुं रावणं युधि । पूजितां रामचन्द्रेण त्वरितां तां नमाम्यहम् ॥ १ ॥ विद्वेषणं नाम महाधिकारं प्रारभ्यते संप्रति तच्चतुर्थम् । यन्त्राणि बीजानि परिस्फुटानि विचारयामोऽत्र सुपीठिकायाम् ॥ २ ॥ दौर्भाग्यवैराणि परस्परं तदा विवर्द्धते द्वेषमतीव बन्धुषु । यन्त्रप्रभावाद्भुवि मानवानां प्रचक्ष्महे तानि परिस्फुटानि ॥ ३ ॥

ब्राह्मणको भोजन करावे, परन्तु वित्तशाठ्य विवर्जित होकर करै, फिर भूमिमें गड्ढा करके यंत्रको दाबदे तो हे सुन्दरि ! पिशुन शत्रुकी बुद्धि वाणीकी गति इत्यादिकोंका भ्रंश होगा ॥ १–१२ ॥

इति यंत्र-चिन्ता० पिशुनमुखस्तम्भन नामक नववां यंत्र ॥ ९ ॥

इति श्रीयंत्रचिन्तामणौ नाम्नि महाकल्पे प्रत्यक्षसिद्धिप्रदे उमामहेश्वर सम्वादे दामोदर पंडितोद्धृते पंडित बलदेवप्रसादमिश्रकृत भाषाटीकासहितपंचमपीठिकायां स्तंभनाधिकारः समाप्तः ॥

शीघ्रही श्रीमहाराणी जानकीजीके अन्वेषणके लिये और संग्राममें रावणके मारनेके लिये श्रीरामचंद्रजीसे पूजितहुई त्वरिता देवीको नमस्कार करताहूं॥१॥ अब विद्वेषण नाम छठा महा अधिकार आरम्भ करा जाताहै ।। इस सुपीठिकामें यंत्र, बीजोंका विचार करते हैं जिन यंत्रोंके प्रयोग करनेसे दौर्भाग्य, आपसमें वैर, बन्धुओंमें वैर अति वृद्धिको प्राप्त हो अब उन यंत्रोंको स्फुटतापूर्वक कहताहूं ॥ ३ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ शृणु देवि प्रवक्ष्यामि यन्त्रं दौर्भाग्यवर्धनम् । विवादो नरनारीणां येन संजायते सदा ॥ १ ॥ रोचनाकुङ्कुमेनैव भूर्जपत्रे वरानने । लिखेद्यन्त्रं महादेवि यन्त्रं सौभाग्यनाशनम् ॥ २॥ कुर्यात्तिर्यग्गता रेखाः पूर्वपश्चिमसंस्थिताः । दीर्घकोष्ठाकृतिं कुर्यादष्टसंख्याः शुचिस्मिते ॥ ३ ॥ तन्मध्योपरिभागे च एकैकं विलिखेत्क्रमात् । मध्ये नामाक्षरं देवि द्विवारं तु पुनःपुनः ॥४॥ तस्याधोधःक्रमेणैव तेनैव विलिखेत्पुनः । दुर्भगा चेति स्त्रीलिङ्गे विधिवच्च पुनःपुनः ॥ ५॥ पुनस्तान्येवाक्षराणि कोष्ठा यावत्समापिताः । कोष्ठबाह्येऽपि विलिखेदधोपरि विशेषतः ॥६॥ अजितेत्युपरि संलेख्यं स्वाहान्तं प्रणवादिकम् ।

नरनारीविद्वेषणयन्त्रम् ।

ॐ अजितेस्वाहा

दे	व	द	त्त	दे	व	द	त्त
						र्भ	गा
दु	र्भ	गा	भ	व	दु	भ	व

ॐ अपराजितेस्वाहा

श्रीशिवजी बोले–हे देवि ! जिन यंत्रोंके प्रयोगकरनेसे विवादमें नर और नारीके दौर्भाग्यकी सदा वृद्धि हो अब उन यंत्रोंको कहता हूं श्रवण करो-हे शुचिस्मिते ! गोरोचनसे विरचित भोजपत्रके ऊपर चतुष्कोण यंत्रको खैंचकर मध्यभागमें पूर्व पश्चिमकी ओर खडी ९ रेखा (कि, जिनके अष्ट कोष्ठक होते हैं) लिखकर प्रतिरेखाको मिश्रितकर उनके ऊपर भागमें " ओं अजिते स्वाहा " नीचेके भागमें " ओं अपराजिते स्वाहा " इन पदोंको लिखकर कोष्ठोंके भीतर दो वार ऊपर भागमें साध्यव्यक्तिके नामाक्षरोंको लिख दुर्भगा भव इन वर्णोंको नीचेके भागमें लिखे । यदि साध्यव्यक्तिके नामके अक्षर कोष्ठसंख्यासे अधिक हों तो बहिर्भागमें लिखने योग्य है। परन्तु स्त्रीलिङ्गमें अर्थात् स्त्रीके प्रसंगमें दुर्भगाभव इसप्रकार लिखना

अपराजिते अधोभागे स्वाहान्तं प्रणवादिकम् ॥ ७ ॥ एवं संलिख्य यन्त्रं तु गच्छेच्चैव सरित्तटे । उभयोः कूलयोर्ग्राह्या मृत्तिका मौनिना शुभा ॥ ८ ॥ तया गणपतिं कृत्वा यन्त्रं तस्योपरि क्षिपेत् । गोदुग्धस्नपनं कुर्याद्गणनाथस्य सुन्दरि ॥ ९ ॥ अर्चयेद्विविधैः पुष्पैर्मोदकैर्बहुभिस्तु तम् । संपूज्य बालकान् भक्ष्यैर्गणेशः प्रीयतामिति ॥ १० ॥ एवं संपूज्य देवेशं गणराजं शुचिस्मिते । शरावसंपुटे क्षिप्त्वा संपुटोपरि विन्यसेत् ॥ ११ ॥ अघोरेति अघोरेति विलिखेत्संपुटोपरि । भूमिष्ठं सम्पुटं कुर्यान्निखन्यादथ पूजयेत् ॥ १२ ॥ दौर्भाग्यमतुलं प्राप्य नारी सीदत्यहर्निशम् । पुरुषो न सहेतां तु सुरूपामपि सुव्रते ॥ १३ ॥ पुल्लिंगे योजितं यन्त्रं नारी न सहते तु तम् । दंपत्योर्द्वेषणं देवि रहस्यं परमं सदा ॥ १४ ॥ नान्यत्र संप्रयोक्तव्यं यन्त्रमेतन्मम प्रियम् न देयं यस्य कस्यापि विपरीतं प्रजायते ॥ १५ ॥

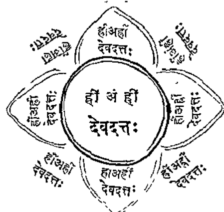
इति श्रीयन्त्रचि० विद्वेषणाधिकारे नरनारीविद्वेषण प्रथम यन्त्रम् ॥ १ ॥

—योग्य है ! हे सुन्दरि ! इस प्रकार यंत्रको निर्माणकर नदीके तटपर जाकर आरपारकी मृत्तिका लाकर मौन हो उक्त मृत्तिकासे गणेशजीकी प्रतिमा बनाकर यंत्रको उसके ऊपर रखकर गंध पुष्प मोदकआदि द्रव्योंसे स्तुतिपूर्वक पूजनकर 'गणेशः प्रीयताम्' इ वाक्यको उच्चारणकर भक्ष्यपदार्थोंसे बालकोंका पूजन करै। हे शुचिस्मिते ! इस प्रकार गणेराजीका पूजनकर शरावसंपुटमें रख संपुटमें स्थापित करै, भूमिमें संपुट खोदकर अघोरेति अघोरेति इस मंत्रको पढता हुआ प्रतिमाको स्थापितकर पूजन करे। हे सुव्रते ! अति दौर्भाग्यको प्राप्त होकर नारी रातदिन दुःखी होगी, तथापि पुरुष उसको न सहनेको समर्थ होगा, चाहे वह नारी सुरूपाभी क्यों न हो ? यदि इस यंत्रका पुंलिंग विषयमें प्रयोग किया जाय तो नारी नरको नहीं सह सकेगी, हे देवि ! यह रहस्य स्त्रीपुरुषोंका विद्वेषकारक है। मेरे प्यारे इस यंत्रका अन्यविषयमे प्रयोग करना उचित नहीं है, और न किसीको देना योग्य है, क्योंकि देनेसे विपरीत फलदायक होगा ॥ १–१५ ॥

इति यंत्रचिन्ता० नरनारीविद्वेषणं नाम प्रथम यंत्र ॥ १ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ अतः परं प्रवक्ष्यामि शत्रुविद्वेषणं परम् । परस्परं महाद्वेष्यं शत्रूणां जायते परम् ॥ १ ॥ विद्वेषिरक्तयुक्तेन लेखन्या काकपिच्छया । श्मशानकर्पटे लेख्यं चतुर्दश्यां वरानने ॥ २ ॥ ह्लींकारं च अकारं च बिन्दुयुक्तं ततः परम्। ह्लींकारं च तृतीयं वै एकपंक्तौ लिखेद्बुधः॥ ३ ॥ अधःपंक्तौ ततो नाम वर्तुलं वेष्टयेत्ततः । चतुर्दलं ततः कुर्याद्रेखाद्वितयभूषितम् ॥ ४ ॥ दलमध्ये तथा लेख्यं मध्यदेशे तथैव च । अजा-

शत्रुविद्वेषणयंत्रम् ।



रक्तेनसंमिश्रं भक्तं नैवेद्यकं भवेत ॥ ५ ॥ बलिपुष्पैः प्रपूज्याथ यन्त्रं रात्रौ वरानने । योगिनीं भोजयेच्चैकां गुरुं संपूज्य यत्नतः ॥ ६ ॥ उद्वासे शिवगेहे तु स्थाप्यं यन्त्रं न संशयः । श्मशानेऽप्यथवा स्थाप्यं गृहे नैव कदाचन ॥ ७ ॥ शत्रूणां जायते

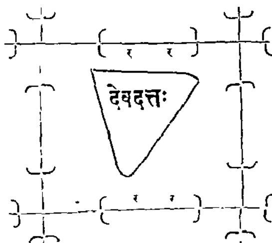
श्रीशिवजी बोले–अब शत्रुविद्वेषण नाम यन्त्रको कहता हूँ, इस प्रयोगके करनेसे शत्रुओंका परस्पर परम विद्वेष होगा । विधान यथा–श्मशानके वस्त्रपर अपने (विद्वेषीके) रक्तसे काकके पंखकी कलमसे एक गोलाकार चक्र खैंचकर दो रेखावाले कमलदलोंको पूर्वादि चारों भागोंमें स्थापित करे । इसके पीछे उस गोलाकार चक्रके भीतर तथा चारों दल और प्रतिदलके संधिभागके समीप ह्रीं, अं, ह्रीं, इन तीन बीजोंको ऊपरके भागमें और साध्य मनुष्यके नामके अक्षरोंको नीचेके भागमें लिखे अर्थात् ऊपर नीचे लिखे । हे वरानन ! इस प्रकार यंत्रराजको निर्माण करके अजारक्त मिश्रित भात और नैवेद्य इनको बलि तथा गंध पुष्पादिकोंसे रात्रिके समय यन्त्रराज तथा गुरुमहाशयका पूजन करके एक योगिनीको भोजन करावे और यंत्रका उद्वास शिवमन्दिर अथवा श्मशानमें स्थापित करे परंतु किसी प्रकारभी स्थिरतर पूजन न करे । इस प्रयोगके

द्वेषः क्रमेणैव न संशयः । स्वशत्रुद्वेषणं नाम यन्त्रराजं महाफलम् ॥८॥ एकान्ते स्मरणीयं च लोकान्ते न कदाचन ॥९॥

इति श्रीय० ना० उ० वि० दा० शत्रुविद्वेषणं नाम द्वितीयं यन्त्रम् ॥२॥

श्रीशिव उवाच ॥ अतः परं प्रवक्ष्यामि बन्धुविद्वेषणं परम्। श्मशानकर्पटे लेख्यं लेखन्या काकपिच्छया ॥ १ ॥ मेषस्य रुधिरेणैव गृह्वाङ्गारं श्मशानकम् । साध्यनाम लिखित्वा तु

बन्धुविद्वेषणयन्त्रम् ।



त्रिकोणं वेष्टयेत्ततः ॥ २ ॥ अधोपरि च रेफौ च संलेख्यौ भूतरात्रिषु । ततस्तद्वेष्टयेत्सम्यक् चतुष्कोणं तु रेखया ॥ ३ ॥ कोणे कोणे त्रिशूलानां संलेख्यं च चतुष्टयम् । चतुर्दिक्सं-

---

–रनेसे शत्रुओंका विद्वेषण होगा, यह स्वशत्रु विद्वेषण नाम यंत्र महाफलदायक है इसका प्रयोग एकान्तमें करे, हर किसीके सामने न करे ॥ १–९ ॥

इति यंत्रचि० वि० स्वशत्रु विद्वेषण नामक दूसरा यंत्र ॥ २ ॥

श्री शिवजी बोले–अब बंधुविद्वेषण नाम यंत्रको कहताहूं–श्मशान वस्त्रके ऊपर काकपत्रकी लेखनीसे एक चतुष्कोण यंत्रको खैंचकर उसके भीतर त्रिकोण यंत्रको खैंच प्रत्येक कोणमें चार २ त्रिशूल लिख पूर्वादि चारों दिशाओंकी रेखाओंमें दो२ रकार स्थापित करै तत्पश्चात् भूतरात्रिमें श्मशानके अंगारेको

मुखं लेख्यं चतूरेफोपरि स्थितम् ॥ ४ ॥ एवं संलिख्य यन्त्रं तु संपूज्य पूर्ववत्पुनः। सप्ताङ्गुलं निखन्यात्तु पूरयेद्भूमिमध्यतः॥५॥ यत्रास्ति तेषां मार्गश्च तत्रैव प्रक्षिपेत्ततः । परस्परं महाद्वेषं बन्धूनां संप्रजायते ॥ ६ ॥ यस्य पादः पतत्यत्र सोऽपि दौर्भाग्यभाजनः। जायते नात्र संदेहो. यन्त्रराजप्रसादतः ॥ ७ ॥

इति श्री यन्त्रचि० बन्धुविद्वेषणं नाम तृतीयं यन्त्रम् ॥ ३ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ अतः परं प्रवक्ष्यामि विद्वेषं स्वामिभृत्ययोः । विषेण रक्तमिश्रेण लेखन्या काकपिच्छया ॥ १ ॥ श्मशानकर्पटे लेख्यं चतुर्दश्यां महानिशि । साध्यनामाख्यगर्भं तु वर्तुलं वेष्टयेत्ततः ॥२॥ तस्योपरि अधोभागे रकारत्रितयं पुनः। यकारं संपुटे लेख्यं तिर्यग्भागे द्विबीजकम् ॥ ३ ॥ यकारं च

स्वामिभृत्यविद्वेषणयन्त्रम् ।



–मेष (मेंढा) के रुधिरमें घिसकर उससे उक्त त्रिकोणके भीतर साध्यव्यक्तिके नामाक्षरोंको लिख त्रिकोणके ऊपर नीचे दो दो रकार वर्ण लिखै। इस प्रकार यन्त्रको लिखकर पूर्ववत् पूजनकर सात अंगुल भूमि खोद यंत्रको दाबदे तब परस्परमें बन्धुओंका निश्चयही विद्वेष होगा, अथवा अन्य किसीका भी भूमिमध्यमें स्थित यंत्रके ऊपर पैर पड़ेगा तौ वहभी दौर्भाग्यका भागी होगा, इस यंत्रराजका ऐसा प्रभाव है परन्तु उस स्थानकी भूमिमें दाबै कि, जहां शत्रुके आनेजानेका मार्ग हो ॥ १–७ ॥

इति यंत्रचिन्तामणिकी छठी पीठिकाके विद्वेषणाधिकारमें बन्धु विद्वेषण नामक तीसरा यन्त्र ॥ ३ ॥

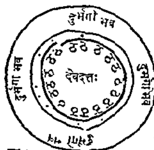
श्रीशिवजी बोले–अब स्वामी और सेवकके विद्वेषकारक यंत्रको कहता हूं। *विधान यथा–रुधिर मिले विषसे काकपक्षकी लेखनीके द्वारा श्मशान* कर्पटके ऊपर एक गोलाकार यंत्रको खैंच एक अंगुलके अंतरसे उक्त यंत्रके बहिर्भागमें एक यंत्र और खैंचकर प्रथम चक्रके भीतर सानुस्वार साध्यव्यक्तिके नामको लिख पुनः दूसरे यंत्रके मध्य पूर्वपश्चिम भागमें यकारपुटित

सकारं च विसर्गान्तं प्रतिष्ठितम् । एवं संलिख्य यन्त्रं तु वर्तुलं वेष्टयेत्ततः ॥ ४॥ एवं संलिख्य यन्त्रं तु तेषां मार्गे निखन्यतु । संजायते महाद्वेषः स्वामिसेवकयोः सदा ॥ ५ ॥ यावद्यन्त्रं तु भूमिष्ठं तावद्द्वेषः प्रजायते ॥ ६ ॥

इति श्रीयन्त्र चिं० स्वामिभृत्ययोर्विद्वेषणंनाम चतुर्थं यन्त्रम् ॥ ४ ॥

श्रीशिव उवाच॥शृणु देवि प्रवक्ष्यामि जगद्द्वेषणकं परम् । यन्त्रं भयानकं नाम दौर्भाग्यस्य विवर्धनम् ॥ १ ॥ काकोलूकस्य रक्तेन ऋतुरक्तेन वा पुनः । दौर्भाग्यललनायाश्च लेखन्या काकपिच्छया ॥ २ ॥ विलिखेद्भूर्जपत्रे तु साध्यनाम निशि

विश्वविद्वेषणयन्त्रम् ।



प्रिये । कृष्णाष्टम्यां चतुर्दश्यां लिखेद्यन्त्रं मनोहरम् ॥ ३ ॥ साध्यनाम लिखेन्मध्ये ठकारपरिवेष्टितम् । ठकाराणां न संख्यास्ति विषमैर्वेष्टयेत्सदा ॥ ४ ॥ ततस्तु वर्तुलं वेष्टयं दुर्भगो भव वेष्टयेत् । एतद्यन्त्रं तु संस्थाप्य तद्गृहे तृणमध्यतः ॥५॥

—३ रकार वर्णोंको और उत्तर दक्षिण भागोंमें विसर्गान्त यकार सकारोंको लिखे । तत्पश्चात् गन्धपुष्पादिकोंसे यंत्रका पूजनकर स्वामी–सेवकके मार्गमें भूमि खोदकर दबादे तो स्वामी सेवकका प्रतिदिन विद्वेष रहेगा ॥ १–६॥

इति यन्त्र चिन्तामणिकी० स्वामीसेवकविद्वेषणनामक चौथा यन्त्र ॥ ४ ॥

श्रीमहादेवजी बोले–हे देवि ! अब जगत् विद्वेषक नाम यन्त्रको कहता हूं सुनो इस यन्त्रका भयानक नाम है और दौर्भाग्यवृद्धि इसका प्रभाव है । विधान यथा–काक, उलूक इनके रक्तसे तथा दौर्भाग्यललना (स्त्री) के ऋतुरक्तसे भोजपत्रके ऊपर काकपत्रकी लेखनीसे एक गोलाकार चक्र दूसरा उसके अंगुलमात्रके अन्तरसे लिखे तथा चक्रके मध्यमें साध्यव्यक्तिके सानुस्वार नामको लिख उसके पूर्वभागमें चार ठं बीज और पश्चिम भागमें तीन ठं बीज तथा दक्षिण उत्तरभागमें दो दो ठं बीज लिख बहिर्भागके पूर्वादि चारों भागोंमें दुर्भगोभव इस वाक्यको लिखे । इसके पीछे गन्ध पुष्पादिकोंसे पूजनकर घरके

यावद्गृहस्थं तद्यन्त्रं सोऽपि तद्गृहतः सदा । तावद्विश्वस्य शत्रुः स्यान्नात्र कार्या विचारणा ॥ ६ ॥ पूजाक्रमस्तु पूर्वोक्तो यन्त्रे देवि नृणां सदा ॥ ७ ॥

इति श्री यंत्र० विश्वविद्वेषणं पञ्चमं यन्त्रम् ॥ ५ ॥

चिन्तामणौ यन्त्रवरे सुकल्पे श्रीचन्द्रचूडस्य मुखाद्विनिर्गते । तस्मिंश्चतुर्थे तु महाधिकारे पूर्णा तु पीठी कथिताऽत्र षष्ठी ॥ १ ॥ पञ्चैव यन्त्राणि महाधिकारे चकार दामोदरविप्रवर्यः । रहस्यभूतानि विचार्य लोके शृण्वन्ति ये ते सुखिनः सदा नराः ॥ २ ॥

इति श्रीयन्त्र चिं० महाकल्पे प्र० सि० उ० सं० दा० पंडितोद्धृते षष्ठपीठिकायां विद्वेषणाऽधिकारः समाप्तः ॥

अथ मारणाधिकारः ।

ब्रह्माण्डं सर्वमेतत्पचति बहुविधं यः सदा भूतजातं स स्तात्सर्वस्य देवैः करकलितमहाकालदण्डोऽतिरौद्रः । नत्वा

–मध्यमें तृणमें स्थापित करदे अर्थात् घास इत्यादिकमें दबाकर रखदे । उक्त यन्त्र जबतक गृहमें स्थित रहैगा तबतक घरमें विद्वेष शांत न होगा किन्तु विश्वमात्रका शत्रुहोगा इस विषयमें किसी प्रकारका संदेह न करना चाहिये । हे देवि ! पूजाका क्रम उक्त यन्त्रके समान है ॥ १–७ ॥

इति यन्त्र प० पी० में विश्वविद्वेषणनामक पाँचवां यन्त्र ॥ ५ ॥

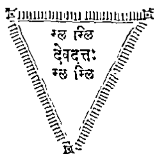
श्रीशिवजी महाराजके मुखकमलसे निकले हुए सुकल्प चिन्तामणि नाम सुयंत्रकी छठी पीठिका समाप्त हुई। इस महाअधिकारमें विप्रवर्य्य दामोदरजीने पाँचही यंत्र वर्णन किये हैं । जो मनुष्य रहस्यभूत इन यन्त्रोंका श्रवण करेंगे वे मनुष्य चिरकालतक सुखके भागी होंगे ॥ १ ॥ २ ॥

इति श्रीयन्त्रचिन्तामणिनाम्नि महाकल्पे प्रत्यक्षसिद्धिप्रदे उमामहेश्वरसंवादे षष्ठपीठिकायां बलदेवप्रसादमिश्रकृत भाषाटीकासहितविद्वेषणाधिकार समाप्त ॥

जो अनिर्वाच्य शिवस्वरूप परमात्मरौद्ररूपको धारणकर सम्पूर्ण देवताओंके रचेहुए दण्डस नानारूप इस भूतजात ब्रह्मको पका रहेहैं उन रौद्रस्वरूप यममार्ग-

तं कालसंज्ञं विरचयति महापञ्चमं चाधिकारं मृत्योः संदर्शनाख्यं प्रकटयति महो गङ्गदत्तस्य सूनुः ॥ १ ॥ संमारणो नाम महाधिकारः प्रारभ्यते संप्रति सप्तमो मया। सा सप्तमी स्यात्किल कल्पवल्ली चिन्तामणौ श्रीशिवभाषितेऽस्मिन् ॥ २ ॥

श्रीशिव उवाच॥अतः परं प्रवक्ष्यामि यन्त्रं शत्रोस्तु मारणम्। एतद्यन्त्रं तु संलेख्यं कपाले तु नरस्य च ॥ १ ॥ श्मशानाङ्गारकं



घृष्य धत्तूरकरसे न तु । श्मशाने चैव संलेख्यं चतुर्दश्यां महानिशि ॥ २ ॥ निःशङ्केन विवस्त्रेण एकाकी यन्त्रमुत्तमम् । मध्ये नाम लिखित्वा तु लिखेन्ग्ल-ग्लि तथोपरि ॥ ३ ॥ अधोऽपि ग्लाम्लि बीजौ द्रौ विलिख्यौ साधकेन तु । त्रिकोणं वेष्टयेत्पश्चाद्रेखाद्वितयशोभितम् ॥ ४ ॥ ऊर्ध्वरेखास्तु कर्तव्याः सर्वत्रापि वरानने । शरावसम्पुटे क्षिप्त्वा यन्त्रं तत

-इशीं श्रीशिवजी महाराजको प्रणामकर मृत्युस्थान प्रकाश पंचम महाअधिकारको गंगादत्तजीके पुत्र श्रीदामोदरजी रचनापूर्वक प्रकाश करते हैं ॥ १ ॥ मैं अब पंचम मारण नाम महाअधिकारको वर्णन करताहूँ, इस शिवोक्त चिन्तामणि नामक महायंत्रमें सप्तमी पीठिकाको सप्तमी कल्पवल्ली कहते हैं ॥ २ ॥

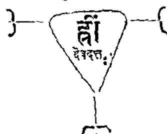
श्रीशिवजी बोले । अब शत्रुमारण यन्त्रको कहताहूं-प्रयोगकरनेके समय इस यन्त्रको मनुष्यके कपालपर लिखना चाहिये । श्मशानके अंगारेको धतूरेके रसमें घिसकर कृष्णपक्षकी चतुर्दशी रात्रिको श्मशानमें ही यन्त्र लिखना योग्य है । निशंक हो वस्त्रोंको त्याग इकला उक्त कपालके बीचमें साध्यव्यक्तिके सानुस्वार नामको लिख ऊपर नीचे ग्ल-ग्लि-इन अक्षरोंको लिखे । फिर त्रिकोण दो रेखाओंसे वेष्टितकर ऊपरकी मात्रा लगा शरावसंपुटमें रख,

सम्प्रपूजयेत्॥५॥बलिमांसोपहारैस्तु स्वरक्तेन विशेषतः। एतद्यन्त्रं तु तत्रैव निखन्यादथ पूरयेत्॥६॥उपरि ज्वालयेन्नूनं रात्रौ रात्रौ शुचिस्मिते । एवं कृते तृतीयेऽह्नि शत्रोः संजायते ज्वरः ॥ ७ ॥ क्रमेणैव महाव्याधिस्ततो वै मरणं भवेत् । एकजीवं बलिं दत्त्वा उद्धृते जीवते हि सः ॥ ८ ॥ नो चेद्यमपुरं याति नाऽत्र कार्या विचारणा ॥ ९ ॥

इति श्रीयन्त्र चि० ना० उ० म० दा० सप्तमे मारणाधिकारे शत्रुमारणं नाम प्रथमं यन्त्रम् ॥ १ ॥

श्री शिवउवाच॥अथातः संप्रवक्ष्यामि यन्त्रं शत्रुप्रणाशनम्। मारणं प्रबलस्यापि शत्रोर्मृत्युर्न चान्यथा ॥ १ ॥ विषेण हरितालेन भूर्जपत्रे लिखेन्नरः । साध्यनाम लिखित्वा तु लेखन्या काकपिच्छया ॥ २ ॥ लेखने तु विधिः पूर्वमुक्तो यो मारणे हि सः । वारं वारं किमुक्तेन ग्रन्थविस्तारकारणम् ॥ ३ ॥ ह्रींकारगर्भमध्ये तु साध्यनाम प्रतिष्ठितम् । ततस्तद्वेष्टयेत्सम्यक् त्रिकोणं पूर्ववत्पुनः ॥ ४ ॥ कोणे कोणे त्रिशूलं च विलिख्याऽथ प्रपूजयेत् । पूजने विधि-

शत्रुमारणयंत्रम् ।



-बलि, मांस, पूजा सामग्री,स्वरक्त इनसे पूजनकर वहीं गाडदे और हे शुचिस्मिते ! प्रत्येक रात्रिमें उसके ऊपर अग्निको प्रज्वलित करता रहे । इस प्रकार करनेसे तीसरे दिन शत्रुको ज्वर आजायगा और क्रमानुसार रोग प्रबल होकर उसकी मृत्यु हो जायगी । यदि एक जीवको बलि देगा तो प्राणोंसे रक्षित होगा, नहीं तो यमपुरीको जायगा ॥ १-९ ॥

इति यंत्रचि०सातवीं पीठिका मारणाधिकारमें शत्रुमारणं नाम पहलायंत्र॥१॥

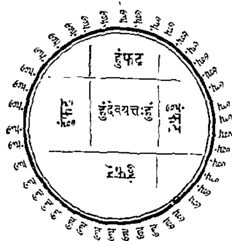
श्रीशिवजी बोले-अब शत्रुनाशक यंत्र कहाजाता है, मारणहीसे प्रबल शत्रुकी मृत्यु होती है अन्यथा नहीं । विधान यथा-विष, हरताल इनको एकत्रितकर काकपक्षकी लेखनीसे भोजपत्रके ऊपर त्रिशूलयुक्त एक त्रिकोण यंत्रको

राद्योक्तः सर्वत्रापि च मारणे ॥ ५ ॥ नराङ्घ्रिनलिकामध्ये क्षिपेद्यन्त्रं सुपूजितम् । खात्वा श्मशानभूमिष्ठा नलिका तु सुयंत्रिका ॥ ६ ॥ अकस्मान्मरणं तस्य जायते नात्र संशयः । अनुग्रहस्तु पूर्वोक्तः सर्वत्रापि च मारणे ॥ ७ ॥

इति यंत्रचि० मारणाधिकरे शत्रुमारण नाम द्वितीयं यन्त्रम् ॥ २ ॥

श्री शिव उवाच॥अथातः संप्रवक्ष्यामि मारणं दूरदेशजम् ।

देशान्तरस्थशत्रुमारणयन्त्रम ।



श्मशानाङ्गारकं घृष्य अजारक्तं तथैव च॥१॥ विषं चैव तु संघृष्य लिखेन्नरकपालके । सम्पुटं चैव संलेख्यं लेखन्या काकपिच्छया । साध्यनाम लिखेन्मध्ये हुंकारपुटितं शुभम् । ततश्चाष्टदलं कृत्वा ग्रहसंस्थापने यथा ॥ ३ ॥ चतुर्दलं तु संलिख्य हुं

–खैंचकर ह्रीं.बीजके मध्यमें साध्यव्यक्तिके नामाक्षरोंको लिखे । लेखनका प्रकार मारणयंत्रमें कह चुके हैं,बारम्बार कहनेसे ग्रंथका विस्तार होगा । परन्तु लेखनी काकपत्रहीकी होनी चाहिये । इस प्रकार यंत्रको निर्माणकर उक्त विधानपूर्वक ही सब जगह पूजन करना चाहिये। पुनः यंत्रका पूजनकर नरनालिकामें रखकर श्मशान भूमिमें खोदकर गाड़दे तो अचानक शत्रुकी मृत्यु हो जायगी १-७

इति यंत्र० सातवी पीठिकाके मा० मे शत्रुमारण नामक दूसरा यंत्र ॥२॥

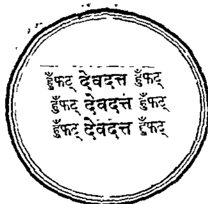
श्रीशिवजी बोले–अब दूरदेशमें स्थित पुरुषोंका मारण यंत्र कहताहूं,श्मशानके अंगारेको विष और अजाके रुधिरमें मिलाकर मनुष्यके कपालके मध्यमें काकपत्रकी लेखनीसे दो रेखायुक्त गोलाकार यंत्रको खैंचकर उसके मध्यमें एक आठ दल खैंचे कि, जैसा ग्रहकांडीमें खैंचा जाताहै । फिर प्रत्येक दलमें

फट्तु दलमध्यतः। ततस्तु वेष्टयेत्सम्यग्वर्तुलं तु द्विरेखया ॥४॥ हुंकारैर्वेष्टयेत्सम्यग्विषमैः सर्वतः प्रिये। ततस्तत्सम्पुटं मेल्य भस्मना पूरयेच्छुभे ॥ ५ ॥ अग्नेरुपरि संस्थाप्य पूरयित्वा यथोदितम्। देशान्तरगतस्यापि शत्रोः संजायते ज्वरः ॥६॥ प्रत्यहं ज्वालनीयं तु स्तोकं स्तोकं तु सुन्दरि। दिने एकाधिके विंशे सर्वं तज्ज्वलयेन्निशि ॥ ७ ॥ तस्मिन्नेव क्षणे शत्रोर्मरणं जायते प्रिये। अनुग्रहे तु पूर्वोक्तं विधानमिति निश्चितम्॥८॥

इति यं० स० पी० देशान्तरस्थशत्रुमारणं नाम तृतीयं यन्त्रम् ॥ ३ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ अतः परं प्रवक्ष्यामि मारणं सर्वदेहिनाम्।

सर्वजनमारणयन्त्रम्।



रुधिरेण मनुष्यस्य श्मशानाङ्गारघर्षणैः ॥ १ ॥ विषेण च तथा लेख्यं कर्पटे वै श्मशानके। साध्यनाम लिखित्वा तु हुँ फट् संपुटितं तथा ॥२॥ एवं त्रिवारं संलिख्य त्रिपंक्तौ तु वरानने। ततस्तद्वेष्टयेत्सम्यग्वर्तुलं तु त्रिरेखया ॥ ३ ॥ राजिकाप्रतिमां कुर्याच्छत्रोश्चरणपांसुना। हृन्मध्ये यन्त्रकं क्षिप्त्वा शत्रोस्ताप्या तु

–हुँ फट् इस बीज मन्त्रोंको लिख बीचके भागमें दो हुंकारके बीच साध्यका नाम लिखे। तत्पश्चात् संपुटमें लेकर भस्मसे पूरितकर अग्निके ऊपर स्थापितकरे। –यदि शत्रु विदेशमें होगा तौभी उसको ज्वर आजायगा। हे सुन्दरि! प्रतिदिन थोड़ा थोड़ाही प्रज्वालनीय है। क्योंकि, २१ में दिन रात्रिके समयमें सबही जलैगा। हे प्रिये! उसी समय शत्रुका मरण होजायगा, पूजनके वृत्तान्तको अनुग्रहकर प्रथम यंत्रमें कह चुके हैं ॥ १–८ ॥

इति यंत्र० मारमें विदेशस्थशत्रुमारण नामक तीसरा यंत्र ॥ ३ ॥

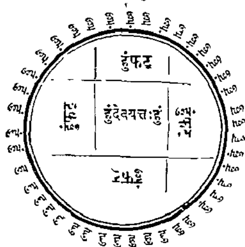
श्रीशिवजी बोले–अब सम्पूर्ण मनुष्योंका मारण कहा जाता है। विधि– मनुष्यके रुधिरमें श्मशानके अंगारेको घिसकर विष मिलाय काकपक्षकी

राद्योक्तः सर्वत्रापि च मारणे ॥ ५ ॥ नराङ्घ्रिनलिकामध्ये क्षिपेद्यन्त्रं सुपूजितम् । खात्वा श्मशानभूमिष्ठा नलिका तु सुयंत्रिका ॥ ६ ॥ अकस्मान्मरणं तस्य जायते नाऽत्र संशयः । अनुग्रहस्तु पूर्वोक्तः सर्वत्रापि च मारणे ॥ ७ ॥

इति यत्रचि० मारणाधिकरे शत्रुमारणं नाम द्वितीयं यन्त्रम् ॥ २ ॥

श्री शिव उवाच॥अथातः संप्रवक्ष्यामि मारणं दूरदेशजम् ।

देशान्तरस्थशत्रुमारणयन्त्रम् ।



श्मशानाङ्गारकं घृष्य अजारक्तं तथैव च॥१॥ विषं चैव तु संघृष्य लिखेन्नरकपालके । सम्पुटं चैव संलेख्यं लेखन्या काकपिच्छया । साध्यनाम लिखेन्मध्ये हुंकारपुटितं शुभम् । ततश्चाष्टदलं कृत्वा ग्रहसंस्थापने यथा ॥ ३ ॥ चतुर्दलं तु संलिख्य हुं

–खैंचकर हीं बीजके मध्यमें साध्यव्यक्तिके नामाक्षरोंको लिखे । लेखनका प्रकार मारणयंत्रमें कह चुके हैं, बारम्वार कहनेसे ग्रंथका विस्तार होगा । परन्तु लेखनी काकपत्रहीकी होनी चाहिये । इस प्रकार यंत्रको निर्माणकर उक्त विधानपूर्वक ही सब जगह पूजन करना चाहिये। पुनः यंत्रका पूजनकर नरनालिकामें रखकर श्मशान भूमिमें खोदकर गाड़दे तो अचानक शत्रुकी मृत्यु हो जायगी १–७

इति यंत्र० सातवीं पीठिकाके मा० में शत्रुमारण नामक दूसरा यंत्र ॥२॥

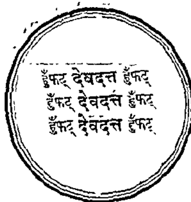
श्रीशिवजी बोले–अब दूरदेशमें स्थित पुरुषोंका मारण यंत्र कहताहूं, श्मशानेके अंगारेको विष और अजाके रुधिरमें मिलाकर मनुष्यके कपालके मध्यमें काकपत्रकी लेखनीसे दो रेखायुक्त गोलाकार यंत्रको खैंचकर उसके मध्यमें एक आठ दल खैचे कि, जैसा ग्रहकांडमें खैंचा जाताहै । फिर प्रत्येक दलमें

फट्तु दलमध्यतः॥ ततस्तु वेष्टयेत्सम्यग्वर्तुलं तु द्विरेखया॥४॥ हुंकारैर्वेष्टयेत्सम्यग्विषमैः, सर्वतः प्रिये। ततस्तत्सम्पुटं मेलय भस्मना पूरयेच्छुभे ॥ ५ ॥ अग्नेरुपरि संस्थाप्य पूरयित्वा यथोदितम्। देशान्तरगतस्यापि शत्रोः संजायते ज्वरः ॥६॥ प्रत्यहं ज्वालनीयं तु स्तोकं स्तोकं तु सुन्दरि। दिने एकाधिके विंशे सर्वं तज्ज्वलयेन्निशि ॥ ७ ॥ तस्मिन्नेव क्षणे शत्रोर्मरणं जायते प्रिये। अनुग्रहे तु पूर्वोक्तं विधानमिति निश्चितम्॥८॥

इति यं० स० पी० देशान्तरस्थशत्रुमारणं नाम तृतीयं यन्त्रम् ॥ ३ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ अतः परं प्रवक्ष्यामि मारणं सर्वदेहिनाम्।

सर्वजनमारणयन्त्रम्।



रुधिरेण मनुष्यस्य श्मशानाङ्गारघर्षणैः ॥ १ ॥ विषेण च तथा लेख्यं कर्पटे वै श्मशानके । साध्यनाम लिखित्वा तु हुँ फट् संपुटितं तथा ॥२॥ एवं त्रिवारं संलिख्य विपक्तो तु वरानने । ततस्तद्वेष्टयेत्सम्यग्वर्तुलं तु त्रिरेखया ॥ ३ ॥ राजिकाप्रतिमां कुर्याच्छत्रोश्चरणपांसुना । हृन्मध्ये यन्त्रकं क्षिप्त्वा शत्रोस्ताप्या तु

—हुँ फट् इस बीज मंत्रोंको लिख बीचके भागमें दो हुंकारके बीच साध्यका नाम लिखे। तत्पश्चात् संपुटमें लेकर भस्मसे पूरितकर अग्निके ऊपर स्थापितकरे। —यदि शत्रु विदेशमें होगा तौभी उसको ज्वर आजायगा। हे सुन्दरि! प्रतिदिन थोड़ा थोड़ाही प्रज्वालनीय है। क्योंकि, २१ में दिन रात्रिके समयमें सबही जलैगा। हे प्रिये! उसी समय शत्रुका मरण होजायगा, पूजनके वृत्तान्तको अनुग्रहकर प्रथम यंत्रमें कह चुके हैं ॥ १–८ ॥

इति यंत्र० सारमें विदेशस्थशत्रुमारण नामक तीसरा यंत्र ॥ ३ ॥

श्रीशिवजी बोले–अब सम्पूर्ण मनुष्योंका मारण कहा जाता है। विधि— मनुष्यके रुधिरमें श्मशानके अंगारेको घिसकर विष मिलाय काकपक्षकी

पुत्तली॥४॥शत्रोः क्रमक्रमेणैव दाहशोपस्तु जायते । शिरोव्यथा च महती तृतीयेऽह्नि प्रजायते॥५॥हस्तपादाङ्गदाहः स्यान्मरणं सप्तमे दिने । जायते नात्र संदेहो विधावपि न संशयः॥६॥

इति श्रीयन्त्र० सर्वजनमारणं नाम चतुर्थं यन्त्रम् ॥ ४ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि यन्त्रं स्त्रीपुंसमारणम् । बिभीतकस्य पत्रे तु श्मशानभस्मना लिखेत् ॥ १ ॥ ऋतुरक्तेन सम्मिश्रं लेखन्या काकपिच्छया । साध्यनाम लिखेन्मध्ये स्तम्भस्तम्भेति सम्पुटम् ॥ २ ॥ ततस्त्रिकोणं संवेष्ट्य पञ्चकोणं तथोपरि । मनुष्यनलिके क्षिप्त्वा नलिकां पूर्य मृत्स्नया ॥ ३ ॥ तन्मूत्रासिक्तया देवि ततस्तत्पूर्य पूरयेत् । भूमध्ये तु खनित्वाथ श्मशाने प्रयतो निशि ॥ ४ ॥ ततः संजायते रोधो रिपोर्मूत्रस्य वै क्षणात् । म्रियते सप्तरात्रेण मोक्षः पूर्वोक्तमार्गतः ॥ ५ ॥ इति नरनारीमारणं पञ्चमं यन्त्रम् ॥ ५॥

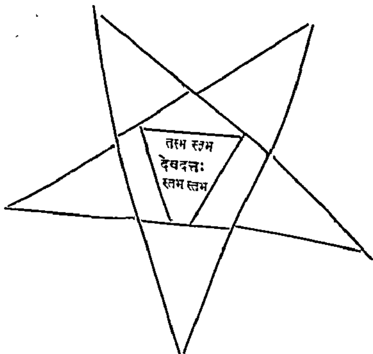
—लेखनीसे श्मशान वस्त्रके ऊपर वर्तुल तीन रेखावाले चक्रको खैंचकर उसके भीतरभी तीन रेखाकी कल्पनाकरै । पुनः प्रत्येक रेखामें हुं फट् इस बीज मंत्रोंसे पुटित सानुस्वार साध्यव्यक्तिके नामको लिखै । इसके पीछे शत्रुके चरणके नीचेकी धूलिको राजिका मिश्रितकर एक प्रतिमा बनावै । उसके हृदयमें शत्रुमारण यंत्रको स्थापितकरै तौ क्रमपूर्वक दाह और व्याधि उत्पन्न होगी और तीसरे दिन सिरमें बड़ी पीड़ा होगी । फिर हाथ पैरमें दाह हो निस्सन्देह सातवें दिन मृत्यु होजायगी ॥ १–६ ॥

इति यंत्र० सर्वजन मारण नामक चौथा यंत्र ॥ ४ ॥

श्रीशिवजी बोले—अब स्त्री और पुरुषके मारणयंत्रको कहता हूं । विधि–स्त्रीके मासिक रुधिरमें श्मशानकी भस्मको मिलाकर बिभीतकके पत्रपर काकपक्षकी लेखनीसे त्रिकोण यंत्रको खैंच पंचकोणयंत्रको उसके बहिर्भागमें खैंचे । इसके पीछे त्रिकोणके भीतर स्तम्भ, स्तम्भ इन बीजोंसे पुटित साध्यव्यक्तिके सानुस्वार नामको लिख यंत्रको नर नलिकामें बंदकर तथा साध्य व्यक्तिका मूत्रसे सींची हुयी मिट्टीसे पूर्णकर नियमपूर्वक रात्रिके समय श्मशानकी भूमिको खोदकर दाबदे तौ उसी समय शत्रुको मूत्र रोग पैदा होकर सात रात्रिमें मृत्यु होजायगी । मोक्ष पूर्व कथनके अनुसार जानलेनी योग्य है १–५

इति यंत्रचिन्तामणिकी० नर नारी–मारण नामक पांचवां यंत्र ॥ ५॥

नरनारीमारणयंत्रम्।



चिन्तामणौ कल्पवरे सुयन्त्रे श्रीचन्द्रचूडस्य मुखाब्धिनिर्गते। नाम्ना महामारणसंज्ञके तु संपूर्णतां सप्तमपीठिका गता॥ १॥ पञ्चैव यन्त्राणि महाधिकारे सम्मारणे पञ्चमकेऽतिरौद्रे। संहारभूतानि सुकीर्तितानि मयैव देवि (वी) पुरतः स्फुटानि॥२॥

इति श्रीयन्त्र चिं० मा० प्र० सि० दामोदरपण्डितोद्धृते सप्तम पीठिकायां मारणाधिकारः समाप्तः॥

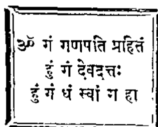
श्रीचन्द्रचूड शिवजी महाराजके मुखकमलसे निकले चिन्तामणि नाम मारण यन्त्रका पंचयन्त्रसहित सप्तम पीठिका समाप्त हुई॥ १॥ हे देवि! अतिरौद्र संमारण नाम इस पांचवें अधिकारमें संहाररूप पाँच ही यन्त्र मैंने स्फुटतासे तुम्हारे सम्मुख वर्णन किये हैं॥१॥२॥इति मारणाधिकार समाप्त॥

अथोच्चाटनाधिकारः।

देवाधिदेवस्य सदाशिवस्य त्रैलोक्यवन्द्यस्य पदारविन्दम्। कायेन वाचा मनसा च नत्वा दामोदरो भार्गववंशजातः॥१॥ प्रवक्ष्यते संप्रति षष्ठसंज्ञमुच्चाटनं नाम महाधिकारम्। यन्त्राणि बीजानि परिस्फुटानि शिवाज्ञया लोकहिताय विप्रः ॥ २ ॥

श्री शिव उवाच॥अतः परं प्रवक्ष्यामि शत्रोरुच्चाटनं परम्। अनामिकाया रक्तेन भूर्जपत्रे वरानने ॥१॥ गं गणपतिबीजानि

शत्रूच्चाटनयंत्रम्।



प्रहितं प्रणवादिकम्। एकपंक्तौ समालेख्यं हुं गं नाम विलिख्य च ॥ २॥ पंक्तौ द्वितीये संलेख्य तृतीये विलिखेत्ततः॥हुं गं धं स्वांगहेति लिखित्वा क्रमतो नरः ॥ ३ ॥ ततस्तद्वेष्टयेत सम्यक् चतुष्कोणं द्विरेखया। रक्ताम्बरधरो देवि रक्तमाल्यानुलेपनः ॥ ४॥ चतुर्दश्यां साधकस्तु महारात्रौ लिखेत्क्रमात्। पूजनं रक्तकुसुमै रक्तगन्धैः फलैः शुभैः ॥५॥कुमारभोजनं रात्रौ

श्रीशिवजीकी आज्ञासे मैं दामोदर नाम पंडित देवाधिदेव तीनों लोकोंके वन्दन करनेयोग्य सदाशिवके चरणकमलोंको शरीर, वाणी मनसे नमस्कार कर उच्चाटन नाम महाधिकारको लोकोंके उपकारके लिये वर्णन करता हूं कि, जिसमें यन्त्र और बीज स्फुटतासे वर्त्तमान हैं ॥ १ ॥ २ ॥

श्रीशिवजी बोले–अब शत्रुका उच्चाटन कहा जाता है। विधि–अपनी अनामिका अंगुलिके रुधिरसे भोजपत्रके ऊपर दो रेखा मिलाकर एक चतुष्कोण यन्त्रको खैंच उसके भीतर तीन रेखा खैंचे। प्रथम रेखामें 'ओं गणपति प्रहितम्' दूसरीमें हुं गं आदिमे लगा सानुस्वार साध्यव्यक्तिके नामको, तीसरीमें हुं गं धं स्वांग हा इनको लिखे। तत्पश्चात् साधक लालवस्त्र धारणकर रक्तमाला और रक्त अनुलेपनसे युक्त हो कृष्णपक्षकी रात्रिमें रक्तपुष्प, रक्तगंध, स्वच्छफल, इनसे यन्त्रका पूजनकर यथाशक्ति दक्षिणा दे कुमारको भोजन कराकर

यथाशक्त्या तु दक्षिणाम् । ध्यानं तु देवदेस्य गणनाथस्य सुन्दरि ॥ ६ ॥ नीलाञ्जनाभं गजवक्त्रवर्यं शत्रुं गृहीत्वा निजपुष्करेण । उच्चालयन्तं गगनं गणेशं ध्यात्वा तु नित्यं विधिवन्मनुष्यः ॥ ७ ॥ उच्चाटयेदत्र न संशयोऽस्ति दिनैस्तथैकाधिकविंशकेन । अयं क्रमो लेखनपूजेन च सर्वत्र उच्चाटकृताधिकारे ॥ ८ ॥ खण्डं कृत्वा तु तद्यन्त्रमुच्छिष्टौदनमिश्रितम् । दीयते भक्षणार्थं च वायसेभ्योऽन्तिमे दिने ॥ ९ ॥

इ० श्री० यं० चि० ना० म० क० प्र० सि० उ० सं० अष्टमपीठिकाया-

मुच्चाटनाधिकारे शत्रूच्चाटनं नाम प्रथम यन्त्रम् ॥ १ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि सद्य उच्चाटनं परम् । विषेण तालकेनैव गोन्दतहरितालके ॥ १ ॥ चित्रकस्य रसेनैव लिखेत् काकं तु कर्पटे । श्मशानजे तु लेखन्या काकपिच्छसमुद्भवा ॥ २ ॥ साध्यनाम लिखेत्पश्चाद्वायसोदरमध्यतः । पूजने लेखने चैव पूर्वोक्तस्तु विधिः स्मृतः ॥ ३ ॥

गणोंके नाथ देव देवेश्वर श्रीगणेशजीका ध्यान करे । ध्यानका क्रम इस प्रकार है– अंजन पर्वतके समान नीलवर्णवाले, गजमुखके धारण करनेवाले शत्रुको अपने शुंडदंडसे ग्रहणकर आकाश मंडलमें उछालनेवाले श्रीगणनाथका विधिपूर्वक ध्यानकर उच्चाटन प्रयोग करना योग्य है । इस विधानके करनेसे २१ दिनमें निश्चयही शत्रुका उच्चाटन होजायगा।इस प्रकारही सम्पूर्ण उच्चाटन प्रयोगोंका लेखन पूजन करना चाहिये । इसके पीछे उक्त यन्त्रके टुकडे करके झूठे भातमें मिलाकर अंतके दिन कउओंको खिलादे ॥ १–९ ॥

इति यंत्रचिन्तामणिकी आठवीं पीठिकाके उच्चाटनाधिकारमें

शत्रु उच्चाटननाम पहला यंत्र ॥ १ ॥

श्रीशिवजी बोले–अब शीघ्र उच्चाटन कारक यंत्रको कहताहूं । विधि–विष, तालक, गोदन्ती हरताल, चीता इन सब वस्तुवोंके रसको एकत्रितकर काकपत्रकी लेखनीसे श्मशान वस्त्रके ऊपर एक काककी मूर्ति निर्माणकर उसके उदरमें साध्यव्यक्तिके सानुस्वार नामको लिख पहली विधिके अनुसार पूजन करे । इसके पीछे विभीतक वृक्षके दक्षिणभागमें रात्रिके समय नियममें तत्पर हो साधकव्यक्ति उस काककी प्रतिमाको अधोमुखकर टांगदे । इस विधिके

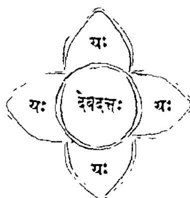
अधोमुखं तु तत्कालं लम्बमानं तु दक्षिणे । विभीतकस्य वृक्षे तु बन्धयेत्प्रयतो निशि ॥ ४ ॥ एवं कृते तृतीयेऽह्नि स्थानादुच्चाटनं भवेत् । यावद्यन्त्रं तु तत्रस्थमुद्विग्नस्तावदेव हि॥५॥ न रोचते गृहं तस्य सुखं न लभते क्वचित । विदेशगमनं तस्य संशयेन च जीवितम्॥६

सद्यउच्चाटनयन्त्रम् ।



इति यन्त्रचि० अ० पी० सद्यउच्चाटनकर नाम द्वितीयं यन्त्रम् ॥ २ ॥

सर्वजनोच्चाटनयन्त्रम् ।



श्रीशिव उवाच ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि उच्चाटं सर्वदेहिनाम् । काकोलूकस्य रक्तेन भूर्जपत्रे लिखेन्नरः ॥ १ ॥ मध्ये नाम लिखित्वा तु वर्तुलं वेष्टयेत्ततः। चतुर्दलं ततः कुर्याद्रेखाद्वित यशोभितम् ॥२॥ यकारं दलमध्ये तु विसर्गान्तं प्रतिष्ठितम् ।पूजाक्रमस्तु पूर्वोक्तो

-करनेसे तीसरे दिन स्थानसे उच्चाटन होजायगा और तबतक उद्विग्न रहेगा कि, जबतक वह प्रतिमा टंगी रहेगी न तो घर उसको प्यारा होगा और न कहीं उसको सुखप्राप्त होगा । विदेश जाने परभी इसको सुख न होगा । किन्तु संशय पूर्वक ही जीवित रहैगा ॥ १–६ ॥

इति यन्त्र चिन्तामणिकी आठवीं पीठिकाके उच्चाटनाधिकारमें
शीघ्र उच्चाटनकारक दूसरा यंत्र ॥ २ ॥

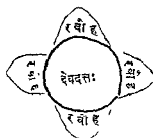
श्रीशिवजी बोले–अब सम्पूर्ण मनुष्योंका उच्चाटन विषय कहा जाता है । काक और उल्लूके रुधिरसे भोजपत्रके ऊपर गोलाकर यंत्रको खैंचकर पूर्वादि चारों दिशाओंमें दो रेखायुक्त चार कमल दल खैंच प्रत्येक दलमें विसर्गयुक्त यकारवर्णको स्थापितकर मध्यभागमें सानुस्वार साध्यव्यक्तिके नामको लिख-

ध्यानं देवविसर्जनम् ॥ ३ ॥ खण्डं कृत्वा तु तद्यन्त्रमुच्छि-ष्टौदनमिश्रितम् । दीयते भक्षणार्थं च वायसेभ्योऽन्तिमे दिने ॥ ४ ॥ दिशं संत्यज्य यात्येव ग्रामस्यैव तु का कथा ॥ ५ ॥

इति यं० चिं० दा० सर्वजनोच्चाटनं नाम तृतीयं यन्त्रम् ॥ ३ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि शत्रोरुच्चाटनं परम् । निम्बपत्ररसैर्लेख्यं लेखन्या काकपिच्छया ॥ १ ॥ भूर्जपत्रोपरिक्षिप्तं विधिः पूर्वोक्त एव हि । मध्ये नाम लिखित्वा तु वर्तुलं वेष्टयेत्ततः॥२॥चतुर्दलं ततः कुर्याद्बीजयुक्तं मनोहरम् ।

शत्रोरुच्चाटनयंत्रम् ।



र वौ ह इति बीजानि दलमध्ये पृथक् पृथक्॥ ३ ॥ संपूज्य पूर्ववत्पश्चान्निखन्यादथ पूरयेत् । अधोमुखं तु तद्यन्त्रं पूर्वोक्तविधिना ततः ॥४॥ एवं कृते सप्तमेऽह्नि उच्चाटयति नान्यथा । भ्रमेद्देशे विदेशे च तृणवत्परिभूयते ॥ ५ ॥

इति श्रीयन्त्र चि० शत्रोरुच्चाटनं नाम चतुर्थयन्त्रम् ॥ ४ ॥

–उक्त विधिसे पूजनकर ध्यानसे विसर्जनकर यन्त्रके टुकडे २ करके जूंठे भातमें मिलाकर अन्तके दिन कउओंको खिलादे तो साध्यव्यक्ति दिशाको छोडकर चला जायगा ग्रामकी तो बातही क्या है ॥ १–५ ॥

इति श्रीयन्त्र० उ० सर्वजनोच्चाटननाम तीसरा यन्त्र ॥ ३ ॥

श्रीशिवजी बोले–अब शत्रुका परम उच्चाटन कहा जाता है । नीमके पत्तोंके रससे भोजपत्रके ऊपर काकपंखकी लेखनीसे गोलाकार चक्र खैंचकर दो रेखायुक्त दल लगा र वौ ह इन वर्णोंको प्रत्येक दलमें लिख सानुस्वार साध्यव्यक्तिके नामको लिखै । उपरोक्त यन्त्रकी समान इसका विधानभी पहलेकी समान है । इसके पश्चात् उक्त विधान पूर्वक पूजनकर भूमि खोदकर अधोमुख दाबदे यदि देश अथवा विदेशमें भ्रमण करता भी होगा तौभी तृणवत् त्यागकर सातवें दिन उच्चाटनको प्राप्त होगा इसमें किसी प्रकारका संदेह नहीं ॥

इति यन्त्रचिन्तामणिमें शत्रूच्चाटन नामक चौथा यन्त्र ॥ ४

श्रीशिव उवाच ॥ शृणु देवि प्रवक्ष्यामि यन्त्रमुच्चाटनं

स्त्रिया उच्चाटनयन्त्रम् ।



स्त्रियाः। गर्दभस्य तु रक्तेन लेखन्या काकपिच्छया ॥ १ ॥ फलके चंलिखित्वा तु वर्तुलं वेष्टयेत्ततः। ततश्चाष्टादलं कुर्याद्बीजयुक्तं मनोहरम् ॥ २ ॥ खकारं सविसर्गान्तं ह्रींकारं तदनन्तरम्। एवं यन्त्रं तु संलिख्य पूजयित्वा विधानतः ॥ ३ ॥ निखन्य भूमौ संपूर्य पूर्ववच्चाप्यधोमुखम् । कृते ह्येवं तृतीयेऽह्नि शत्रोरुच्चाटनं भवेत् ॥ ४ ॥ उच्चाटयति स्थानात्तु चलते वायुपर्णवत् ॥ ५ ॥

इ० य० चि० ना० म० प्र० उ० सं० अ० पी० स्त्रीणां

सद्यउच्चाटनं नामपञ्चमं यन्त्रम् ॥ ५ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ शृणु देवि प्रवक्ष्यामि त्रैलोक्योच्चाटनं परम् । कृष्णकुकुटरक्तेन भूर्जपत्रे लिखेन्नरः ॥ १ ॥ साध्यनाम

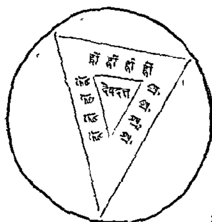
श्रीशिवजी बोले–हे देवि ! अब स्त्रीके उच्चाटनका यन्त्र कहा जाता है। विधि–गधेके रुधिरसे काठके टुकडेके ऊपर काकपत्रकी लेखनीसे गोलाकार चक्र खैंचकर आठ दलसे सुशोभितकर विसर्गान्त खकार और ह्रीं बीजको प्रत्येक दलमें लिखकर चक्रके मध्यमें सानुस्वार साध्यव्यक्तिके नामको लिखे। इसके पीछे विधिपूर्वक पूजनकर भूमि खोद अधोमुख दाबदे तो तीसरे दिन शत्रुका उच्चाटन होगा और उच्चाटनको प्राप्त हो पूर्ण वायुसे उडाया हुआ पत्तलके समान गमन करैगा ॥ १–५ ॥

इति यन्त्र चिन्तामणिकी आठवीं पीठिकाके उच्चाटनाधिकारमें स्त्रीउच्चाटन नामक पांचवां यन्त्र ॥ ५ ॥

श्रीशिवजी बोले–हे देवि ! अब त्रिलोकीका उच्चाटन कहा जाता है श्रवण करो। विधि–कालेमुर्गेके रुधिरसे भोजपत्रके ऊपर एक बडा त्रिकोणयन्त्र खैंचकर

लिखित्वा तु त्रिकोणं वेष्टयेत्ततः।पुनस्त्रिकोणं संलिख्य द्वितीयं तु वरानने ॥ २ ॥ ततोपरि विभागे च ह्रींकाराणां चतुष्टयम् । एतद्विभागे संलिख्य बीजानि रविसंख्यया ॥ ३ ॥ परितो वर्तुलं कृत्वा पूजयेत् पूर्ववत्पुनः। एवं कृत्वा तु तद्यन्त्रं बध्नीयाच्च शुनो गले॥४ यथायथा श्वा व्रजति तथा सोऽपि क्षणेन हि । उच्चाटयेन्न संदेहस्तत्क्षणात्सुरसुन्दरि॥५

त्रैलोक्योच्चाटनयन्त्रम् ।



इति यं० चिं० ना० म० प्र० अ० उ० दा० त्रैलोक्योच्चाटनं नाम षष्ठं यन्त्रम् ॥ ६ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि यन्त्रमुच्चाटनं परम्। निशाचररसैर्लेख्यं भूर्जपत्रे न संशयः ॥ १ ॥ साध्यनाम लिखित्वा तु वर्तुलं वेष्टयेत्ततः । उपर्यष्टदलं कृत्वा बीजयुक्तं

–उसके भीतर एक ह्रस्व त्रिकोण और खैंचकर गोलाकार चक्रसे गर्भितकर ह्रस्व त्रिकोणके भीतर साध्यव्यक्तिके नाम और दीर्घत्रिकोणकी प्रतिरेखाके नीचे चार चार ह्रीं बीजोंको लिखे । पुनः उक्त विधानपूर्वक पूजनकर कुत्तेके गलेमें बांध दे तो जहाँ२ यह कुत्ता जायगा वहीं२ उच्चाटनको प्राप्त हो उसी समय शत्रुभी जायगा । हे सुन्दरि ! इसमें किसी प्रकारका संदेह नहीं है ॥१–५॥

इति यन्त्र चिन्तामणिकी आठवीं पीठिकामें उच्चाटनाधिकारमें त्रैलोक्योच्चाटन नामक छठा यन्त्र ॥ ६ ॥

श्रीशिवजी बोले–अब परम उच्चाटन यन्त्रको कहता हूं । निशाचर (हल्दी. वृक्ष) के रससे भोजपत्रके ऊपर एक ह्रस्व गोलाकार चक्रको खैंचकर उसके बाहिरी भागमें अष्टदल लगाकर एक बडा गोलाकार चक्र खींचे कि जिसके खैंचनेसे दलादिक गर्भगत होजाय । पुनः प्रतिदलमें फट् इस बीजको लिख-

मनोहरम् ॥ २ ॥ ततश्च लेख्यं फडिति प्रत्येकं दलमध्यतः ।

परमोच्चाटनयन्त्रम्



ततस्तद्वेष्टयेत्सम्यग्वर्तुलं रेखयैकया ॥ ३ ॥ संपूज्य विधिवत्पश्चाद्यन्त्रं संचूर्णयेत्ततः । खाने पाने च दातव्यमुच्चाटो जायते ध्रुवम् ॥ ४ ॥ हरिद्रातरुविख्यातो गुप्तनामा निशाचरः ॥ ५ ॥

इति यन्त्रचिं० परमोच्चाटनं नाम सप्तमं यन्त्रम् ॥ ७ ॥

चिन्तामणौ यन्त्रवरे सुकल्पे श्रीचन्द्रचूडस्य मुखाद्विनिर्गते।
उच्चाटनंनाम महाधिकारे प्रकाशिता ह्यष्टमपीठिकेयम् ॥ १ ॥
समैव यन्त्राणि महाधिकारे उच्चाटनं श्रीशिवभाषितेऽस्मिन् ।
रहस्यभूतानि तु कीर्तितानि विप्रेण दामोदरसंज्ञकेन ॥ २ ॥

इति यन्त्र० ना० म० प्र० उ० अ०ट० दा० अष्टम पीठिकायुतोच्चाटनाधिकारः समाप्तः ॥

–हस्व गोलाकार चक्रके भीतर साध्यव्यक्तिके नामको लिख उक्त विधान पूर्वक पूजन कर यन्त्रका चूरणकर खाने पीनेमें देनेसे उच्चाटन होजाता है । हलदीके वृक्षको निशाचर कहते हैं ॥ १–५ ॥

इति यन्त्र चिन्तामणिकी आठवीं पीठिकाके उच्चाटन अधिकारमें परमोच्चाटन नामक सातवाँ यन्त्र ॥ ७ ॥

श्रीचन्द्रचूड शिवजी महाराजके मुखकमलसे निकले यन्त्र श्रेष्ठ चिन्तामणि नाम सुकल्पका उच्चाटन नाम महाधिकारमें अष्टम पीठिका समाप्त हुई । इस शिवोक्त महाधिकारमें दामोदरजीने रहस्यभूत सातही उच्चाटन यन्त्रोंका वर्णन किया है ॥ १–२ ॥

इति श्रीयन्त्रचिंतामणौ नाम्नि महाकल्पे प्रत्यक्षसिद्धिप्रदे उमामहेश्वर संवादे दामोदर पण्डितोद्धृते बलदेवप्रसादकृत भा० टी० युत अष्टमपीठिकामें उच्चाटनाधिकार समाप्त ॥

अथ शान्त्यधिकारः ।

यः पूर्वं जनकादेशादरण्यं समपद्यत । निस्तीर्य प्राप्तवान् सीतां तं रामं प्रणतोऽस्म्यहम् ॥ १ ॥ अधिकारं महद्वक्ष्ये सर्वोपद्रवनाशनम् । नवम्यां पीठिकायां तु शान्तिपुष्टिकरं परम् ॥२॥ शान्तरक्षाकरं नाम ख्यातं सर्वत्र दुर्लभम् । न देयं यस्य कस्यापि यदीच्छेत्सिद्धिमात्मनः॥३॥नारीणां मनुजेषु शान्तिककरान्रक्षाकरान्सर्वदा बालानां च तथैव सर्वसुखदान्मंत्राणि यन्त्राणि ते । तांश्चोद्धृत्य महागमाच्च विविधान् गङ्गाधरस्यात्मजो नित्यं कलमतिः प्रवक्ष्यति महादामोदरः साम्प्रतम्॥४॥

श्रीशिव उवाच ॥ शृणु देवि परं गुह्यं यन्त्रं रक्षाकरं परम् । बालस्त्रीपुरुषाणां च महारक्षाकरं स्मृतम् ॥ १ ॥ कांस्यपात्रे तु संलेख्यं सुतिथौ शोभने दिने । रोचनाकुङ्कुमेनैव कर्पूरेण विशेषतः ॥ २ ॥ मृगनाभिसमायुक्तं जातीकाष्ठेन संलिखेत् । ऊर्ध्वमष्टाभीरेखाभिस्तिर्यग्रेखास्तथैव च ॥ ३ ॥ एवमेकोनपञ्चाशत् कोष्ठाश्च प्रभवन्ति हि । ईशानादिक्रमेणैव स्वराः कोष्ठेषु संलिखेत् ॥ ४ ॥ तेनैव क्रमतो लेख्याः शेषकोष्ठेषु

जो श्रीरामजी महाराज जनक (पिता) की प्रतिज्ञाको पूर्णकर श्रीसीताजीको प्राप्त करते भये, मैं उन श्रीरामचन्द्रजीको नमस्कार करताहूँ॥१॥अब नववीं पीठिका कही जाती है कि जिसमें शांति पुष्टिकारक सम्पूर्ण उपद्रवोंका नाशक महाधिकार कहा जायगा॥२॥सिद्धिका इच्छा करनेवाला साधक सर्वत्र दुर्लभ इस शांतरक्षाकरनामयंत्रको विना अधिकारीके दूसरेको न दे॥३॥अब स्त्री पुरुष बालक इनकी शांति रक्षा और बल इत्यादिकके देनेवाले मन्त्र तथा यन्त्रोंको उद्धारकर अतिनिर्मलबुद्धिवाले गंगाधरजीके पुत्र दामोदरजी वर्णन करते हैं॥४॥

शिवजी बोले–हे देवि ! बाल, वृद्ध, स्त्री पुरुष इनके महारक्षाकारक यन्त्रको कहता हूँ सुनो । विधान–शुभदिन और शुभ तिथिमें गोरोचन, कुंकुम, कपूर, कस्तूरी इन सब वस्तुओंको एकत्रितकर चमेलीकी कलमसे कांसीके पात्रके ऊपर आठ लम्बी और आठ चौडी रेखा खेंचकर४९ कोठेके यन्त्रको निर्माण कर प्रत्येक रेखाके मुखको त्रिशूलसे युक्तकरके पूरब पश्चिमभागमें खाने २ में बीज लिखकर ईशानकोनसे लेकर प्रतिरेखामें अकारादि स्वरयुक्त व्यञ्जन वर्णोंको क्रमानुसार भरदे । इसके पीछे श्वेत तथा लाल कमल, मालती, जुहि,

व्यञ्जनाः । एवं संलिख्य बीजानि त्रिशूलानि लिखेन्नरः ॥५॥

शान्तिपौष्टिकयन्त्रम् ।

क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं
अं	आं	इं	ईं	उं	ऊं	ऋं
जं	झं	ञं	टं	ठं	डं	ॠं
छं	भं	मं	यं	रं	ढं	लृं
चं	बं	सं	हं	ळं	णं	ॡं
ङं	फं	षं	शं	वं	तं	एं
घं	पं	नं	धं	दं	थं	ऐं
गं	खं	कं	अः	अं	औं	ओं
क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं

प्रतिरेखोपरि नूनं चतुर्दिक्षु क्रमाल्लिखेत् । क्रौंकाराः सप्त संलेख्याः पूर्वपङ्क्तौ तु पश्चिमे ॥ ६ ॥ एवं संलिख्य तद्यन्त्रं पूजयेद्भक्तिभावतः । पुण्डरीकैः सिताम्भोजैः शतपत्रैर्मनोहरैः ॥ ७ ॥ मालतीयूथिकाभिश्च केतकैर्मल्लिकैस्तथा । बकुलैश्च यथालाभं फलैः कालोद्भवैः शुभैः ॥ ८ ॥ निर्गन्धं रक्तवर्णं च पुष्पं यत्नेन वर्जयेत् । सकर्पूरैश्च ताम्बूलैर्धूपैर्दीपैः सिताम्बरैः ॥ ९ ॥ दिनत्रयं तु सम्पूज्य नैवेद्यैर्विविधैः प्रिये । जपेत्सप्तशतीं नित्यं ब्राह्मणांस्तु दिनत्रयम् ॥ १० ॥ संभोज्य पायसेनैव यथेष्टेन घृतेन तु । त्रिदिनं भूमिशायी स्याद्रोजनाद्रन्थ-

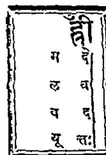
केतकी, चमेली यथालाभ बकुल, ऋतुफल, कर्पूरयुक्त तांबूल, धूप, दीप, गंध, श्वेतवस्त्र, नैवेद्य इत्यादिकोंसे यन्त्रेश्वरका पूजनकर ब्राह्मणद्वारा सप्तशतीका जाप कराता हुआ पायस घृत इनसे यथेष्ट ब्राह्मणोंको तीन दिनतक भोजनकरा भूमिमें

रोचनाम् ॥ ११ ॥ उद्धृत्य गुटिकां कुर्यात्त्रिलोहैर्वेष्टयेत्ततः । तच्छेषं चैव पातव्यं पानीयेन वरानने ॥ १२ ॥ परस्य जायते क्षोभो विद्यया वै नियोजितः । गुटिकां धारयेद्देवि बाहुमूले गलेऽथवा ॥ १३ ॥ धारणात्तस्य यन्त्रस्य उपसर्गः प्रशाम्यति। अलक्ष्मीः कलहश्चैव दौर्भाग्यं च विशेषतः॥१४॥ यत्परेण कृतं किंचित्तत्सर्वं च प्रणश्यति । शान्तिकं पौष्टिकं नाम देवानामपि दुर्लभम्।प्रथमं यन्त्रराजाख्यं सद्यः प्रत्ययकारकम्॥१५ ॥

इति यंत्र० शान्त्यधिकारे शान्तिकं पौष्टिकं नाम प्रथमं यन्त्रम् ॥ १ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ शृणु देवि प्रवक्ष्यामि यन्त्रं चारिनिवारणम्। सर्पव्याघ्रभयं नास्ति यन्त्रे करतले

सर्पादिभयनाशनयंत्रम्।



स्थिते ॥ १ ॥ पूर्वोक्तो लेखनविधिर्द्रव्यं पूर्वोक्तमेव च । सर्वत्र शान्तिके देवि विधिरन्यो न विद्यते ॥ २ ॥ पूजनं चापि पूर्वोक्तं नियमश्चापि तादृशः । भूर्जपत्रे तु संलेख्यं द्वितीयं यन्त्रमुत्तमम् ॥३ ॥ ह्रींकारगर्भमध्ये तु साध्यनाम लिखेन्नरः । तत्तत्पादे तु संयोज्यं मकारं तदनन्तरम् ॥ ४ ॥ लकारं

-शयन पूर्वक करे । फिर भोजनमेंसे गंध, रोचनको निकालकर गुटिका बना त्रिलोहके तावीजमें बंदकर गले अथवा बाहुमूलमें धारण करे । हे वरानने ! शेषभागको पानीमें मिलाकर पीवे, इस यन्त्रके धारण करनेसे शत्रुको क्षोभ होगा और उपद्रव, दारिद्र, क्लेश, दौर्भाग्य अथवा अन्यकृत अभिचारादिका सम्पूर्ण दोष शांत होजायगा । शांतिक पौष्टिक नाम देवताओंको भी दुर्लभ आदिभूत यह यन्त्रराज शीघ्र विश्वासदायक है ॥ १–१५ ॥

इति यन्त्र० शान्तिपौष्टिक नामक पहला यन्त्र ॥ १ ॥

श्रीशिवजी बोले-हे देवि ! अब अरिनिवारण यन्त्रको कहता हूं श्रवण करो । इस यन्त्रको पास रखनेसे सर्प व्याघ्र इत्यादिकोंका भय न होगा । इसके लेखन द्रव्यभी पूर्वोक्त हैं । हे देवि ! सम्पूर्ण शान्तिक विधियोंकी यकही विधि है दूसरी नहीं, पूर्वोक्त कथनके अनुसारही पूजन तथा नियमकी क्रिया है । भोजपत्रके ऊपर चतुष्कोण यन्त्रको लिखकर ह्रींबीजकी मात्राके भीतर

च वकारं च यकारान्तं प्रतिष्ठितम्। ऊकारस्वरसंयुक्तं शान्तिबीजं मनोहरम् ॥ ५ ॥ ततस्तद्वेष्टयेत्सम्यक् चतुष्कोणं द्विरेखया। त्रिलोहवेष्टितं कृत्वा बाहुमूले गलेऽथवा ॥ ६ ॥ सर्पव्याघ्रभयं हन्ति हन्ति चौरभयं तथा। विविधोपद्रवं हन्ति नात्र कार्या विचारणा ॥ ७ ॥

इति यंत्रचि० ना० म० प्र० उ० न० शा० दा० सर्पव्याघ्रचौरभयनाशनं नाम द्वितीयं यन्त्रम् ॥ २ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ शृणु देवि प्रवक्ष्यामि यन्त्रं दौर्भाग्यनाशनम्। नारीणां च विशेषेण नराणां चैव सर्वदा ॥ १ ॥ लेखने तु विधिः प्रोक्तो द्रव्यं पूर्वोक्तमेव च। लेखनी पूर्वनिर्दिष्टा भूर्जपत्रे लिखेन्नरः ॥ २ ॥ साध्यनाम लिखित्वा तु त्रिकोणं तु द्विरेखया। तस्योपरि चतुष्कोणं रेखाद्वितयशोभितम् ॥ ३ ॥ कोणे कोणे त्रिशूले तु पूर्वोक्तविधिना ततः। त्रिलोहवेष्टितं कृत्वा बाहुमूले गलेऽथवा ॥ ४ ॥ धारयेद्विधि-

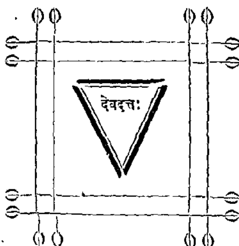
---

–साध्यव्यक्तिके नामको लिखे और ह्रींबीजके पार्श्वमें मकार, ढकार, वकार, यकार ऊकारकोभी मिलाकर त्रिलोह वेष्टितकर बाहुमूल अथवा गलेमें धारण करे तो सर्प, व्याघ्र, चोर इत्यादिकोंका भय न होगा। अधिक क्या? अनेक प्रकारके उपद्रव शान्त होजायँगे ॥ १–७ ॥

इति यन्त्रचिन्ताम० नवमीं पीठिकाके व० मि० भा० टी० शान्तिअधिकारमें सर्प-व्याघ्र चौर-भयनिवारण नामक दूसरा यन्त्र ॥ २ ॥

श्रीशिवजी बोले–हे देवि! नारी तथा नरोंकी विशेषतासे दौर्भाग्यताके नाश करनेवाले यन्त्रोंको कहता हूं। लेखनविधि पूर्वोक्तही होने योग्य है, यथा-चमेलीकी लेखनीमे भोजपत्रके ऊपर दो रेखावाले त्रिकोणयन्त्रको खींचकर उसके बहिर्भागमें दो रेखायुक्त चतुष्कोणयन्त्र खैंचकर प्रतिरेखाको त्रिशूलसे मिश्रित करै, तत्पश्चात् त्रिकोणके भीतर साध्यव्यक्तिके नामको लिख उक्तविधिसे पूजनकर त्रिलोहके तावीजमें रखकर उपरोक्त विधिसे नारी

वन्ध्यागर्भधारणयन्त्रम्।



तत्पूर्वं नारी वा पुरुषोऽथवा। विविधोपद्रवं हन्ति वन्ध्या गर्भवती भवेत् ॥५॥ सौभाग्यमतुलं प्राप्य देववन्मोदते सदा॥६॥

इति श्रीयन्त्रचि० ना० म० प्र० उ० नवमपी० शान्त्य० सौभाग्यजननं वन्ध्यागर्भधारणं नाम तृतीय यन्त्रम् ॥ ३ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि ज्वरनिर्नाशनं परम्। भूतजं तु ज्वरं हन्ति विद्यते वैद्यकोदितम्॥१॥बालानां

–अथवा पुरुष धारण करे तो अनेकप्रकारके उपद्रव शांत होंगे, वंध्या स्त्री गर्भवती होगी। अनेक प्रकारके सौभाग्यको प्राप्त होकर सदा देवताकी समान सुखको प्राप्त होंगे ॥ १–६ ॥

इति यन्त्रचिन्तामणिकी नवमीं पीठिकाके भ० मि० भा० टी० शान्तिअधिकारमें सौभाग्यजनन वन्ध्यागर्भधारण नामक तीसरा यन्त्र ॥ ३॥

श्रीशिवजी बोले–अब ज्वरके नाशकरनेका यन्त्र कहता हूं, यह वैद्यशास्त्रमें कहा हुआ यन्त्रराज भूतमात्रके ज्वरको नाश करताहै। इस यन्त्रराजका पाठ·

च वकारं च यकारान्तं प्रतिष्ठितम्। ऊकारस्वरसंयुक्तं शान्तिबीजं मनोहरम् ॥ ५ ॥ ततस्तद्वेष्टयेत्सम्यक् चतुष्कोणं द्विरेखया। त्रिलोहवेष्टितं कृत्वा बाहुमूले गलेऽथवा ॥ ६ ॥ सर्पव्याघ्रभयं हन्ति हन्ति चौरभयं तथा। विविधोपद्रवं हन्ति नात्र कार्या विचारणा ॥ ७ ॥

इति यंत्रचि० ना० म० प्र० उ० न० शा० दा० सर्पव्याघ्रचौरभयनाशनं नाम द्वितीयं यन्त्रम् ॥ २ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ शृणु देवि प्रवक्ष्यामि यन्त्रं दौर्भाग्यनाशनम्। नारीणां च विशेषेण नराणां चैव सर्वदा ॥ १ ॥ लेखने तु विधिः प्रोक्तो द्रव्यं पूर्वोक्तमेव च। लेखनी पूर्वनिर्दिष्टा भूर्जपत्रे लिखेन्नरः ॥ २ ॥ साध्यनाम लिखित्वा तु त्रिकोणं तु द्विरेखया। तस्योपरि चतुष्कोणं रेखाद्वितयशोभितम् ॥ ३ ॥ कोणे कोणे त्रिशूले तु पूर्वोक्तविधिना ततः। त्रिलोहवेष्टितं कृत्वा बाहुमूले गलेऽथवा ॥ ४ ॥ धारयेद्विधि-

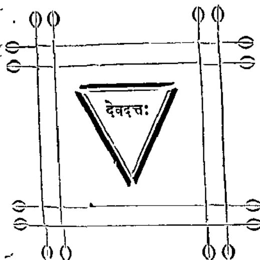
---

–साध्यव्यक्तिके नामको लिखे और ह्रींबीजके पादमें मकार, लकार, वकार, यकार ऊकारकोभी मिलाकर त्रिलोह वेष्टितकर बाहुमूल अथवा गलेमें धारण करे तो सर्प, व्याघ्र, चोर इत्यादिकोंका भय न होगा। अधिक क्या? अनेक प्रकारके उपद्रव शान्त होजायँगे ॥ १–७ ॥

इति यन्त्रचिन्ताम० नवमीं पीठिकाके व० मि० भा० टी० शान्तिअधिकारमें सर्प-व्याघ्र चौर-भयनिवारण नामक दूसरा यन्त्र ॥ २ ॥

श्रीशिवजी बोले–हे देवि! नारी तथा नरोंकी विशेषतासे दौर्भाग्यताके नाश करनेवाले यन्त्रोंको कहता हूं। लेखनविधि पूर्वोक्तही होने योग्य है, यथा-चमेलीकी लेखनीसे भोजपत्रके ऊपर दो रेखावाले त्रिकोणयन्त्रको खैंचकर उसके बहिर्भागमें दो रेखायुक्त चतुष्कोणयन्त्र खैंचकर प्रतिरेखाको त्रिशूलसे मिश्रित करे, तत्पश्चात् त्रिकोणके भीतर साध्यव्यक्तिके नामको लिख उक्तविधिसे पूजनकर त्रिलोहके ताबीजमें रखकर उपरोक्त विधिसे नारी

वन्ध्यागर्भधारणयन्त्रम् ।



वत्पूर्व नारी वा पुरुषोऽथवा । विविधोपद्रवं हन्ति वन्ध्या गर्भवती भवेत् ॥५॥ सौभाग्यमतुलं प्राप्य देववन्मोदते सदा॥६॥

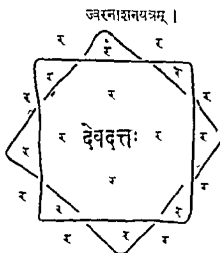
इति श्रीयन्त्रचि० ना० म० प्र० उ० नवमपी० शान्त्य० सौभाग्यजननं वन्ध्यागर्भधारणं नाम तृतीयं यन्त्रम् ॥ ३ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि ज्वरनिर्नाशनं परम्। भूतजं तु ज्वरं हन्ति विद्यते वैद्यकोदितम्॥१॥बालानां

-अथवा पुरुष धारण करे तो अनेकप्रकारके उपद्रव शांत होंगे, वंध्या स्त्री गर्भवती होगी । अनेक प्रकारके सौभाग्यको प्राप्त होकर सदा देवताकी समान सुखको प्राप्त होंगे ॥ १-६ ॥

इति यन्त्रचिन्तामणिकी नववीं पीठिकाके प० मि० भा० टी० शान्ति-अधिकारमें सौभाग्यजनन वन्ध्यागर्भधारण नामक तीसरा यन्त्र ॥ ३॥

श्रीशिवजी बोले-अब ज्वरके नाशकरनेका यन्त्र कहता हूं, यह वैद्यकशास्त्रमें कहा हुआ यन्त्रराज भूतमात्रके ज्वरको नाश करताहै। इस यन्त्रराजका बाल-



तु सदा कार्यं यन्त्रं वै ज्वरशान्तये । उन्मत्तस्य रसैर्लेख्यं कर्पटे वै श्मशानके ॥ २॥ कृष्णाष्टम्यां चतुर्दश्यां संपूज्य निखनेत्ततः । श्मशाने तु दिवैव स्यान्निराहारेण मानवः ॥३॥ चतुष्कोणोपरि चतुर्भवेदष्टदलं तथा।मध्ये नाम लिखित्वा तु रकारस्य तु संपुटे॥४॥ दलमध्येऽन्तराले तु रकारं संप्रतिष्ठितम् । एवं विंशतिरेफाः स्युः सर्वं तत्र क्रमेण तु ॥ ५ ॥ संपूर्य भूमौ संपूज्य बलिपुष्पैर्मनोहरैः । तत्क्षणाद्याति भूतं तु ज्वररूपं तु दारुणम् ॥ ६॥

इति यन्त्रचिन्तामणौ ज्वरनाशनं नाम चतुर्थं यन्त्रम् ॥ ४ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि बालानां शान्तिकारकम् । यन्त्रं रक्षाकरं श्रेष्ठं सर्वोपद्रवनाशनम ॥ १॥ पूर्वोक्त-

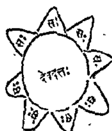
---

कोंके ज्वरशांतिके अर्थ अवश्य प्रयोग करना चाहिये । विधान-धतूरेके रससे मशानके वस्त्रके ऊपर चतुष्कोणचक्र खींचकर कोण निकाल दूसरा चतुष्कोण उसके ऊपर और लिख भीतर साध्यव्यक्तिके नामको चार रकार वर्णोंसे वेष्टितकर लिखे और प्रतिकोणके भीतर तथा बाहर एक एक रकार वर्ण लिखे इस प्रकार सब २० रकार होने योग्य हैं । फिर मनोहर बलि पुष्प इत्यादिकोंसे पूजनकर उपवासयुक्त हो कृष्णपक्षकी अष्टमी तथा चतुर्दशीको दिनके समय पूजनकर गाड दो तो उसी समय बालकोंका ज्वर दूर होजायगा १-६॥

इति यंत्रचिन्तामणिकी नववीं पीठिकाके प० मि० भा० टी० शान्ति अधिकारमें ज्वरनाशक नामक चौथा यन्त्र ॥ ४ ॥

श्रीशिवजी बोले-अब बालकोंकी शांति करनेवाले तथा रक्षा करनेवाले अनेकों रोगोंके शान्त करनेवाले यन्त्रोंको कहता हूं । उक्त श्लोकोंसे उक्त विधानके

बालरक्षाकरयन्त्रम्।



विधिना लेख्यं द्रव्यैः पूर्वोदितैः क्रमात्। भूर्जपत्रोपरि देवि पूर्वोक्तविधिनाऽर्चनम् ॥ २ ॥ मध्ये नाम लिखित्वा तु वर्तुलं वेष्टयेत्ततः। ततश्चाष्टदलं कुर्याद्बीजयुक्तं मनोहरम् ॥ ३ ॥ सकारान्सविसर्गान्तान्दले प्रत्येकशो न्यसेत्। सम्पूज्य विधिवत्पश्चाद्बाहुमूले गलेऽथवा ॥ ४ ॥ धारयद्यन्त्रराजं तु लोहत्रितयवेष्टितम्। शाकिन्यो वाऽथ डाकिन्यो बालग्रहास्तथापरे ॥ ५ ॥ गच्छन्ति बालकं मुक्त्वा यन्त्रराजस्य धारणात् ॥ ६ ॥

इति श्रीयन्त्रचि० ना० म० प्र० उ० न० शा० दा०
बालरक्षाकरं नाम पञ्चमं यन्त्रम् ॥ ५ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि तृतीयज्वरनाशनम्। पूर्वोक्तविधिना लेख्यं भूर्जपत्रे सुशोभने ॥१॥ साध्य-

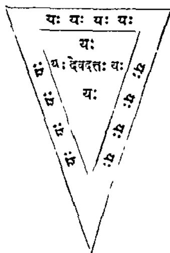
---

-समान भोजपत्रके ऊपर एक गोलाकार चक्र खेंचकर अष्टदल लगा प्रत्येकदलमें विसर्गान्त सकारको लिख बीचमें बालकके नामको लिख तत्पश्चात् त्रिलोहके तावीजमें रखकर विधानपूर्वक पूजनकर भुजा अथवा गलेमें बाँध दे, तो डाकिनी, शाकिनी, बालग्रह इत्यादि बालकोंको छोडकर चले जायँगे॥१-६॥

इति यन्त्रचिन्तामणि० बलदेवप्रसादमिश्रकृतभाषाटीकासहित
बालरक्षाकारक पाँचवाँ यन्त्र ॥५॥

श्रीशिवजी बोले-अब तीसरा ज्वरनाशक यन्त्र कहता हूं। विधान-उक्त विधानपूर्वक भोजपत्रके ऊपर त्रिकोणगर्भित त्रिकोणयन्त्रको खेंचकर मध्य-

तृतीयज्वरनाशनयन्त्रम् ।



नाम लिखित्वा तु यकारस्य तु सम्पुटे । त्रिकोणं वेष्टयित्वा तु न्यसेद्बीजानि चोपरि ॥२॥ एवं संलिख्य संपूज्य बध्नीयाद्दक्षिणे करे । यकाराः सविसर्गान्ताश्चत्वारश्च पृथक् पृथक् ॥ ३ ॥ त्रिषु भागेषु संलेख्यास्त्रिकोणे तु तथोपरि । ज्वरवेलासु तत्कार्यं बल्यर्थं दधिभक्तकम् ॥ ४ ॥ बालो वा अथवा वृद्धो ज्वरान्मुच्येत तत्क्षणात् ॥ ५ ॥

इति श्रीयन्त्रचिं० तृतीयज्वरनाशनं नाम षष्ठं यन्त्रम् ॥ ६ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि वेलाज्वरविनाशनम् । पूर्वोक्तविधिना लेख्यं द्रव्यैः पूर्वोदितैः क्रमात् ॥ १ ॥ भूर्जपत्रे तु संलेख्यं पूजयित्वा विधानतः।मध्ये नाम लिखित्वा तु वर्तुलं वेष्टयेत्ततः ॥ २ ॥ ऊर्ध्वाधो ह्यग्रतः पृष्ठे वकारस्य तु संपुटम् । ततश्चाष्टदलं कुर्याद्बीजयुक्तं तु सर्वतः ॥ ३ ॥ प्रत्येकं दलमध्ये तु नकारं बिन्दुभूषितम् । दलान्तरे तु ह्रीं-

---

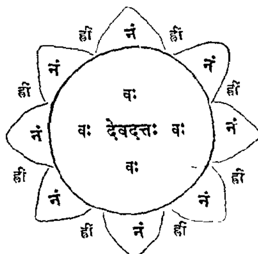
–भागमें यकार पुटित बालकके नामको लिखकर प्रतिरेखाके नीचे चार चार यकार वर्ण लिखकर दही भातकी बलि दे । बालक अथवा वृद्ध अपने दहिने हाथमें बाँधेंगे तो निश्चय ही उसी समय ज्वरसे छूट जायंगे ॥ १–५ ॥

इति यन्त्रचिन्तामणिकी नववीं पीठिकाके प० मि० भाषाटीका शान्ति-आधिकारमें तीसरा ज्वरनाशक नामक छठा यन्त्र ॥ ६ ॥

श्रीशिवजी बोले–अब समय बाँधकर आनेवाले ज्वरको शांत करनेवाले यन्त्रको कहता हूं । उक्त द्रव्योंसे उक्त विधानपूर्वक भोजपत्रके ऊपर गोलाकार चक्र खैंच आठ दल लगाकर अनुस्वारयुक्त साध्यव्यक्तिके नामको लिखकर चारों ओर विसर्गान्त चार वकारोंको लिख प्रतिदलके भीतर नं बीजोंको और

कारानष्टौ सर्वत्र विन्यसेत् ॥ ४ ॥ एवं संलिख्य संपूज्य शीततोये विनिक्षिपेत् । मुच्यते त्रिदिनाद्रोगी ज्वरद्वन्द्वान्न संशयः

ज्वरशमनयन्त्रम् ।



॥५॥ उष्णोदके तु संक्षिप्तं ज्वरं शीतं विनाशयेत् । हस्तमूले तु तद्बद्धं ज्वरं वेलासमुद्भवम् ॥ ६ ॥ नाशयेन्नात्र संदेहो भूतजं सुरसुन्दरि ॥ ७ ॥

इति यन्त्रचि० ज्वरशमनं नाम सप्तम यन्त्रम् ॥ ७ ॥

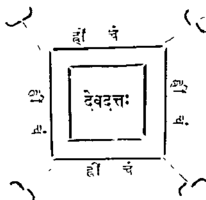
श्रीशिव उवाच ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि बालानां रक्षणं सदा । यन्त्रं ज्वलनरक्षाख्यमायुर्वृद्धिकरं परम् ॥१॥ पूर्वोक्त-

–बाहर ह्रींबीजोंको लिखे, फिर विधानपूर्वक पूजनकर ठंढे पानीमें डालदे तो रोगी द्वन्द्वज ज्वरसे तीन दिनमें मुक्त होजायगा । इसमें किसी प्रकारकाभी संदेह नहीं है। हे सुन्दरि! यदि हाथमें बाँधलिया जाय तो भूतसे पैदा हुआ ज्वर तत्क्षण दूर होजायगा ॥ १–७ ॥

इति यन्त्रचिन्तामणिकी नवमी पीठिकाके प० मि० भा० शान्ति-
अधिकारमें ज्वरशमन नाशक सातवाँ यन्त्र ॥ ७ ॥

श्रीशिवजी बोले–अब सदा बालकोंकी रक्षा तथा आयु वृद्धि करनेवाले ज्वलन रक्षा नामवाले यन्त्रको कहता हूं । विधानपूर्वक कहेहुए द्रव्योंसे भोज-

बालानां ज्वरादिस्तम्भनयंत्रम् ।



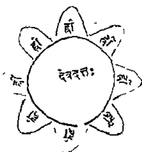
विधिना लेख्यं द्रव्यैः पूर्वोदितैः शुभैः । भूर्जपत्रे तु संलेख्यं साध्यनाम तु मध्यतः ॥ २ ॥ ततस्तद्वेष्टयेत्सम्यक् चतुष्कोणं तु रेखया । तस्योपरि चतुष्कोणं त्रिशूलं कोणतो लिखेत् ॥३॥ कोणान्तरे लिखेद्बीजं चकारं बिन्दुभूषितम् । उपर्यधोऽन्तराले तु ह्रींकारं विलिखेद्बुधः ॥ ४ ॥ एवं संलिख्य तद्यन्त्रं पूजयित्वा विधानतः । त्रिलोहवेष्टितं कृत्वा बध्नीयात्कण्ठमध्यतः ॥ ५ ॥ ये चोपसर्गताः केचिद्रोगाः शारीरमानसाः । ईर्ष्या कोपस्तथा दोषो दन्तानां संभवः पुनः ॥ ६ ॥ न बाधते बालकस्य स्तन्यदोषः कदाचन ॥ ७ ॥

इति श्रीयंत्र० बालानां ज्वरादिस्तम्भनं दन्तरोगादिकृत्रिमोपद्रवनाशनमष्टम यंत्रम् ॥

–पत्रके ऊपर दो रेखावाले चतुष्कोणयन्त्रको खैंचकर प्रत्येक कोणमें त्रिशूल लिख पूर्वादि चारों दिशाओंमें ह्रीं चं इन बीजोंको लिखकर बीचमें सानुस्वार साध्यव्यक्तिके नामको लिखे, फिर उक्त विधानसे पूजनकर त्रिलोहके ताबीजमें बन्दकर गलेमें बांध दे तो उपसर्गजरोग, शारीरक रोग, मानसिकरोग, ईर्षा, क्रोध, दांतोंका रोग, स्तनरोग इत्यादि कभी बालकको बाधा न देंगे ॥१–७॥
इति यन्त्रचि० नवमीं पीठि० व० मि०भा०टी०शान्ति अधि०में ज्वरादिस्तंभनदंतरोगादिकृत्रिमोपद्रवनाशननामक आठवां यन्त्र ॥८॥

श्रीशिव उवाच ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि भूतापस्मारनाशनम् । शाकिनीभूतवेतालैर्गृहीतोऽपि सुदारुणैः ॥ १ ॥ तदा

बालदोषनाशनयंत्रम् ।



तन्मोहनार्थाय कुर्याद्यन्त्रं मनोहरम्। स्वस्थस्य तु प्रकुर्वीत स तु दोषैर्न बाध्यते ॥ २ ॥ द्रव्यैः पूर्वोदितैर्लेख्यं पूर्वोक्तविधिना ततः । मध्ये नाम लिखित्वा तु भूर्जपत्रे वरानने ॥ ३॥ वर्तुलं वेष्ट्य संलेख्यं तस्योपरि दलाष्टकम् । ह्रींकारं दलमध्ये तु प्रत्येकं विलिखेत्पुनः ॥ ४ ॥ एवं संलिख्य संपूज्य लोहत्रितयवेष्टितम् । सुवर्णं रजतं ताम्रं त्रिलोहं परिचक्षते ॥ ५ ॥ बालानां गलके धार्यं यन्त्रं त्रैपुरभैरवम् । मुच्यते बालको रोगादपस्माराद्वरानने ॥ ६ ॥

इति श्रीयन्त्रचिन्तामणौ नाम्नि म० प्र० उ० न० शा० बालाना दोषनाशन नाम नवम यन्त्रम् ॥ ९ ॥

श्रीशिवजी बोले-अब भूत तथा मृगीरोगके नाश करनेवाले यन्त्रको कहता हूं, इस यन्त्रका प्रयोग उस समय करना चाहिये कि, जिस समय बालक शाकिनी भूत वेताल इत्यादिकोंसे पीडित हो । यदि स्वस्थबालकके ऊपर इस यन्त्रराजका प्रथमही प्रयोग करदिया जाय तो कदापि दोषग्रसित न हो । पूर्वोक्त पूजादि विधानसे भोजपत्रके ऊपर एक गोलाकार चक्र खैंच उसके बाहर आठ दल लगाकर प्रत्येक दलमें ह्रीं बीज और मध्यभागमें साध्यव्यक्तिके नामको लिखे । फिर पूजनकर त्रिलोहके तावीजमें बन्द करके बालकके गलेमें बाँधदे तो बालक अपस्मारादिरोगोंसे मुक्त होकर सुख पावे । सोना,चांदी,तांबा इनको त्रिलोह कहते हैं, इस यन्त्रका त्रिपुरभैरव नाम है१-६

इति यन्त्रचिन्तामणिकी नववीं पीठिकाके म० मि० भा० टी० शान्ति अधिकारमें बालदोषनाशक त्रिपुरभैरवनामक नौवाँ यन्त्र ॥ ९ ॥

श्रीशिव उवाच॥अथातः संप्रवक्ष्यामि सर्पात्संरक्षणं परम् । सर्पादिभिर्यथा बालः प्रौढो वापि विशेषतः॥१॥न दंश्यते यथा देवि प्रमादाद्वह्निशान्तयः। पूर्वोक्तविधिना लेख्यं पूजयित्वा विधानतः॥२॥ मध्ये नाम लिखित्वा तु वर्तुलं तु द्विरेखया। संवेष्ट्य च दलान्यष्टौ हंसबीजान् पृथक् पृथक्॥ ३॥ त्रिलोहवेष्टितं कृत्वा बाहुमूले तु धारयेत्। नश्यन्ति दर्शनात्तस्य दन्दशूकाश्चतुर्दिशम्॥४॥प्रमादात्पतिते पादे तिष्ठन्ति स्तम्भिता ध्रुवम् । अथ दष्टः प्रमादेन विषं नैवाऽधिरोहति ॥ ५ ॥ सर्पाणां स्तम्भनार्थाय यन्त्रं गरुडभाषितम् ॥ ६ ॥

सर्पस्तंभनयन्त्रम् ।



इति श्रीयन्त्र० सर्पस्तम्भनं नाम दशमं यन्त्रम् ॥ १० ॥

श्रीशिवजी बोले-अब सर्पसे रक्षा करनेवाले यन्त्रको कहता हूँ, जैसे कि सर्पादि हिंसकजीव बाल अथवा तरुणादिकोंका कुछ विचार नहीं करते हैं, इसी प्रकार अग्निशांतिमें भी कुछ विचार नहीं है । विधान-पूर्वोक्त विधानपूर्वक भोजपत्रके ऊपर दो रेखावाले गोलाकार चक्रको खेंचकर अष्टदल मिश्रित कर हं सः इन बीजोंको प्रतिदलमें लिख कर मध्यभागमें सानुस्वार साध्यव्यक्तिके नामको लिख, पूजनादि क्रियाकर त्रिलोहके तावीजमें बन्दकर धारण करें तो दर्शनमात्रहीसे मच्छरादिकोंका चारों दिशाओंमें नाश होजायगा,यदि सर्पादिके ऊपर प्रमादसे पैर पडभी जाय तौभी स्तम्भित रहेंगे किंतु दंशनादिक्रिया कुछभी न करसकेंगे अथवा काटभी लेंगे तो उनका विष न चढेगा।इस यन्त्रको सर्पोंके स्तम्भनकेलिये श्रीगरुडजीने प्रकाश किया है१-६

इति यन्त्रचिन्तामणिकी नवधी पीठिकाके ष० मि० भा० टी० शान्तिअधिकारमें सर्पस्तंभन नामक दसवां यन्त्र ॥ १० ॥

श्रीशिव उवाच ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि डाकिनीत्रासनं परम् । भूतप्रेतपिशाचाद्यैर्डाकिनीब्रह्मराक्षसैः॥१॥यदा ग्रस्तो नरः कोऽपि नारी वा बालकोऽपि वा । तदा यन्त्रं प्रकुर्वीत त्रासार्थं भूतरक्षसाम् ॥ २ ॥ खडिकया लिखित्वा तु खर्परे नूतने शुभे । चतस्रस्तिर्यगारेखा ऊर्ध्वास्ताः पञ्चरेखिकाः ॥ ३ ॥ एवं भवन्ति कोष्ठानां द्वादशैव वरानने । ह्रींकारं प्रतिकोष्ठे तु विलिख्याथ प्रपूजयेत् ॥ ४ ॥ बलिपुष्पोपहारैश्च ततो धूल्या प्रपूरयेत् । संस्थाप्य चाग्नेरुपरि ज्वालयेत् खदिरानलैः ॥ ५ ॥ रुदन्तं च महाभूतं वेपमानं पलायते । तत्क्षणाद्बालकं त्यक्त्वा देशत्यागेन गच्छति ॥ ६ ॥

भूतत्रासनयन्त्रम् ।

ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

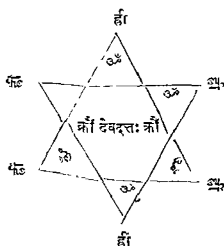
इति श्रीयन्त्रचि० ना० म० प्र० उ० न० पी० दा० भूतत्रासनं नामैकादशं यन्त्रम् ॥ ११ ॥

श्रीशिवजी बोले-अब डाकिनियोंको त्रास देनेवाले यन्त्रको कहता हूं । इस यन्त्रका प्रयोग उस समय करै कि जिस समय बालक, वृद्ध, स्त्री, पुरुष भूत, प्रेत, पिशाचादिकोंसे ग्रसित हों तब उनके त्रासके लिये यन्त्रका प्रयोग करै ॥ विधान-नये खप्परके ऊपर खड़िया मिट्टीसे द्वादश कोष्ठक यन्त्रको लिख प्रत्येक कोष्ठमें ह्रीं बीजोंको लिखे, फिर बलि पुष्प इत्यादिकोंसे यन्त्रका पूजनकर धूलिसे पूर्णकर अग्निमें रखकर खैरकी आगसे प्रज्वलित करै तो भूतादिक रोते और काँपते हुए बालकादिकोको छोडकर भाग जायंगे और उस देशमेंभी वास नहीं करेंगे विशेष तो कहनाही क्या है ॥ १-६ ॥

इति यन्त्रचिन्तामणिकी नवमी पीठिकाके बलदेवप्रसादकृतभा०यु० शान्ति अधिकारमें भूतत्रासन नामक ग्यारहवां यन्त्र ॥ ११ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि ज्वरनिर्नाशनं परम्। निशाचररसेनैव लिखितं यन्त्रमुत्तमम् ॥१॥ ताम्बूलपत्रे संलेख्यं बर्बुरस्य तु कण्टकैः। साध्यनाम लिखित्वा तु क्रौंकारपुटितं शुभम् ॥ २ ॥ षट्कोणमण्डलं मध्ये प्रत्येकं प्रणवं लिखेत्। कोणोपरि तु ह्रींकारं सर्वतो विलिखेत्क्रमात् ॥ ३ ॥ ताम्बूलं भक्षणार्थं च पूजयित्वा प्रदीयते । यन्त्रस्य भक्षणादेवि ज्वरो याति न संशयः ॥४॥ एकान्तरं क्षणेनैव नात्र कार्या विचारणा ॥ ५ ॥

एकान्तरज्वरनाशनयन्त्रम्।



इति यन्त्रचि० ना० म० प्र० उ० न० पी० शा० दा० एकान्तरज्वरनाशनं नाम द्वादशं यन्त्रम् ॥ १२ ॥

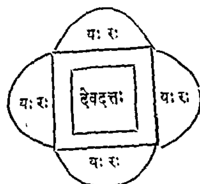
श्रीशिव उवाच ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि गर्भरक्षाकरं परम्। हस्तिमदेन संलेख्यं भूर्जपत्रे सुशोभने ॥ १ ॥ मध्ये नाम

श्रीशिवजी बोले—अब ज्वरनाशक यंत्रको कहता हूं। हल्दीके रससे पानके ऊपर बबूलके काँटेसे षट्कोण यंत्रको लिख प्रत्येक कोणके भीतर ओंकारको लिख ऊपरके तीनों कोनोंमें ह्रीं बीजको लिख बीचमें क्रौं बीजसे पुटित साध्यव्यक्तिके नामको लिखे। फिर ताम्बूलका पूजनकर रोगीको खवादे तो हे देवि! एकांतर ज्वर क्षणमात्रमें नाश होजायगा, इसमें कुछ विचार नहीं है ॥१-५॥

इति यंत्रचिंतामणिकी नववीं पीठिकाके शांति अधिकारमें एकांतरज्वरनाशन नामक बारहवां यंत्र ॥ १२ ॥

श्रीशिवजी बोले—अब गर्भरक्षा कारक यंत्रको कहता हूं। हे सुशोभने ! हाथीके मदसे भोजपत्रके ऊपर चतुष्कोणयंत्र खैंचकर चारों दिशाओंमें

गर्भरक्षाकरयन्त्रम् ।



लिखित्वा तु चतुष्कोणं द्विरेखया । संवेष्ट्य कर्णिका कार्या वर्तुला तु चतुर्दिशम् ॥२॥ यकारं च रकारं च विसर्गान्तं पृथक् पृथक् । कर्णिकामध्यतो लेख्याः पूर्ववत्पूजयेत् क्रमात् ॥३॥ लोहेकेन तु संवेष्ट्य गर्भिण्याः कण्ठतो न्यसेत् । सुखात्प्रसूतिर्भवति छलछिद्रं च नश्यति ॥ ४ ॥

इति श्रीयन्त्रचि० ना० म० प्र० उ० न० शा० दा० गर्भरक्षाकरं नाम त्रयोदशं यन्त्रम् ॥ १३ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि अन्तर्वत्नीसुरक्षणम् । यन्त्रं योनिव्यथा याति दारुणं भूतनाशनम् ॥ १ ॥ पूर्वोक्तविधिना लेख्यं द्रव्यैः पूर्वोदितैः क्रमात् । भूर्जपत्रे विधानेन मध्यदेशे विचक्षणः ॥ २ ॥ प्रणवं च तथा ह्रीं च

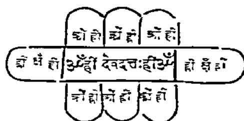
–कर्णिका लगाकर सुशोभितकर प्रत्येक कर्णिकामें यः रः इन बीजोंको लिख मध्यभागमें साध्यव्यक्तिके नामको लिखे । फिर उक्त विधानपूर्वक पूजनकर चांदीके तावीजमें बंदकर गर्भणी स्त्रीके कण्ठमें बाँध दे तो सम्पूर्ण छल छिद्र नाश होजायँगे और सुखपूर्वक संतान पैदा होगी ॥ १–४ ॥

इति यन्त्रचिंतामणिकी नववीं पीठिकाके शान्ति अधिकारमें गर्भरक्षाकारक नामवाला तेरहवाँ यंत्र ॥ १३ ॥

श्रीशिवजी बोले–अब गर्भिणी स्त्रीके रक्षा और सुखपूर्वक प्रसूतिकारक यंत्रको कहता हूं । यह यंत्र गर्भव्यथा तथा भूतादिकोंकी व्यथाको दूर करता है । विधान यथा–उक्त द्रव्योंसे भोजपत्रके ऊपर पटवत् चतुष्कोण यन्त्रको खेंचकर दीर्घरेखासे युक्तकर प्रतिकोष्ठकमें क्रों ह्रीं इन बीजोंको लिख ओं ह्रीं

आद्यन्तं नामतो लिखेत् । पटवच्च चतुष्कोणं दीर्घं संवेष्ट्य रेखया ॥ ३ ॥ उपर्यधोऽपि त्रिदलान्कोणैकैकं प्रतिष्ठितम् ।

सुखप्रसवकरयन्त्रम् ।



ह्रीं क्षं च तथा ह्रीं च कोणे दलगतं लिखेत् ॥ ४ ॥ क्रोंकारं च तथा ह्रीं च दलशेषेषु वै लिखेत् । एवं संलिख्य संपूज्य लोहत्रितयवेष्टितम् ॥ ५ ॥ गर्भिण्याः कण्ठदेशे तु धार्यं यन्त्रं न संशयः । योनिशूलं शिरःशूलं भूतदोषः प्रणश्यति ॥ ६ ॥ सुखं प्रसूतिर्भवति व्यथानाशो न संशयः । रहस्योऽयं समाख्यातो यन्त्रराजो महाद्भुतः ॥ ७ ॥

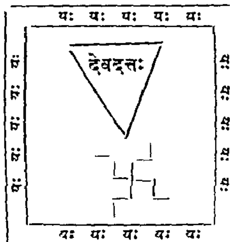
इति श्रीयन्त्रचिन्तामणौ नाम्नि महातन्त्रे नवमपीठ० शान्त्यधिकारे दा० गर्भिणीरक्षणं सुखप्रसूतिकरणं नाम चतुर्दशं यन्त्रम् ॥ १४ ॥

–दो बीजोंसे पुटित साधकके नामको बीचमें लिखे फिर पूजनकर त्रिलोहके तावीजमें बंदकर गर्भिणीके गलेमें बांधदे तो गर्भशूल और शिरःशूल भूतदोष यह सम्पूर्ण उपद्रव शांत हों सुखपूर्वक प्रसूति होगी । हे देवि ! इस यंत्रराजके रहस्यको मैंने कहा है इसका विधानभी पूर्वके समान है ॥१–७॥

इति यंत्रचिंतामणिकी नववीं पीठिकाके शांति–अधिकारमें गर्भिणीरक्षण सुखप्रसूतिकारक चौदहवां यंत्र ॥ १४ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि तृतीयज्वरनाशनम् । द्रव्यैः पूर्वोदितैर्लेख्यं भूर्जपत्रे वरानने ॥ १ ॥ मध्ये नाम

भूततृतीयज्वरनाशनयन्त्रम् ।



लिखित्वा तु त्रिकोणं वेष्टयेत्ततः । तस्याधः स्वस्तिकं कार्यं तत्सर्वं वेष्टयेत्ततः॥२॥ चतुष्कोणं शिलाकारंतस्योपरि लिखेद्बुधः। यकारैः सविसर्गान्तैर्विषमैर्वेष्टयेत्ततः ॥३॥ संपूज्य तस्य वेलायां बध्नीयाद्दक्षिणे करे । ज्वरो याति न संदेहो भूतजस्तु तृतीयकः ॥ ४॥ रोगजं नैव यात्येष न योज्यं तत्र वैकदा।

इति श्रीयन्त्रचि० ना० म० प्र० उ० न० शा० दा० भूततृतीयज्वरनाशनं नाम पञ्चदशं यन्त्रम् ॥ १९ ॥

श्रीशिवजी बोले-अब तृतीयज्वर नाशक यन्त्रको कहता हूं। हे वरानने ! पूर्वकथित द्रव्योंसे भोजपत्रके ऊपर एक चतुष्कोण यन्त्र खैंचकर उक्त त्रिकोणके नीचे स्वस्तिक लिख पुनः इन सबको चतुष्कोणयन्त्रसे वेष्टित करे। फिर त्रिकोणके भीतर साध्यव्यक्तिके नामको और द्वितीय चतुष्कोणके भीतर विसर्गान्त तीन यकार वर्णोंको पूर्वादि चारों दिशाओंमें लिख पूजनकर ज्वरके समय दहिने हाथमें बांधे तो तीसरे दिन आनेवाला ज्वर दूर होगा। यदि भूतादिकोंके उपद्रवसे होगा तो अवश्य दूर होजायगा। अथवा रोगज्वर हो तो इसका प्रयोग न करै क्योंकि इस यन्त्रसे रोगज्वर दूर नहीं होता किन्तु भूतजही दूर होता है ॥ १-५ ॥

इति यन्त्रचिन्तामणिकी नवमी पीठिकाके शान्तिअधिकारमें तृतीयक भूतज्वरशमन नामक पन्द्रहवां यंत्र ॥ १५ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि सर्वरक्षाकरं परम्। छलछिद्रहरं नाम सर्वतोभद्रसंज्ञकम् ॥१॥ ऊर्ध्वरेखाः पञ्च पञ्च तिर्यग्रेखास्तु संलिखेत् । एवं कृते भवन्त्येते कोष्ठाः षोडशसंज्ञकाः॥२॥ अकारपूर्वाः क्रमशो विलिख्य सर्वत्र कोष्ठे निशि भूतजेऽह्नि । भूर्जस्य पत्रे मृगनाभिचन्दने हिमेन संमेल्य लिखेत्क्रमेण तु ॥ ३ ॥ संपूज्य पुष्पैर्विविधैश्च गन्धैर्धूपैर्मनोज्ञैर्विविधोपचारैः । संपूज्य विप्रान्वसनैर्धनैश्च यन्त्रं च तद्भक्तियुतः समर्चयेत् ॥ ४ ॥ संवेष्ट्य लोहत्रितयेन पश्चात्संहृष्टचेता विधिवन्मनुष्यः । तं धारयेद्दक्षिणबाहुमूले नारी गले यन्त्रवरं प्रयत्नात् ॥ ५ ॥ तद्धारणात् प्राप्तमनःप्रसादः सर्वप्रियो भाग्ययुतः स तूर्णम् । संजायते सर्वभयेन हीनो लोके यथा प्राप्तमहाष्टसिद्धिः ॥ ६ ॥

सर्वतोभद्रयंत्रम् ।

अ	आ	इ	ई
उ	ऊ	ऋ	ॠ
ऌ	ॡ	ए	ऐ
ओ	औ	अं	अः

इति श्रीय० चि० ना० म० प्रत्यक्षसि० उ० न० शा० टा० सर्वसौभाग्यवर्धनं सर्वतोभद्राख्यं षोडशं यन्त्रम् ॥ १६ ॥

श्रीशिवजी बोले–अब सब प्रकारके छलछिद्रोंके नाश करनेवाले और सब प्रकारकी रक्षा करनेवाले सर्वतोभद्र नामक यन्त्रको कहता हूं । विधान यथा–भोजपत्रके ऊपर कस्तूरी, लालचन्दन, हिम इन सब वस्तुओंको एकत्रितकर सोलह कोष्ठवाले यन्त्रको खींचे । फिर प्रतिकोष्ठकमें अकारादि सोलह स्वरोंको लिख गन्ध, धूप, दीप इत्यादिकोंसे यन्त्रराजका पूजनकर धन वस्त्रादिकोंसे ब्राह्मणोंको संतुष्टकर भोजन करावे । फिर यत्नपूर्वक त्रिलोह निर्मित तावीजमें बन्दकर पुरुष दाक्षिणहाथमें और स्त्री गलेमें बाँधले तो प्रसन्नचित्त और भाग्ययुक्त हो सबके प्रिय होंगे और सब प्रकारके भयोंसे रहित जैसे कि अष्टसिद्धिके प्राप्त होनेसे सुख होता है उसकी समान सुख पावेंगे१–६

इति यन्त्रचिन्तामणिकी नववीं पीठिकाके शान्ति अधिकारमें सौभाग्य वर्द्धक सर्वतोभद्र नामक सोलहवाँ यन्त्र ॥ १६ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि यन्त्रं द्यूतजयावहम् । सर्वद्यूते हि परमं जयं स्याद्यन्त्रधारणात् ॥१॥ वाजिनः क्रममारूपातं चतुष्षष्टिस्तु कोष्ठकम् । तद्धारणाज्जयं देवि द्यूते सर्वत्र निश्चितः । एरण्डपत्रे संलेख्यं लेखन्या काकपिच्छया । कज्जलस्य मषीं कृत्वा लिखेद्रात्रौ शुचिस्मिते ॥ ३॥ तिर्यगूर्ध्वास्तु संलेख्या नव रेखास्तु विस्तृताः । एवं

द्यूतविजयकरयंत्रम् ।

मे	खे	र	क्तं	द	ये	रु	पा
कृ	जि	ज	तं	द	नी	च	नः
छ	दा	वीं	य	मं	त्रं	ते	प
हे	ष्टि	वा	मो	क्षि	ण	पा	त्रं
त्रं	पा	ण	क्षि	मो	वा	ष्टि	हे
प	ते	त्रं	मं	य	वीं	दा	छ
नः	च	नी	द	त	ज	जि	क
पा	रु	ये	द	क्तं	र	खे	मे

भवन्ति कोष्ठाश्च चतुःषष्टिर्वरानने ॥ ४ ॥ मध्ये बीजाः सुसंलेख्याऽनुलोमप्रतिलोमतः । ते एव हि पुनर्लेख्याः शेषकोष्ठेषु च क्रमात् ॥५॥ मेखेरक्तंदयेरुपाकाजिजतंदनीचनः ॥ छदावींयमंत्रंतेपहेष्टिवामोक्षिणपात्रम् ॥ ६ ॥ एतान्येव तु बीजानि द्वात्रिंशद्भिर्लिखेत् क्रमात् । दामोदरकवीन्द्रेण चित्रो वाजिक्रमः कृतः ॥७॥ स्वेच्छया नीयते येन चतुःषष्टिपदं जनैः ।

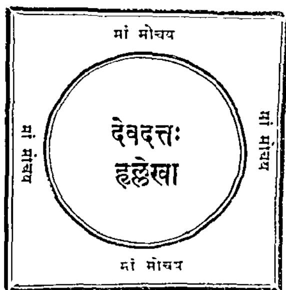
श्रीशिवजी बोले-अब जुएमें जयके देनेवाले यन्त्रको कहताहूं इस श्रेष्ठ यन्त्रके धारणकरनेसे सब प्रकारके जुएमें जय होतीहै इस सोलह कोष्ठकवाले यन्त्रमें वाजिक्रम कहा है, हे देवि ! इस यन्त्रके धारण करनेसे सब प्रकारके जुओंमें जय होती है । हे शुचिस्मिते ! रात्रिके समय एरंडपत्रके ऊपर काकपत्रकी लेखनीसे काली स्याहीके ६४ कोष्ठक बना प्रतिकोष्ठकमें अनुलोम तथा विलोमसे इन३२बीजोंको लिखे । बीज यथा-मे, खे, र, क्तं, द, ये, रु, पा, क, जि, ज, तं, द, नी, च, नः छ, दा, वीं, य, मं, त्रं, ते, प, हे, ष्टि, वा, मो, क्षि, ण, पा, त्रं । यह वाजिक्रम चित्र दामोदर पण्डितने वर्णन किया है । जो मनुष्य-

प्रसन्नं तु मया प्रोक्तं यन्त्रं चित्रं मनोहरम् ॥ ८ ॥ सर्वभूते जयं प्रोक्तं धारणाज्जायते प्रिये ॥ ९ ॥

इति श्रीयन्त्रचि. ना. म. प्र. उ. न. शा दा. धृतविजयकरं सप्तदशं यन्त्रम् ॥ १७ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि बन्धमोक्षं मनोहरम् । बद्धो रुद्धः क्षणेनैव मुच्यते यत्प्रसादतः ॥ १ ॥ यद्वा

बन्धमोक्षण यंत्रम् ।



–इस ६४ कोष्ठक यन्त्रको धारणकर जुएमें जायंगे वे लोग निश्चयही जयको प्राप्त होकर प्रसन्न होंगे कारण कि इस यन्त्रका नामही प्रसन्नयन्त्रहै ॥१–९॥

इति श्रीयंत्रचिन्तामणिकी नववीं पीठिकाके शान्ति अधिकारमे धृतविजयकर नामक सत्रहवां यन्त्र ॥ १७ ॥

श्रीशिवजी बोले–अब मनोहर बंदीमोचननाम यंत्रको कहता हूं । इस यन्त्रके प्रयोगकरनेसे बंदी क्षणमात्रमे बंधनसे छूट जायगा । अथवा किसी जीवके

केनापि संरुद्धो न विन्देन्मुक्तिमात्मनः । तदा यन्त्रं प्रकुर्वीत तत्क्षणान्मुक्तिदायकम् ॥ २ ॥ कर्पूरं कुंकुमेनैव भूर्जपत्रे सुविस्तृते । लेखनीयं प्रयत्नेन एकान्ते यन्त्रमुत्तमम् ॥ ३ ॥ मध्ये नाम लिखित्वा तु हल्लेखात्तदनन्तरम् । ततस्तद्वेष्टयेत्सम्यग्वर्तुलं तु द्विरेखया ॥ ४ ॥ मां मोचयेति सर्वत्र चतुर्दिक्षु प्रवेष्टयेत् । चतुष्कोणं तु संवेष्ट्य रेखाद्वितयकेन तु ॥ ५ ॥ पूजनीयं प्रयत्नेन गन्धपुष्पैः फलैः शुभैः । त्रिलोहवेष्टितं कृत्वा बाहुमूले गलेऽथवा ॥ ६ ॥ धारणात्तत्क्षणान्मुक्तः संसार इव निर्ममः । स्वस्थता धारणान्नित्यमवरोधः कदाचन ॥ ७ ॥ जायते नैव संदेहः स्वप्नेऽपि हि कदाचन ॥ ८ ॥

इति श्रीय. चिं. ना. म. प्र. उ. न. शा. बन्धमोक्षणं नामाऽष्टादशं यंत्रम् ॥ १८ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि भवबन्धविनाशनम् । निर्वाणपदयोज्यं हि निर्वेदपददायकम् ॥ १ ॥ पट्-

---

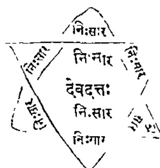
–किसीने रोकलिया हो और उसके निकलनेका कोई उपाय न हो तो मुक्तिकारक इस यन्त्रराजका प्रयोगकरै । विधान–कपूर, कुंकुम इनको एकत्रित करके विस्तारित भोजपत्रके ऊपर एक चतुष्कोणको, खैंचकर उसके मध्यमें दो रेखा मिश्रित एक गोलाकार चक्र लिखकर उसमें विसर्गान्त साध्यव्यक्तिके नामको लिखकर अन्तमें ह्लेखा इसको लिख उक्त गोलाकारके बहिर्भाग पूर्वादि चारों दिशाओंमें " मां मोचय " इस वाक्यको लिखे । फिर गन्ध पुष्प इत्यादिकोंसे यंत्रका पूजनकरके त्रिलोहके तावीजमें बंदकर गले अथवा बाहुमूलमें धारणकरे तो बंदी उसी क्षणमें बंधनसे छूट जायगा, जैसे कि संसाररूप बंधनसे ममतारहित मुमुक्षुलोग छूट जाते हैं, । हे देवि ! इस यंत्रके धारण करनेसे शरीरको स्वस्थता रहेगी, बंधन तो स्वप्नमें न होगा१–८॥

इति श्रीयंत्रचिंतामणिकी नवमी पीठिकाके शान्ति अधिकारमें बंधमोक्षण नामक अठारहवां यंत्र ॥ १८ ॥

श्रीशिवजी बोले–अब भवबंधन नाशक और मोक्षपदके देनेवाले यंत्रको कहता हूं । विधान–गोरोचन, लाल चंदन इनको मिलाकर भोजपत्रके ऊपर

कोणस्य तु मध्ये तु साध्यनाम प्रतिष्ठितम् । निःसारं सम्पुटं कृत्वा भूर्जपत्रे सुविस्तृते ॥२॥ निःसारं तु लिखेत्कोणे रोचनाचन्दनेन तु ॥ ३ ॥ लोहमध्यगतं कृत्वा रक्षयेच्छिरसा सदा । तद्धारणात्क्रमेणैव विरक्तः संप्रजायते ॥ ४ ॥ ज्ञानयोगं समासाद्य मुच्यते नात्र संशयः । पितृमित्रकलत्रेषु निर्मोहः संप्रजायते ॥५॥ निर्बन्धस्तु वनारण्यदुर्गपर्यटनं गिरौ । जायते नात्र संदेहो योगी सर्वत्र पूजितः ॥ ६ ॥

भवमोचनयन्त्रम् ।



इति य० चि० ना० म० प्र० उ० न० शा० दामोदरपण्डितोद्धृते भवमोचन नाम एकोनविंश यन्त्रम् ॥ १९ ॥

श्रीशिव उवाच॥अथातःसंप्रवक्ष्यामि दुष्टसत्वात्प्रमोचनम् । यदाऽरण्ये सरिद्दुर्गे दुष्टसत्त्वेन बाधितः॥१॥तदा यन्त्रं प्रकुर्वीत

–एक षट्कोण यन्त्रके खैंच प्रत्येक कोणमें निःसार इस पदको लिखे और इसही मन्त्रसे पुटित साध्यव्यक्तिके नामको यन्त्रके भीतर लिखे । तत्पश्चात् उक्त विधानपूर्वक यन्त्रराजका पूजनकर त्रिलोहके तावीजमें बन्दकर शिरमें धारण करे तो विरक्त हो ज्ञानमार्गको अनुसरण करताहुआ पुत्रादिकोंके मोहसे शून्य होकर पर्वतादि श्रेष्ठस्थानोंमें यन्त्ररहित पूजनीय योगीश्वर होगा ॥१–६॥

इति यन्त्र चिन्तामणिकी नवमी पीठिकाके शान्ति अधिकारमें भवमोचन नामक उन्नीसवां यंत्र ॥ १९ ॥

श्रीशिवजी बोले–अब दुष्टजीवोंसे मोचन करनेवाले यन्त्रको कहता हूं । इस यंत्रका उस समय प्रयोग करे कि, जिस समय वन नदी झाडी इत्यादि

दुष्टसत्त्वप्रमो-वामहस्ततलोपरि । निष्ठीवनेन ह्रींकारं लिखित्वा चतुर्यंत्रम् । पूजयेत्तदा ॥ २ ॥ अनामाद्रेवरक्तने चतुर्दिक्षु प्रसेचयेत् । तत्क्षणान्मुच्यते जन्तुर्यावद्वीपिमहोरगैः ॥ ३ ॥ रुद्धो वृकैश्च हरिभिरन्यैर्दुष्टैर्न संशयः ॥४॥

ह्रीं

इति श्रीयंत्रचि० ना० दुष्टसत्वात्प्रमोचनं नाम विंशं यन्त्रम् ॥ २० ॥

इति श्रीयंन्त्रचिन्तामणौ नाम्नि महाकल्पे प्रत्यक्षसिद्धिप्रदे उमामहेश्वरसंवादे दामोदरपण्डितोद्धृते नवमीपीठिकायुतः शान्त्यधिकारः समाप्तः ॥

अथ मोक्षाधिकारः ॥

आपादमस्तकनिबद्धजनः क्षणेन मोक्षं प्रयाति निगडैश्च सुवेष्टिताङ्गः । यस्याज्ञया जगति देवमनुष्यसिद्धास्तां भक्तियुक्तमनसा प्रणतोऽस्मि बन्दीम् ॥ १ ॥ अधिकारं महद्वक्ष्ये बन्दीमोक्षकरं नृणाम् । विश्वासात्तत्क्षणादेवि सर्वकार्यप्रसाधकम् ॥ २ ॥ देवानां मनुजेशिनां नृपजुषां स्त्रीणां शिशूनां ततो बद्धानां निगडैश्चिरं तनुजुषां मोक्षाय सिद्धिप्रदम् ॥ ३ ॥

–भागास सिंहादि दुष्ट जीवोंसे भययुक्त हो । विधान–अपने थूकसे बायें हाथके ऊपर चतुष्कोणयन्त्र खैंचकर भीतरके भागमें ह्रीं बीजको अनामिका अंगुलीके रुधिरको पूर्वादि चारों दिशाओंमें सेचन करे तो तत्क्षण साध्यव्यक्ति उक्त हिंसक जीवोंके भयसे विमुक्त हो सुखका भागी होगा ॥ १–४ ॥

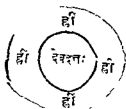
इति श्रीयंत्रचिंतामणिकी नववीं पीठिकाके बलदेवप्रसादमिश्रजीकृत भाषाटीकायुत शांति अधिकारमें दुष्टसत्वात् मोचन नामक बीसवां यंत्र ॥ २० ॥

इति श्रीयंत्रचिंतामणौनाम्नि महाकल्पे प्रत्यक्ष सिद्धिप्रदे उमामहेश्वर सम्वादे दामोदरपण्डितोद्धृते पं० बलदेवप्रसादमिश्रकृत भा० टी० युत नवमी पीठिकायुतो शान्त्यधिकारः समाप्तः ॥

श्री वन्दीदेवीको नमस्कार है। मस्तकसे लेकर चरणपर्यंत सम्पूर्ण अङ्गमें निगडबंध पुरुष जिस वंदी देवीकी आज्ञासे विमुक्त हो सिद्धादि गतिको प्राप्त होवे हैं उस वंदीदेवीको भक्तियुक्त मनसे नमस्कार करता हूं ॥ १–

श्रीशिव उवाच ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि बन्दीमोक्षप्रसाधनम्। यत्प्रसादात्क्षणेनैव बन्दीमोक्षः प्रजायते ॥ १ ॥ साध्यनाम लिखित्वा तु वर्तुलं वेष्टयेत्ततः। अपूपस्योपरि लेख्यं घृतेनैव तु यन्त्रकम्॥२॥ चतुर्दिक्षु च ह्रींकारं लिखित्वा वेष्टयेत्ततः। तत्रैव विविधैः पुष्पैर्नैवेद्यैः परिपूजयेत् ॥ ३ ॥ भक्षणार्थं प्रदातव्यमपूपं सुरसुन्दरि। त्रिदिनान्मुच्यते जन्तुर्दृष्टबद्धोऽपि सप्तमे ॥ ४ ॥

बन्दीमोचनयंत्रम्।



ऐं ह्रीं श्रीं बन्दीदेव्यै अमुकस्य बन्धमोक्षं कुरु कुरु मातर्नमः स्वाहा अनेन मन्त्रेण नाम गृहीत्वा पुनः प्रतिमन्त्रं गुग्गुलवटिकां होमयेत ॥ अष्टोत्तरशतं सप्तविंशतिदिनपर्यन्तं सर्वथा बन्धमोक्षो भवति नान्यथा॥ यन्त्रकल्पविहितसिद्धमन्त्रोऽयम्॥

इति श्रीय. चिं. ना. म. प्र. उ. मोक्षाधिकारे दा. बन्धनमोचनं नाम प्रथमं यन्त्रम् ॥ १ ॥

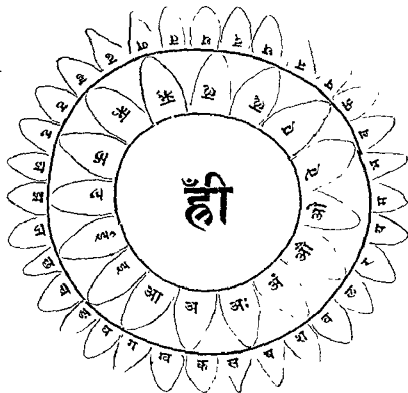
श्रीशिवजी बोले–हे सुंदरि ! जिसके प्रयोग करनेसे बंदी कैदसे छूट जाता है अब उस यंत्रराजको कहता हूं। विधान-पुयेके ऊपर घृतसे एक गोलाकार चक्र लिखकर उसके बहिर्भागमें एक चक्र और लिखे। फिर प्रथम यंत्रके भीतर साध्यव्यक्तिके नामाक्षर और दूसरे यंत्रके पूर्वादि चारोंभागमें ह्रीं बीज लिखकर गंध पुष्पादिकोंसे यंत्रका पूजनकर साध्यव्यक्तिको खवादें तो तीन दिन अथवा सात दिनमें बंधनसे छूट जायगा ॥ १–४ ॥

ऐं, ह्रीं श्रीं, बन्दीदेव्यै अमुकस्य बन्धमोक्षं कुरु २ मातर्नमः स्वाहा ॥ इस मन्त्रसे नाम उच्चारण करके गुग्गल वटिकासे आहुति देकर हवन करे। सत्ताईस दिनतक १०८ बार इस मंत्रका जापकरे तो बंदीकी अवश्य मोक्ष होजायगी अर्थात् कारागारसे छूटजायगा। यह कल्पविहित सिद्ध मंत्र है॥

इति यंत्रचिंतामणिकी दशवीं पीठिकाके मोक्षाधिकारमें बंधनमोचन नामक पहला यंत्र ॥ १ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि यन्त्रं निगडमोचनम् । हस्तपादतले बद्धो मुच्यते यत्प्रसादतः ॥ १ ॥ कांस्यपात्रोपरि लेख्यं रोचनाचन्दनेन च । कर्पूरकुङ्कुमाभ्यां च मृग-

निगडमोचनयन्त्रम् ।



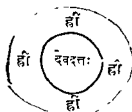
नाभिपुटेन च ॥ २ ॥ ह्रीङ्कारं मध्यदेशे तु वर्तुलं वेष्टयेत्ततः । ततस्तु षोडशदलानकारादिस्वरान्वितान् ॥ ३ ॥ ततस्तद्वेष्ट-

---

श्रीशिवजी बोले-अब निगडमोचन यन्त्रको कहताहूं कि जिस यन्त्रराजके प्रतापसे सर्वाङ्गबंदी मुक्त होसकता है । विधान-गोरोचन, लालचंदन, कपूर, कुंकुम,कस्तूरी इन सब वस्तुओंको एकत्रितकर कांसीके पात्रके ऊपर एक गोलाकार चक्र खैंचकर मध्यभागमें ह्रींबीजको स्थापितकर उक्त गोलाकारके बहि-

श्रीशिव उवाच ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि बन्दीमोक्षप्रसाधनम्।यत्प्रसादात्क्षणेनैव बन्दीमोक्षः प्रजायते ॥ १ ॥ साध्यनाम लिखित्वा तु वर्तुलं वेष्टयेत्ततः। अपूपस्योपरि लेख्यं घृतेनैव तु यन्त्रकम्॥२॥ चतुर्दिक्षु च ह्रींकारं लिखित्वा वेष्टयेत्ततः। तत्रैव विविधैः पुष्पैर्नैवेद्यैः परिपूजयेत् ॥ ३ ॥ भक्षणार्थं प्रदातव्यमपूपं सुरसुन्दरि। त्रिदिनान्मुच्यते जन्तुर्दुष्टबद्धोऽपि सप्तमे ॥ ४ ॥

बन्धमोचनयंत्रम् ।



ऐं ह्रीँ श्रीँ बन्दीदेव्यै अमुकस्य बन्धमोक्षं कुरु कुरु मातर्नमः स्वाहा अनेन मन्त्रेण नाम गृहीत्वा पुनः प्रतिमन्त्रं गुग्गुलवटिकां होमयेत् ॥ अष्टोत्तरशतं सप्तविंशतिदिनपर्यन्तं सर्वथा बन्धमोक्षो भवति नान्यथा॥ यन्त्रकल्पविहितसिद्धमन्त्रोऽयम्॥

इति श्रीय. चिं. ना. म. प्र. उ. मोक्षाधिकारे दा. बन्धनमोचनं नाम प्रथम यन्त्रम् ॥ १ ॥

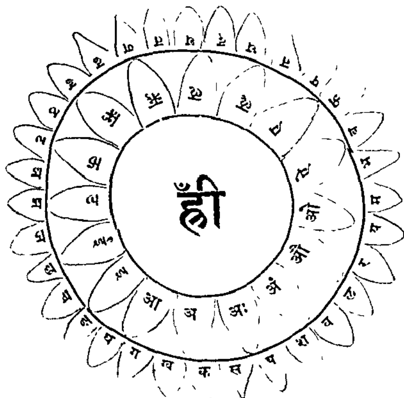
श्रीशिवजी बोले–हे सुंदरि ! जिसके प्रयोग करनेसे बंदी कैदसे छूट जाता है अब उस यंत्रराजको कहता हूं। विधान-पुयेके ऊपर घृतसे एक गोलाकार चक्र लिखकर उसके बहिर्भागमें एक चक्र और लिखे। फिर प्रथम यंत्रके भीतर साध्यव्यक्तिके नामाक्षर और दूसरे यंत्रके पूर्वादि चारोंभागमें ह्रीं बीज लिखकर गंध पुष्पादिकोंसे यंत्रका पूजनकर साध्यव्यक्तिको खवादें तो तीन दिन अथवा सात दिनमें बंधनसे छूट जायगा ॥ १–४ ॥

ऐं, ह्रीं श्रीं, बन्दीदेव्यै अमुकस्य बन्धमोक्षं कुरु २ मातर्नमः स्वाहा ॥ इस मन्त्रसे नाम उच्चारण करके गुग्गल वटिकासे आहुति देकर हवन करे। सत्ताईस दिनतक १०८ बार उक्त मंत्रका जापकरे तो बंदीकी अवश्य मोक्ष होजायगी अर्थात् कारागारसे छूटजायगा। यह कल्पविहित सिद्ध मंत्र है ॥

इति यंत्रचिंतामणिकी दशवीं पीठिकाके मोक्षाधिकारमें बंधनमोचन नामक पहला यंत्र ॥ १ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि यन्त्रं निगडमोचनम् । हस्तपादतले बद्धो मुच्यते यत्प्रसादतः ॥ १ ॥ कांस्यपात्रोपरि लेख्यं रोचनाचन्दनेन च । कर्पूरकुङ्कुमाभ्यां च मृग-

निगडमोचनयन्त्रम् ।



नाभियुतेन च ॥ २ ॥ ह्रीङ्कारं मध्यदेशे तु वर्तुलं वेष्टयेत्ततः । ततस्तु षोडशदलानकारादिस्वरान्वितान् ॥ ३ ॥ ततस्तद्वेष्ट-

श्रीशिवजी बोले-अब निगडमोचन यन्त्रको कहताहूं कि जिस यन्त्रराजके प्रतापसे मर्यादबंदी मुक्त होसकता है । विधान-गोरोचन, लालचंदन, कपूर, कुंकुम, कस्तूरी इन सब वस्तुओंको एकत्रितकर कांसेके पात्रके ऊपर एक गोलाकार चक्र खेंचकर मध्यभागमें ह्रींबीजको स्थापितकर उक्त गोलाकारके बहि-

येत्सम्यग्वर्तुलं रेखया पुनः । तस्योपरि प्रकर्तव्यं द्वात्रिंशद्दलसंयुतम् ॥ ४ ॥ ककारादिसकारान्तं व्यञ्जनानि लिखेत्क्रमात् । प्रतिष्ठाप्य महापूजां गन्धपुष्पैः फलैः शुभैः ॥ ५ ॥ नैवेद्यैर्बलिहोमैश्च दीपदानैर्मनोहरैः । ॐ नमश्चण्डिकायै स्वाहेति मन्त्रेणाऽष्टोत्तरशतं जुहुयात् । पायसैर्मधुखाद्यैश्च गुग्गुलेन विशेषतः ॥ ६ ॥ प्रत्यहं तु प्रकर्तव्यं सप्तमेऽहनि पूर्यते । उद्धृत्य प्रणतः पूर्वं भोजनाद्गन्धरोचनम् ॥ ७ ॥ पानार्थमर्धं दातव्यं गुटिकार्धेन कल्पयेत् । तद्धारणात्प्रमुच्येत चिरं बद्धोऽपि मानवः ॥ ८ ॥

इति यन्त्रचिन्तामणौ ना० म० प्र० उ० द० मो० दा० निगडबन्धमोक्षकर नाम द्वितीयं यंत्रम् ॥ २ ॥

श्रीशिव उवाच॥अथातः सम्प्रवक्ष्यामि यन्त्रं वै बन्धमोक्षणम्।विवरे चारुबद्धोऽपि मुच्यते यत्प्रसादतः ॥ १ ॥ ह्रींकार-

---

–भागमें षोडशदल लिखकर अकारादि १६ स्वरोंको क्रमानुसार प्रत्येक कोष्ठमें लिखे। फिर और एक दीर्घसा गोलाकारसे उक्त षोडश दलोंकोभी वेष्टितकर ३२ दलोंसे युक्तकरके प्रत्येक दलमें क्रमानुसार ककारसे लेकर सकारपर्यन्त बत्तीस व्यंजन वर्णोको प्रत्येक कोष्ठकमें लिखे। तत्पश्चात् यन्त्रराजकी प्रतिष्ठा करके गंधफूलोंसे महापूजा करै धूप दीप नैवेद्य व मनोहर दीपदानदे। 'ओं नमश्चण्डिकायै स्वाहा'इस मन्त्रका १०८ वार जपकरै। खीर, मधु खाद्य और विशेषकर गूगलकी प्रतिदिन बलिदे और ढककर रखदे। प्रणाम करनेके पूर्व उसको निकाले और गन्ध धूप देकर भोजन करै ॥ पीनेके लिये इसका आधा भागदे और आधेकी गुटिका बन वे। इस गुटिकाके धारण करनेसे जन्म कैदीभी छूटजायगा ॥ १–८ ॥

इति यंत्राचिन्तामणिकी दशवीं पीठिकाके मोक्षाधिकारमें निगड बंधमोक्षकारक दूसरा यंत्र ॥ २ ॥

श्रीशिवजी बोले–अब बंधमोक्षण नाम यंत्रको कहताहूं–यदि कालकोठरी इत्यादिकमें भले प्रकार बद्धभी होगा तथापि यंत्रराजके प्रतापसे छूटजायगा। विधि–भोजपत्रके ऊपर कुंकुमसे चतुष्कोण यंत्रको लिखे। तत्पश्चात् ह्रीं बीजके

बन्धमोक्षकरयन्त्रम् । मध्यदेशे तु साध्यनाम च यत्नतः ।

ह्रीं
व
द
च

लिखित्वा भूर्जपत्रे तु रोचनाकुङ्कुमेन च ॥२॥ तद्यन्त्रं पूजयित्वा तु वहमानेऽम्भसि क्षिपेत् । तदम्भःपक्वेनान्नेन भोजनं तस्य कारयेत् ॥३॥ एवं कृते तृतीयेऽह्नि मुच्यते नात्र संशयः। विवरस्थोऽत्र यो बद्धो गूढस्थोऽपि विमुच्यते ॥४॥

इति श्रीयन्त्रचिन्तामणौ नाम्नि महाकल्पे प्रत्यक्षसिद्धिप्रदे उमामहेश्वरसंवादे दशमपीठिकायां मोक्षाधिकारे दामोदरपण्डितोद्धृते बन्धमोक्षकरं नाम तृतीयं यन्त्रम् ॥ ३ ॥

यन्त्रचिन्तामणिं नाम कल्पं श्रीशिवभाषितम् । धर्मार्थकामफलदं वैरिनिग्रहकारणम् ॥ १॥ यस्तु पूजयते नित्यं धारयेद्वापि मानवः । अवध्यः सर्वलोकानां जायते नात्र संशयः ॥ २ ॥ शृणोति यस्तु धर्मात्मा वाच्यमानं कदापि च । सोऽपि पूज्यश्च मान्यश्च जायते मत्प्रसादतः॥३॥यन्त्रचिन्तामणिं यस्य श्रुत्वा श्रद्धा न जायते । न वन्द्यः पापकृद्देवि दुर्भगो भुवि

–मध्यमें साध्यव्यक्तिके नामको लिख यन्त्रराजके भीतर स्थापित करे । पुनः उक्त विधानसे पूजनकर यन्त्रको वहतेहुए जलमें डालदे और उस जलको पकान्नके साथ उक्त व्यक्तिको भोजन करावे । इस विधिके करनेसे तीसरे दिन विवरस्थ तथा गुप्तस्थानमें स्थित व्यक्तिभी मुक्त होजायगा ॥ १–४ ॥

इति यंत्रचिन्तामणिकी दशवीं पीठिकाके पं० बलदेवप्रसादमिश्रजीकृतभाषाटीकायुत मोक्षाधिकारमें बंधमोक्षकर नामक तीसरा यंत्र ॥ ३ ॥

शत्रुनिग्रहकारक धर्म, अर्थ, काम, फलके देनेवाले शिवोक्त इस चिन्तामणि नाम कल्पको जो मनुष्य नित्यप्रति पूजन अथवा धारण करता है वह मनुष्य निःसन्देह सब लोकोंका अवध्य होता है ॥१॥२॥ जो धर्मात्मा मनुष्य वर्णितकरे हुए इस चिन्तामणि नामक कल्पको श्रवण करता है वह मनुष्य मेरे प्रसादसे पूज्य तथा माननीय होता है ॥ ३ ॥ हे देवी ! इस चिन्तामणि नाम यन्त्रको श्रवण करकेभी जिस व्यक्तिकी यन्त्रशास्त्रमें श्रद्धा नहीं होती है उस संशयरूप व्यक्तिको किसी प्रकारभी प्रणामादि न करना चाहिये,

निश्चितम्॥४॥यस्तु श्रद्धाभियुक्तः सन्यन्त्रचिन्तामणिं श्रयेत् । तेन सार्द्धं तु कः कुर्याद्विरुद्धं वै जिजीषुकः ॥ ५ ॥ अतः परं किं बहुनोदितेन कल्पप्रभावं बहुधा तु देवि । यः शुद्धरूपी जगतः प्रशास्ता मत्तेजसा भाति सुशोभमानः॥६॥पुण्यं पवित्रं परमं रहस्यं सुसारसं यत्परिकीर्तितं ते । चिन्तामणिं चिन्तितकार्यसाधकं प्रत्यक्षकामादिफलप्रसाधकम्॥७॥वश्याभिधानं प्रथमं द्वितीयमाकर्षणं स्तम्भनकं तृतीयम् । विद्वेषणं मारणकं ततश्च उच्चाटनं शान्तिकरं च सप्तमम्॥ ८॥ बन्दीप्रसादजनकं तु महाप्रभावमत्यन्तमुच्चाटनकं वदन्ति । अष्टाधिकारं प्रवदन्ति कल्पं चिन्तामणौ देववरैः सुपूजिते ॥९॥ स्वर्गच्युतस्य बहुभाग्ययुतस्य पुंसः पुण्याधिकस्य बहुयोगयुतस्य लोके । प्राप्तिर्भवेत्कल्पवरेण तस्य येनार्चितो देववरो महेशः ॥१० ॥

इति श्रीय० महा० दशमपीठिकायुतो मोक्षाधिकारःसमाप्तः ॥

क्योंकि वह मनुष्य संसारमें दुर्भागी कहाता है ॥ ४ ॥ जो मनुष्य श्रद्धापूर्वक यन्त्रचिन्तामणि नाम कल्पका आश्रय लेवे हैं उन मनुष्योंके साथ ऐसा कौनसा व्यक्ति है जो जीवनकी इच्छा कर विरोध करेगा अर्थात् कोईभी नहीं ॥ ५ ॥ हे देवि ! इस चिन्तामणि नाम कल्पके अत्यन्त प्रताप वर्णन करनेसे क्या है? यह समुद्ररूप लोकोंको शिक्षा देनेवाला मेरे तेजसे प्रकाशित है॥६॥ हे देवि ! पुण्यदायक अत्यन्त पवित्र परमरहस्य प्रीतिदायक जो यह कल्प मैंने तुमसे कहा है सो यह चिन्तामणि नाम कल्प चिन्तितकार्योंके फलका देनेवाला है ॥७॥इस चिन्तामणि नाम कल्पमें आठ अधिकार हैं जो कि देवपूजित हैं, संख्या-पहिला वश्याधिकार, दूसरा आकर्षणाधिकार, तीसरा स्तम्भनाधिकार, चौथा विद्वेषणाधिकार, पांचवां मारण अधिकार, छठा उच्चाटनाधिकार, सातवां शांति अधिकार, आठवां बंदीमोक्षणाधिकार॥८॥९ ॥ जो मनुष्य स्वर्गसे आये हैं और जो अत्यन्त भाग्यवान् हैं और जिनके अतिपुण्य हैं जो अत्यंत योगोंसे युक्त हैं, जिन्होंने देव श्रेष्ठ श्रीशिवजी महाराजका भक्तिसे पूजन किया है उनकोही इस श्रेष्ठ कल्पकी प्राप्ति होती है, दूसरेको नहीं१०॥

इति श्रीयंत्र० पं० बलदेवप्रसादमिश्रजीकृतभाषाटीकासहित दशमपीठिकायुतो मोक्षाधिकारः समाप्तः ।

अथ सर्वसाधारणयन्त्रविधिः।

तंत्रान्तरे–सुस्नातः सुवस्त्रचन्दनादिभिर्भूषितो यथोक्तद्रव्यैः शुद्धदेशे यन्त्रं लिखेत्। तत्रादौ षष्ठ्यन्तं साधकपदं मध्ये बीजं तदधो द्वितीयान्तं साध्यनाम तत्पार्श्वयोः कुरु कुरु तदधो वियद्युक्तं सर्गबीजं लिखेत्। तत ईशानादिचतुष्कोणेषु हंसः सोऽहं प्राणबीजं चतुर्दिक्षु दिग्बीजानि प्रतिदिशं यन्त्रगायत्रीवर्णान् लिखेत्॥ यन्त्रगायत्री–यन्त्रराजाय विद्महे महायन्त्राय धीमहि। तन्नो यन्त्रः प्रचोदयात्॥ इति यन्त्रगायत्र्या प्राणप्रतिष्ठामन्त्रवर्णेन च यन्त्रं सर्वतो वेष्टयेत। एवं यन्त्रं लिखित्वा सावधानतया सुवर्णादिना वेष्टितं कृत्वा यन्त्रप्रतिष्ठां कुर्यात्॥ सा यथा–सर्वतोभद्रमण्डलेऽष्टदले वा कर्णिकायां कलशस्थापनविधिना कलशं संस्थाप्य तदुपरि यन्त्रं स्थापयेत। मण्डलकोणचतुष्टये चतुष्कलशान्संस्थाप्य प्रतिकलशं ॐ ह्रीं क्रों इति त्र्यक्षरीविद्यां कूर्चबीजयुतां सहस्रं जपेत॥ ततस्तद्यन्त्रं चतुष्कलशोदकैरभिषेकमन्त्रैरभिषिच्य गन्धादिभिः सम्पूज्य

अब सब यंत्रोंके धारण करनेकी विधि कहते हैं–तंत्रोंमें लिखा है कि; प्रथम स्नानकर चन्दन लगाय सुन्दर वस्त्रोंको पहनकर। जिस द्रव्यसे जिस यन्त्रके लिखनेको कहा गया हो, उस द्रव्यसे शुद्धस्थानमें (बैठकर) यंत्रको लिखे। पहले साधकके नामके अन्तमे षष्ठीविभक्ति लगाकर लिखे, बीचमें बीजोंको लिख नीचे साध्यके नामके अंतमे द्वितीयाविभक्ति लगाकर लिखे, दोनों ओर नीचे कुरु २ उसके नीचे वियद्युक्त सर्गबीजको लिखे। फिर ईशानादि चारों कोनोंमें हंसः सोऽहं और प्राणबीजके चारों ओर दिग्बीजोंको प्रत्येक दिशामें यंत्रगायत्रीके तीन वर्णोंको लिखे। यंत्रगायत्री–" यंत्रराजाय विद्महे महायंत्राय धीमहि। तन्नो यंत्रः प्रचोदयात्। " इस यंत्र गायत्रीके द्वारा प्राणप्रतिष्ठाके मंत्रोंके वर्णोंसे यंत्रको चारों ओरसे वेष्टित करे। इस भाँति सावधानीसे यंत्रको लिखकर सुवर्णादिसे वेष्टनकर यंत्रकी प्रतिष्ठाकरे। सर्वतोभद्रमंडलमें आठों दलोंमें कलशोंको स्थापनकर उसके ऊपर यंत्रको रखे। मण्डलके चारों कोनोंमें चार कलशोंको स्थापित करे और प्रत्येक

यन्त्रे प्राणप्रतिष्ठामन्त्रेण यन्त्रदेवताप्राणान् प्रतिष्ठाप्य यन्
यन्त्र्या यंत्रं षोडशोपचारैः सम्पूज्य ब्राह्मणसुवासिनीः कुमा
संभोज्य दक्षिणां दत्त्वा तेषामाशिषो गृहीत्वा यथोक्ताङ्गे
बध्नीयात्। अनुक्तलखेनस्थले भूर्जपत्रम्। अनुक्तलेखन
केसरगोरोचनकर्पूरकस्तूरीगजमदचन्दनागरुद्रव्याणि। ः
क्तलेखनिकायां सुवर्णशलाका। अनुक्तवेष्टने सुवर्णम्॥ अनु
धारणाङ्गे दक्षिणबाहुः॥ इति सर्वसाधारणयन्त्रविधिः॥

इति श्रीदामोदरपण्डितोद्धृतो यंत्रचिंतामणिः समाप्तः॥

–कलशपर (हाथधर) ॐ ह्रीं क्रौं इन तीन अक्षरोंवाली विद्यामें कूर्चवी
लगाकर हजारवार जपै। फिर उस यंत्रको चारों कलशोंके जलसे अभि
मंत्रोंद्वारा अभिषिक्तकर गंधपुष्पादिसे पूजनकर यंत्रमें प्राणप्रतिष्ठाके मंत्रो
यंत्रदेवताकी प्राणप्रतिष्ठा करके यंत्रगायत्रीके द्वारा यंत्रकी षोड़शोपचारसे
कर सुंदरवस्त्र पहननेवाली ब्राह्मणकी कन्याको भोजनकराय दक्षिणा देकर उस
आशीर्वाद ले फिर जिस अंगमें यंत्रधारण करना लिखा हो उस अंगमें यं
धारण करे। जहाँ किसीपर यंत्र लिखनेका विधान न हो वहाँ भोजपत्रपर लि
जहां यंत्रके लिखनेमें द्रव्यका विधान न हो वहाँ केसर, गोरोचन, क
कस्तूरी, गजमद, चंदन और अगर इनमेंसे किसीके द्वारा लिखे। जहाँ कि
लेखनीका विधान न हो वहाँ सोनेकी सलाईसे लिखे। जहाँ किसीमें धरकर
धारण करनेका लेख न हो वहाँ सुवर्णके तावीजमें धरकर धारण करना चाहि
जहाँ किसी अंगमें धारण करनेका लेख न हो वहाँ दक्षिणभुजामें धारण करे॥

इति श्रीपंडित–बलदेवप्रसादमिश्रजीकृतभाषाटीकासहित
यंत्रचिन्तामणि समाप्त।
